C. No - 230

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय ॥ ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय ॐ

230

॥❁॥ ॐ आनन्दमय ॥❁॥

॥❁॥ ॐ शान्तिमय ॥❁॥

234

विश्व-शान्ति

'मानसिक चिकित्सा-मनोविज्ञान'

(भाग १)

W,95:L95
152NA.1

ॐ श्री ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष श्री स्वामी योगिराज आनन्दमय जी महाराज तथा ध्यान-समाधिस्थ देवी-पुरुषों के अनुभव

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय ॥ ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ॐ आनन्दमय ध्यान आश्रम

पो० प्रतापगढ़

(अवध)

W, 95 : 195   230
152NA.1
Anandmay dhyan
Ashram
Vishwa-shanti

...भ होने की विधि

... करें।

... आनन्दमय ॐ शान्तिमय

... मन से रटन करें।

...रके मन-ही-मन महामंत्र

... कर प्रचार करें।

...वान् का संग, सेवा, स्म-

... करें।

...त्र रूप से ही प्रकाशित हो

... हैं।

...प्रभावदायक इस अमूल्य

...त्विक भावों से यथा श्रद्धा-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
(LIBRARY)
JANGAMAWADIMATH, VARANASI

W,95:195
152NA.1
230

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ॐ आनन्दमय ध्यान आश्रम

पो॰ प्रतापगढ़
(अवध)

W, 95 : L95   230
152NA.1
Anandmay dhyan
Ashram
Vishwa-shanti

भ होने की विधि

करें।

आनन्दमय ॐ शान्तिमय
मन से रटन करें।
रके मन-ही-मन महाम

कर प्रचार करें।
वान् का संग, सेवा, स्म-
करें।

त्र रूप से ही प्रकाशित हो
हैं।

प्रभावदायक इस अमूल्य
त्त्विक भावों से यथा श्रद्धा-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

254

विषय-सूची

विषय	पृष्ट-संख्या
(१) विश्व-शान्ति से लाभ उठाने की विधि	१
(२) शुभ संदेश	२
(३) विश्व-शान्ति का प्रभाव	३
(४) सम्पादकीय निवेदन ...	९
(५) अनुपम ग्रन्थ का महात्म्य	१०
(६) विश्व-शान्ति	११
प्रार्थना	१२
श्री भगवान् का प्रेममय आदेश	१३
प्रतिज्ञा	१४
मंत्र-अर्थ भावना	१५
(७) मानसिक चिकित्सा (मानसिक निरोगी के लक्षण व मानसिक रोगों का ज्ञान)	
(८) ज्ञानामृत	
त्याग तत्त्व (दुर्गुण-दुराचार का ज्ञान) ...	२६
मनुष्य के लक्षण (सद्गुण सदाचार का ज्ञान)	३२
(९) आनन्दवर्षा	३६
गुरुवन्दना	३६
महामंत्र की महिमा	३७
गुरुदेव की कृपा	३८
(१०) ॐ श्री संत प्रेम	३८
योगसिद्ध महामंत्र का प्रभाव	४०
(११) ॐ आनन्दमय ध्यान आश्रम के प्रेमियों के भाव	

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

W095:195
152 NA.L

विषय			पृष्ट-संख्या
(१२) ध्यान से सम्पूर्ण लाभ	...	...	४१
(१३) अज्ञानपूर्ण भाव-आचरण	...	...	४७
(१४) ईश्वर कोप-दण्ड	...	...	५४
(१५) श्री प्रभु मर्यादा का फल ध्यान		...	५६
(१६) प्रण (पालन करने योग्य धर्म)		....	५७
(१७) सेवायोग यज्ञ	...	....	६२
(१८) समाज सुधार	...	...	६६
(१९) ध्यान द्वारा प्राप्त आनन्द-शक्ति-ज्ञान से समाज सुधार			७४
(२०) ब्राह्मणपद का ज्ञान	...	.....	७६
(२१) सन्यासी शब्द का ज्ञान	....	.....	८२
(२२) यज्ञ शब्द का ज्ञान	...	.....	८४
(२३) दान शब्द का ज्ञान	.....	...	८६
(२४) तप शब्द का ज्ञान	...	...	८८
(२५) दम्भी पाखण्डी कौन है ?		....	९१
(२६) ब्रह्महत्या	...	.....	९३
(२७) धर्म शास्त्रों का मत	....	...	९८
(२८) प्रेरणा	.....	.....	१०४
(२९) सूचना	...	.....	१०७
(३०) सार बात	...	....	
(३१) मर्यादा	.....	...	

JAGADGURU VISHWARADHYA
NA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
No. 220

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शुभ सन्देश

आपकी मनोकामना है—सुख, शान्ति, मन की एकाग्रता, ध्यान, आनन्द, हृदय से ही उत्तम २ ज्ञान, सद्गुण-सदाचार, विश्व से पवित्र प्रेम तथा आत्म-प्रभाव-पद प्राप्ति की; अतः आपका भाग्य उदय हुआ है जो अपना तथा समाज का सम्पूर्ण कार्य करते हुए ही इन सब की प्राप्ति का सुगम मार्ग बताने के लिए ॐ श्री मानसिक वैद्यराज, शान्ति इन्चार्ज, समाधिस्थ महापुरुष भगवान् का अमृतज्ञान 'विश्व-शान्ति' ग्रंथ हिन्दी भाषा में प्रकट हुआ है।

हे श्रद्धालु प्रेमी श्रीमती देवियो तथा श्रीमान पुरुषो! अन्यान्य खर्चों से बचाकर भी इस अमूल्य पारसमणि ग्रन्थ को ग्रहण करें। यह मानसिक चिकित्सा-मनोविज्ञान बालक, वृद्ध, युवा, देवी- पुरुषों के लिये अत्यन्त लाभदायक है। इसके प्रचार से ही विश्व में सुख-शान्ति की स्थापना होगी।

विनीत

ॐ श्री महापुरुष संग प्रेमी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

'विश्व-शान्ति' का प्रभाव

यह अनुपम ग्रंथ अत्यन्त प्रभावशाली है। इसका स्वाध्याय भी एक महान उद्देश्य की पूर्ति करता है। ग्रंथ सरल होते हुए भी अत्यन्त गम्भीर और उदार है। इसके लेखक प्रेमियों के भी कई बार दर्शन करने का सौभाग्य मुझे मिला है। उनके आनन्द शान्तिदायक उपदेशों का भी श्रवण किया है। अत्यन्त हृदय-ग्राही वचन बोलते हैं। कम बोलने पर भी ऐसी मार्मिक बातें कहते हैं कि सुनकर हृदय अतृप्त ही रह जाता है। आज मेरा अहोभाग्य है कि मैं ऐसे अनुपम प्रभावदायक ग्रन्थ पर कुछ पंक्तियाँ लिख रहा हूँ। सद्ग्रन्थ के भीतर भी वही कल्याणकारी गुण, ज्ञान विराजमान है जो लेखक प्रेमियों का स्व' अनुष्ठान है।

विश्व-शान्ति की महिमा अपार, अपरिमित है। विश्व-शांति एक परम रहस्यमय ग्रन्थ है। इसमें सम्पूर्ण धार्मिक ग्रन्थों का सार संगृहीत किया गया है। इसकी रचना तो सरल है, परन्तु इसका आशय बहुत गूढ़ और गम्भीर है। विश्व-शान्ति ग्रन्थ अनन्त आनन्दमय भावों का अथाह समुद्र है। जैसे समुद्र में गहरा गोता लगाने से रत्नों की प्राप्ति होती है ऐसे ही एकाग्रचित होकर श्रद्धा, प्रेम, उत्साह पूर्वक विश्व-शान्ति ग्रन्थ का पठन करने से जिज्ञासु प्रेमियों को नित्य नये-नये भावों की रत्न-राशि प्राप्त होती है। इसका एक भी शब्द सदुपदेश से खाली नहीं है।

मुझे पूर्ण आशा है कि इस ग्रन्थके पढ़ने से प्रेमियोंके हृदयमें अपार सुख, शान्ति, गुण, ज्ञान, आत्मबल की जागृति होगी। प्रेमी देवी-पुरुष, बालिकाऐं तथा बालक आनन्द में विह्वल होकर इस आनन्दमय धर्म का रुचिकर सेवन करेंगे।

विनीत—सेवा, सादगी, स्मरण प्रेमी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विश्व शांति इन्चार्ज

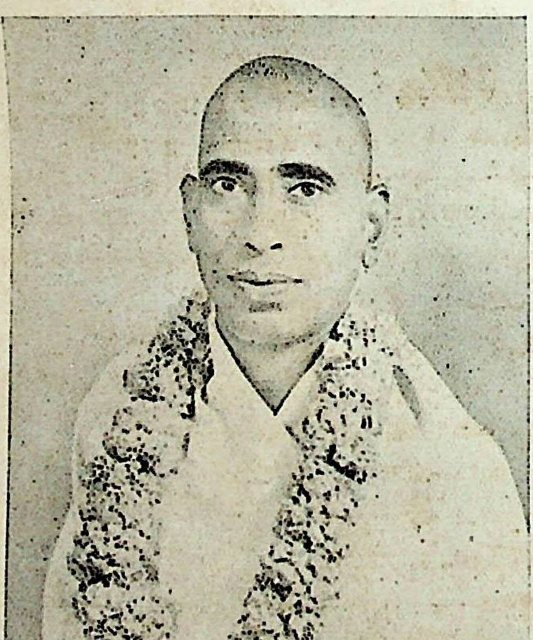

ॐ श्री ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष श्री स्वामी योगिराज आनन्दमय जी महाराज

श्री आपके संग, भाषण से दुःख चिंता, भय, कामना, क्रोध, अशांति. उद्वेग, कलह आदि अज्ञान का नाश होता है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सम्पादकीय निवेदन

ॐ श्री आनन्दमय जी महाराज गुण, ज्ञान, ध्यान, आनन्द, आत्म प्रभाव के स्थापक; तमोगुण, रजोगुण, क्रोध, लोभ आदि अशान्तिमय रोग, पाखण्ड धर्म-आचरण तथा कल्पित पुस्तकों के नाशक; मानसिक वैद्यराज हैं।

श्री आपका जीवन बाल्यावस्था से ही ईश्वर-मर्यादा-संयम, सेवा, सादगी, स्मरण युक्त रहा। प्रायः बीस वर्ष तो श्रद्धा-प्रेम युक्त दम्भ-पाखण्डमय नकल धर्म का ही अनुष्ठान करते रहे। सन् १९३९ से आठ वर्ष तक ॐ श्री महापुरुष भगवान् का संग करके, कर्मयोग-ध्यानयोग के द्वारा परमानन्द, परम सुख-शान्ति एवं आत्मस्वरूप के ज्ञाता होकर अब तीन वर्ष से देश भ्रमण की चेष्टा हो रही है।

श्री महापुरुषदेव के दर्शन भाषण से प्रत्येक मनुष्य प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। श्री आपका एक एक वचन शान्तिदायक अमूल्य रत्न है। आप कुछ ही दिन संगकर, सत्य मार्ग का अनुभव कर चकित हो जायंगे। अत्यन्त गिरे हुए आधुनिक समाज को उठाने के लिए श्री तत्त्वदर्शी ब्रह्मनिष्ठ महात्मा का ज्ञान अनिवार्य है। यह विशुद्ध ज्ञान विश्व में व्याप्त होते ही सुख शान्ति और जागृति उत्पन्न कर देगा।

जब ईश्वरीय मर्यादा की अवहेलना होने लगती है तो संसार में घोर पाप कर्मों से दुख, चिन्ता, भय तथा मार-काट बढ़ जाते हैं; और यदि तत्त्वदर्शी महात्मा की आज्ञा के अनुसार न चला जाय तो संसार नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वर्तमान काल के शान्ति स्थापक बिना नींव के ढाँचा खड़ा करते हैं जो बार बार गिर जाता है। वह नींव ईश्वर-मर्यादा है जिसको पूर्णतया केवल संतपद-युक्त महापुरुष ही जानता है। संसारके कुछ लोग तो दम्भ-पाखण्डको ही मर्यादा मान बैठे हैं और बहुत लोग दम्भियोंके भ्रष्ट आचरणों को देखकर अपने को नास्तिक प्रकट करते हैं—इसका कारण यह है कि दम्भ-पाखण्ड इतना फैल गया है कि लोग सर्वव्यापक शक्तिका अनुभव करते हुए भी उसके अस्तित्व को स्वीकार करना नहीं चाहते।

याद रखिये! अज्ञान-स्वार्थवश दूसरे के शरीर का नाशकर देने वाले राक्षस हैं; आजीविका का नाश करने वाले बड़े राक्षस हैं; परन्तु सर्वस्व—सुख, शान्ति, आत्मप्रभाव—को नष्ट करने वाले दम्भी महाराक्षस हैं।

सरकार जनताको शिक्षित, सभ्य, जाति-आश्रम-भेदभाव से रहित बनाने तथा देवियोंके उत्थानके लिए उपाय सोचती है परन्तु दूसरी तरफ करोड़ों की संख्यामें ईश्वर ध्यान, आनन्द, मर्यादा अनभिज्ञ राजद्रोही दम्भी लोग स्वार्थ-अहंकारवश जनता को भड़का रहे हैं।

दम्भ-पाखण्ड-धर्मको मर्यादाओं से हम ऐसे फंसे हुए हैं जैसे पिंजरेमें पक्षी। हमारी वीराङ्गना माताओं को तो दम्भियों ने मछलीकी तरह फंसाकर ऐसा मूढ़ बनादिया है जो इस संक्षिप्त सूत्रग्रंथमें प्रकट नहीं किया जा सका। अब यह धर्मध्वजी दम्भी-पाखण्डी लोग पुनः भारतकी कानूनधारा अपनी इच्छा अनुसार बनानेके प्रयत्नमें हैं और आपलोगोंसे वोट लेनेके लिए आपको मीठी मीठी वाणी सुनाकर कूटनीति का प्रयोग कर रहे हैं। याद रखिये! ऐसे धर्मध्वजी या पूंजीपतियोंकी सेना के

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

किसी व्यक्तिको पदाधीश नियुक्त कर दिया तो कुछ छटांक अन्न तथा कुछ गज वस्त्र मिलने के स्थानपर उपवास करना तथा नंगे रहना पड़ेगा ! अतः इन लोगों से सावधान रहें अन्यथा आपको नष्ट-भ्रष्ट कर देगें। इन मुफ्तखोर महाराक्षसों के पाखण्डधर्म को अतिशीघ्र कानून द्वारा खतम करने से ही विश्व उत्थानको प्राप्त होगा।

प्राचीन समय में ज्ञानी महात्माके लिए राज-समाज में सर्वोत्तम स्थान था और अनुभव शून्य दम्भियोंके लिए दण्ड का पूरा प्रबन्ध था। इस कारण ही भारत का गुण, ज्ञान, आनन्द, प्रभाव, शान्ति तथा सुख विश्व-विख्यात था। किन्तु वर्तमान काल में दम्भी-पाखण्डी महाराक्षसोंके लिए दण्ड विधान न होनेके कारण आज भारत सब देशोंसे गया बीता, भूखा, अशान्त, कलहयुक्त और परेशान है। पाश्चात्य देश असली सुख-शान्तिके केन्द्रका ज्ञान न होते हुए भी, दम्भ-पाखण्डके लिए स्थान न होनेके कारण,इस देशसे अच्छे हैं।

सभा (मीटिंग)के कार्य को वोटोंसे पास करना उत्तम है किन्तु जैसे डाक्टर, वकील, अध्यापक, इन्जिनीयर आदि को बिना शिक्षित हुए ही वोटों द्वारा पास कर देने से लाभ के बदले महा हानि ही होगी; इसी प्रकार उत्तम गुण, ज्ञान, भाव तथा कार्य कर्मों की योग्यता के बिना पक्षपात, रिश्वत अथवा मूर्खों के वोटों द्वारा चुने हुए प्रजारक्षक समाज-सुधारके कार्यकी सुव्यवस्था पक्षपात तथा धन-संग्रह रहित, ज्ञानपूर्ण नहीं कर सकते। इसी कारण प्रजा-रक्षणके कार्य में लाभ के बदले महा हानि हो रही है।

हर प्रकारका कार्य करनेकी बुद्धि (दिमाग़) श्री महापुरुषके संग तथा ध्यान से प्राप्त होता है। प्रजाकी सुव्यवस्था तो

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ईश्वर-ध्यान करने वाले—ईश्वर मान्य देवी-पुरुष ही कर सकेंगे अन्यथा बालूकी भीत..................।

संसार में ७ प्रकृति के मनुष्य हैं जैसे दम्भी, नास्तिक, धोकेबाज,पाखण्ड धर्मी,स्वार्थी, परमार्थी और विशुद्ध प्रेमी (भगवत् पदप्राप्त); इनको श्री तत्त्ववेता महापुरुष महाराज पहचानतेहैं। अतः उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ गुण, ज्ञान, भाव आचरणों की परीक्षाकी व्यवस्था हो।

आज भारतके प्रजारक्षणकार्य-कर्ता प्रेमियोंके हृदय डावांडोल तथा परेशान होनेका कारण यह है कि चार चक्कोंकी मोटर फुल पावर से चलती है किन्तु यदि एक चक्केका प्रयोग ही न किया जाय और तीनों में से भी एक पंकचर हो जाए तो दो चक्कोंकी मोटरका चलना कैसे सम्भव है ? प्रजारक्षण के कार्यमें चार शक्तियोंके संगठनकी आवश्यकता है—गुणातीत, सत्त्वगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी। इन ज्ञान-विज्ञानयुक्त चारों शक्तियोंसे ही कार्य विधिवत् चलता है।

भारतका साम्राज्य तीन चक्कायुक्त मोटरसे स्थापित हुआ था। इनमेंभी ईश्वर-शक्ति आश्रित सत्त्वगुणी देशभक्त धर्मात्मा गाँधीके अस्त होनेके बाद मोटर दो चक्कायुक्त रह गई है और चलनेमें असमर्थ है। अतः गुणातीत महापुरुष तथाध्यानस्थ देवी-पुरुषों के सहयोग से श्री संत-ज्ञान-मर्यादाकी स्थापना होने पर ही युवतियां और युवक वीर, धीर, तेजस्वी, ज्ञानवान् होकर पुनः भारतको उन्नत करेंगे !

मेरा पूर्ण विश्वास है कि मर्यादा पुरुषोत्तम संत-पदयुक्त महापुरुष श्री स्वामी योगिराज आनन्दमय जी महाराज के ज्ञान तथा 'ॐ आनन्दमय ॐ शांतिमय' योगसिद्ध महामंत्र को धारण करनेसे सम्पूर्ण विश्वमें शान्ति हो जायेगी; सब सुखी,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

गुणवान् कर्त्तव्य-परायण, ज्ञानवान्,तेजदिमाग, शान्ति, संतोष, युक्त आनन्दमय हो जायेंगे । ठीक समय पर वर्षा होगी; अन्न, दूध, घी, सब्ज़ी, वस्त्र आदि पदार्थों की कमी नहीं रहेगी अन्यथा घोर दशा होने वाली है !

अतः विश्व-शान्ति चाहने वालों, सभ्य पुरुषों तथा श्री मति देवियोंका परम कर्त्तव्य है कि :—

(१) ॐ श्री महापुरुष महाराज का संग करें; एक सप्ताहके अन्दर ही ध्यान लगता है ।

(२) स्थान-स्थान पर सभाओं में व्याख्यान करायें ।

(३) स्कूलों-कलेजोंमें श्री आपका भाषण दिलायें ।

(४) समाचार पत्रोंमें श्री आपका विशुद्ध ज्ञानप्रकाशित करें ।

(५) विशुद्ध ज्ञानकी पुस्तकें छपवायें । श्री आपका छपने योग्य ज्ञान, प्रायः दस सेर कागज़ों पर, हमारे पास है ।

(६) रेडियो में बोलने का प्रबन्ध करें ।

(७) इस अमृतमय ज्ञानयज्ञ-ग्रन्थका प्रचार करें ।

(८) ब्रह्मविद्या विश्वविद्यालयकी स्थापना कर ईश्वरीय गुण ज्ञान भाव, आचरण, आत्मप्रभाव की शिक्षा-परीक्षाका प्रबन्ध करें ।

(९) प्रेस आदि की स्थापना कर. प्रचार द्वारा कलह युक्त विश्व को शान्त करें ।

मुझे पूर्ण आशा है कि प्रेमी, श्रद्धालु विवेकीजन स्वयं लाभ उठायेंगे तथा आज़ाद भारत और विश्व में सत्य-धर्म की मर्यादा की स्थापना करने के लिए इस विश्व-शान्ति सद्ग्रन्थ के प्रचार में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हे भारतवासियो ! श्री धर्मात्मा गाँधी ने आपके ही सहयोग से प्रजाशोषक राक्षस राजाओं का अन्त कर आज भारत में प्रजातन्त्र राज्य स्थापित कर दिया। पुनः अब आपके ही सहयोग से महाराक्षसो दम्भ-पाखण्ड-मर्यादाओं का नाश होकर भारत का उत्थान करने वाली श्री संत-मर्यादा (गुण धर्म) की स्थापना होगी तथा परमपिता परमात्मा की सम्पत्ति पर मनुष्य-मात्र का समान अधिकार होगा। क्या बिना सहयोग के आज तक किसी भी महापुरुष के ज्ञान का विकास हुआ है ? याद रखिये ! प्रत्यक्ष में मौजूद आर्त प्रभावदायक परम आदरणीय महापुरुष श्री योगिराज आनन्दमय भगवान् के गुण, ज्ञान और शक्ति की उपेक्षा कर आपको कदापि सुख-शान्ति नहीं हो सकती। आशा है कि आप सेवक की प्रार्थना स्वीकार कर उपर्युक्त वाक्यों का अनुभव करेंगे।

विश्व को सुख, शान्ति, ध्यानानन्द
में मग्न देखने का इच्छुक,
सादगी प्रेमी ध्यानस्थ
सेवक

डा० आनन्दमोहन (आनन्दमय) एम०बी०बी०एस०

मानव धर्म की सीढ़ी क्या है ?

संयम सेवा, स्मरण, सादगी और सत्यपुरुषों का संग।
इन पांचों से शीघ्र हो मोह निशा का भंग ॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अनुपम ग्रन्थ का माहात्म्य

ब्रह्मविद्या, गुण, ज्ञान का महान केन्द्र है यह विश्व-शान्ति।
मानसिक रोगों की परम औषधि है यह विश्व-शान्ति।
कलह-क्लेश नाशक है यह परमानन्ददायक विश्व-शान्ति।
घृणा-द्वेष नाशक है यह प्रेमस्वरूपा विश्व-शान्ति।
चक्रान्तियों का महाकाल है यह तत्त्वज्ञान विश्व-शान्ति।
दम्भ-पाखण्ड का नाश करने वाली है यह ज्ञानामृत विश्व-शान्ति।
देवियों का उत्थान करेगी यह परम प्रभाव दायक विश्व-शान्ति।
बालक-बालिकाओं को वीर बना देगी यह अमृतज्ञान विश्व-शान्ति।
दुर्भावों और दुर्व्यसनों को मिटा देगी यह मोक्षदायनी विश्व-शान्ति।
सच्चे महात्मा से मिला देगी यह परम हितमयी विश्व-शान्ति।
विश्व को सुखी कर देगी यह शान्तिदायक विश्व-शान्ति।
एक विश्व-शान्ति लीजिए सम्पूर्ण दुःखों से छूट जांएगे।
एक विश्व-शान्ति लीजिये सुख-शान्ति-आनन्दवान् हो जांएगे।
एक विश्व-शान्ति लीजिए गुण-ज्ञान-प्रभाववान् हो जांएगे।
एक विश्व-शान्ति लीजिए ध्यानस्थ समतावान् हो जांएगे।
एक विश्व-शान्ति लीजिए सद्गुण-सदाचारी बन जांएगे।
एक विश्व-शान्ति लीजिये ईश्वर-संत प्रेमी हो जांएगे।
एक विश्व-शान्ति लीजिए विश्व हितैषी हो जांएगे।
इस विश्व-शान्ति के त्याग से ज्ञान हीन रह जांएगे।
इस विश्व-शान्ति के त्याग से दम्भ-पाखण्ड के जाल से नहीं छूटेंगे।
इस विश्व-शान्ति के त्याग से सुअवसर को खो देंगे।
इस विश्व-शान्ति के त्याग से सुख, शान्ति, ध्यान, ज्ञान, ईश्वर पद से वंचित रह जांएगे।
इस विश्व-शान्ति के त्याग से परम लाभ दायक महात्मा से अपरिचित रह जाँएगे।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

★॥ ॐ आनन्दमय ॥★

जप ध्यान ही सुख शान्ति मय है। **विप्लव-शांति** जप ध्यान ही ज्ञान आनन्दमय है।

ॐ श्री तत्त्वज्ञानी महापुरुष देवाय नमः।

पूर्णानन्द ध्यान में आठों पहर आनन्द।

हंस बुद्धि वही है, जो असत्यका परित्याग करके, सत्यका ग्रहण करती है। आज सम्पूर्ण विश्वमें महान् ब्रह्म हत्या तथा विधाता का विधान भी भंग हो रहा है। इस महापाप के कारण ही महाघोर दुःख, चिन्ता, भय, नानारोग, मारकाट, कलह तथा संग्राम बढ़ रहा है और दूध, घी, अन्न, फल, वस्त्र आदि की कमी हो रही है। मनुष्यों के अन्तःकरणों में धधकती हुई ज्वाला महाभयानक रूप धारण करके तन, धन, मान, भवन आदि सर्वस्व का नाश कर रही है। ठीक है! "विनाशकाले विपरीत बुद्धि!" अर्थात् कर्मभाव के उल्टे होने पर उल्टी बुद्धि होना स्वाभाविक ही है—जिस प्रकार कौरव, यादव, कंस रावण तथा जर्मन हिटलर आदि का विनाश हुआ।

वर्तमान काल में उत्तम गुण, ज्ञान, भाव, आचरण रहित धर्म-ध्वजी भिक्षुदल—सन्यासी, पूँजीपति, जिमींदार और कुछ रिश्वतखोर संग्रही प्रजारक्षक धोकेपूर्ण आचरण-भावों से उसी प्रकार चंचल हैं जैसे पतंग अज्ञान-चंचलता से अग्नि में प्रवेश कर अपने अस्तित्व को नष्ट कर देता है। अतः धोखेबाजों के आपरेशन की परम आवश्यकता है।

यह जीव कितने ही घोर पाप कर्म करके जब श्री भगवान् के शरण हो जाता है तब श्री पतितपावन परमदयालु प्रेमी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

परमेश्वर हमारे सम्पूर्ण दुःखों के पहाड़ों को रूई के पहल बना देते हैं तथा ज्ञान, शान्ति, अक्षयसुख, शक्ति प्रदान करते हैं। इसमें कुछ भी संशय नहीं है; देखो गी० अ: १८ श्लोक ६२ से ६६। किन्तु जो निम्नलिखित मर्यादा का पालन नहीं करता वह कथन मात्र से ही श्री प्रभु के शरण है। शरणागति के इक्कीस नियम सदा-सर्वदा याद रक्खो।

सुख, शान्ति तथा ईश्वरपद प्राप्त करने के उपाय निम्न-लिखित हैं; यही विधाता का विधान, मानव कर्तव्य-भाव का ज्ञान है।

❀प्रार्थना❀

(१) त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

(२) हे परम पिता भगवान्! सम्पूर्ण विश्व में शान्ति प्रदान करें।

(३) हे दयासिन्धु भगवान्! सम्पूर्ण मनुष्यों की बुद्धि को सत्यकार्य में प्रेरण करें!

(४) हे पतित पावन भगवान्! सम्पूर्ण जीवों के दुख-पापों का नाश करें!

(५) हे परमदेव भगवान्! सम्पूर्ण प्राणियों को आनन्द प्रदान करें!

(६) हे प्रभो! सम्पूर्ण मनुष्यों को समता, प्रेम, ज्ञान प्रदान करें!

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(७) हे दीन दयालु भगवान् ! सम्पूर्ण जीवों का कल्याण करें !

श्री भगवान् का प्रेममय आदेश

(८) हे प्यारे प्रेमियो। मेरे नाम, स्वरूप को मत भूलो ! मुझे सर्वत्र, सब रूपों में और अपने हृदय में मानो !

(९) हे परम प्यारे देवी-पुरुषो ! तुम तन, धन से विश्व-शान्तिदायक, ध्यानस्थ तथा असमर्थ देवी-पुरुषों की यथायोग्य सेवा करो !

(१०) हे प्रेमियों ! श्रद्धा, प्रेम, विश्वास करो मैं तुम्हारा परम हितैषी हूँ !

(११) हे मित्रो ! दुख, चिन्ता, भय, सीमित ममता, कामना, क्रोध, कलह मत करो। अपनी आठ इन्द्रियों को वश में करते रहो ! (कान, उपस्थ* (ब्रह्मचर्य) नेत्र, जिह्वा, नाक, वाणी, त्वचा, मन)

(१२) हे प्रेमी प्यारो ! विश्वास करो मैं सुख, शान्ति, शक्ति, ज्ञान प्रदान करूँगा !

(१३) हे प्रेमी भक्तो ! जप, ध्यान-ध्यान ही करो मैं पूर्णानन्द प्रदान करूँगा !

(१४) हे परम प्यारे देवी-पुरुषों ! ध्यानयोगी सत्य-महापुरुषों का संग, सेवा, स्मरण करो और कराओ, ज्ञान होगा !

---

*ब्रह्मचर्य पर ॐ श्री तत्त्वज्ञानी महापुरुष भगवान् श्री जयदयाल जी महाराज का लेख पढ़ें।

(पता—गीता प्रेस गोरखपुर)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रतिज्ञा

(१५) हे ज्ञानदाता भगवान्! मेरे ज्ञान में चराचर सब कुछ श्री आप ही हैं! (एक श्री भगवान् ही अनेक रूपों में हैं)!

(१६) हे परम पिता भगवान्! मैं बुद्धि से अपना शरीर तथा संपूर्ण प्राणी-पदार्थ श्री आपके ही समझूँगा!

(१७) हे आनन्ददायक भगवान्! मैं मन वाणीसे श्री आपके नाम ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र को हर समय रटन करूँगा।

(१८) हे श्री गुरुदेव भगवान्! मैं शरीर से सम्पूर्ण स्वाभाविक कर्तव्य कर्म श्री आपकी सेवा, पूजा, तप, यज्ञ ही समझूंगा (पुत्रभाव)

(१९) हे समदर्शी भगवान्! मैं लाभ-हानि, जीवन-मरण, मान-अपमान, स्तुति-निन्दा, अनुकूलता-प्रतिकूलता तथा सुख-दुःखों की प्राप्ति में हर्ष-शोक रहित समाचित्त, सहनशीलता, धीरता, वीरता, गम्भीरता, प्रेम, प्रसन्नता, शान्ति, आनन्द में हर समय मग्न रहूँगा।

(२०) हे श्री भगवान्! मैं झूठ, कपट, चोरी, ब्लैक, पगड़ी, रिश्वत, सट्टा, जूआ आदि हिंसाजनक पापमय धोके पूर्ण कार्य तथा आवश्यकता से अधिक अन्न, धन, वस्त्र, भवन, जमीन आदि पदार्थों का संग्रह नहीं करूँगा।

(२१) हे भगवान्! ध्यानयोगी सत्यपुरुषों का संग, सेवा, स्मरण, आज्ञापालन करता रहूँगा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

हर समय अर्थ भावना सहित मंत्र का जप ए
ॐ श्री संत भगवान् का स्मरण करें

हर समय अर्थ भावना सहित मंत्र का जप एवं ॐ श्री संत भगवान् का स्मरण करें ।

ॐ आनन्दमय	ॐ शान्तिमय
अर्थ भावना--	अर्थ भावना--
श्री परमात्मा देव आनन्दमय !	श्री परमात्मा देव शान्तिमय !
श्री संत भगवान् आनन्दमय !	श्री संत भगवान् शान्तिमय !
मैं आनन्दमय !	मैं शान्तिमय !
सब आनन्दमय !	सब शान्तिमय !

उपरोक्त २१ प्रार्थना के गुण, ज्ञान, भाव, आचरण ही संध्या-सेवा-पूजा-तपस्या-यज्ञ-दान-भक्ति,तीर्थ स्नान है; अतः इसको ही प्रतिदिन ठीक समय पर श्रद्धा, प्रेम, विश्वासयुक्त प्रातः सायं और शयन तीन समय निष्काम-भाव से पढ़ें और तदनुसार आचरण करें तथा योगसिद्ध ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का निरन्तर जप करते रहें। यही दुखमय संसार समुद्र से अति शीघ्र तारने वाली आनन्दमयी नौका है।

हे भगवान् ! मैं साग-सब्जी, फुल्का-रोटी, दाल, चावल, खिचड़ी, दूध, फल तथा साधारण मीठा, घी, सात्त्विक पदार्थों का तेल आदि सात्त्विक भोजन तथा सस्ता, सादा, मोटा, वस्त्र धारण करूँगा। (सफेद वस्त्र सात्त्विक, अनेक रंगों के राजसी तथा नीले-काले तामसी समझें; नमक, मसालों का प्रयोग कम मात्रा में करें)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मानसिक चिकित्सा

(भावनाका ग्रहण-त्याग)

मानसिक निरोगी के लक्षण तथा मानसिक रोगों का ज्ञान

(१) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं आनन्दमय, मैं दुःखमय नहीं।

(२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं शान्तिमय, मैं चिन्तामय नहीं।

(३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं सात्त्विक गुण-ज्ञानमय, मैं तामस गुण ज्ञानमय नहीं।

(४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं प्रभावयुक्त भावमय, मैं बुद्धिनाश भावमय नहीं।

(५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं सुखभावमय, मैं रोगभावमय नहीं।

(६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं वीरभावमय, मैं कायरभावमय नहीं।

(७) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं धैर्य्यभावमय, मैं अशान्ति भावमय नहीं।

(८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं सहनशीलता भावमय, मैं क्रोध-भावमय नहीं।

(९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं प्रेमभावमय, मैं धोकाभावमय नहीं।

(१०) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं समचित्तभावमय, मैं द्वन्द्व-भावमय नहीं।

(११) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं संतोषभावमय, मैं कामना-भावमय नहीं।

(१२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं सर्वहितभावमय, मैं सर्वहिंसाभाव-मय नहीं।

(१३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं भक्तिभावमय, मैं ईर्षाभावमय नहीं।

(१४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं निर्द्वन्द्वभावमय, मैं विकारभाव-मय नहीं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(१५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं प्रसन्नता-भावमय, मैं कलह-क्लेश-भावमय नहीं ।

(१६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं निष्कामभावमय, मैं कूटनीतिभावमय नहीं ।

(१७) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं बन्धुभावमय, मैं द्वेषभावमय नहीं ।

(१८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं सुहृदताभावमय, मैं निर्दयताभावमय नहीं ।

(१९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं संतज्ञानमय, मैं दुष्टज्ञानमय नहीं ।

(२०) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं ईश्वरकृपामय, मैं मायाकृपामय नहीं ।

(२१) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं दम्भहीनभावमय, मैं धूर्तभावमय नहीं ।

(२२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं महात्मा-संगमय, मैं पापात्मा-संगमय नहीं ।

(२३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं देव-स्वभावमय, मैं राक्षस-स्वभावमय नहीं ।

(२४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं गुणातीतभावमय, मैं गुणग्रसित भावमय नहीं ।

(२५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं समदर्शीभावमय, मैं विषमदर्शी भावमय नहीं ।

(२६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं सत्यभावमय, मैं कपटभावमय नहीं ।

(२७) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं त्यागभावमय, मैं संग्रहभावमय नहीं

(२८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं द्वादश गुरुभक्तिभावमय, मैं गुरुद्रो भावमय नहीं ।

(२९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं सेवाभावमय, मैं मुफ्तखोरीभावमय नहीं ।

(३०) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं संयमभावमय, मैं भोगभावमय नहीं

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(३१) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं जप-ध्यानमय, मैं आलस्य-प्रमाद-मय नहीं ।

(३२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं दयाभावमय, मैं मांसाहारभाव-मय नहीं ।

(३३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं ॐ श्री गुरुश्रद्धाभावमय, मैं ॐ श्री गुरु आज्ञा अवहेलना स्वभावमय नहीं ।

(३४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं ईश्वर-आश्रयभावमय, मैं व्यक्ति-आश्रय भावमय नहीं ।

(३५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं दम्भी दण्डभावमय, मैं दम्भी-गुरु-भावमय नहीं ।

(३६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं ध्यानस्थमित्रभावमय, मैं ध्यानस्थ-द्वेषभावमय नहीं ।

(३७) हे आनन्दमयप्रभु ! मैं शरणागत-क्षमाभावमय, मैं शरणागतदण्डभावमय नहीं ।

(३८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं अकर्त्ताभावमय, मैं कर्त्ता-भोक्ता-भावमय नहीं ।

(३९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं ब्रह्मस्वरूप आनन्दमय, मैं माया-स्वरूप शोकमय नहीं ।

(४०) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं अनन्त, अपार, असीम भावमय, मैं क्षुद्रतम जीवभावमय नहीं ।

(४१) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं त्याग-सेवा-भावमय, मैं जूआ, सट्टा, रिश्वत, ब्लैक भावमय नहीं ।

(४२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं द्वन्द्वातीतभावमय, मैं उद्वेगभाव-मय नहीं !

(४३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं अमरभावमय, मैं जन्म-मरण-भावमय नहीं ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(४४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं गम्भीरभावमय, मैं चंचलभाव मय नहीं ।

(४५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं विनयभावमय, मैं कठोर भावमय नहीं ।

(४६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं श्रेष्ठ भावमय, मैं कुटिल भावमय नहीं ।

(४७) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं सादगी भावमय, मैं फैशन शौकीनी भावमय नहीं ।

(४८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं गुणवान् आज्ञाकारी भावमय मैं जिद्-वाद भावमय नहीं ।

(४९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं आस्तिक (संयम, सेवा, स्मरण सादगी) भावमय, मैं नास्तिक (इच्छा, क्रोध, लोभ ममता) भावमय नहीं ।

(५०) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं अतिथि सत्कार भावमय, अतिथि तिरस्कार भावमय नहीं ।

(५१) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं सर्वभूत-भगवत्-दर्शनभावमय मैं महापुरुषों में दोषदर्शन भावमय नहीं ।

(५२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं न्यायकारी भावमय, मैं पक्षपात भावमय नहीं ।

(५३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं शौच (पवित्र) भावमय मैं राग-द्वेषभावमय नहीं ।

(५४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं वैराग्यभावमय, मैं राग भावमय नहीं ।

(५५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं ध्यान-शान्तिमय, मैं अ शान्तिमय नहीं ।

(५६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं ईमानदारी भावमय, मैं चो भावमय नहीं ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(५७) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं मनोनिग्रहभावमय, मैं मनोउच्छ-
शृंखलभावमय नहीं ।

(५८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं इन्द्रिय-विजयी-भावमय, मैं
इन्द्रिय-दासभावमय नहीं ।

(५९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं ईश्वर-श्रद्धाभावमय. मैं कल्पित
में अंध श्रद्धाभावमय नहीं ।

(६०) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं तपतेजभावमय, मैं दीनभाव-
मय नहीं ।

(६१) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं स्वार्थ-त्यागभावमय, मैं लोभ-
भावमय नहीं ।

(६२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं अमानित्वभावमय, मैं दम्भभाव-
मय नहीं ।

(६३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं अपैशुनता-भावमय, मैं संत-
भक्त-निन्दा भावमय नहीं ।

(६४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं निर्वैरता भावमय,मैं संत-भक्तवैर-
भावमय नहीं ।

(६५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं निरहंकारता भावमय, मैं जाति,
आश्रम अहंकार भावमय नहीं ।

(६६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं कर्त्तव्य-परायण भावमय, मैं
आलस्य भावमय नहीं ।

(६७) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं स्थिरमतिभावमय, मैं चंचल
मतिभावमय नहीं ।

(६८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं ध्यान-सुखभावमय, मैं निद्रा-
सुखभावमय नहीं ।

(६९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं नम्रता भावमय, मैं घमण्ड
भावमय नहीं ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(८०) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं तीव्र-बुद्धि भावमय, मैं मन्द-बुद्धि भावमय नहीं ।

(८१) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं ज्ञानी भावमय, मैं मूढ़ भावमय नहीं ।

(८२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं विश्वशान्ति, गीता धर्मभावमय, मैं गप-गपौड़े पुस्तक धर्म भावमय नहीं ।

(८३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं ईश्वर प्रचार भावमय, मैं अनीश्वर प्रचार भावमय नहीं ।

(८४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं जीवित संत द्वादश भक्ति भावमय, मैं मृतक संत भक्ति भावमय नहीं ।

(८५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं ध्यानस्थ देवी-पुरुषदर्शन, सेवा भावमय, मैं कल्पित चित्र दर्शन, सेवा भावमय नहीं ।

(८६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं उत्साह भावमय, मैं दीर्घसूत्री भावमय नहीं ।

(८७) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं संतोष भावमय, मैं तृष्णा भावमय नहीं ।

(८८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं उपकारी की सेवा, गुणगायन भावमय, मैं उपकारी की निन्दा, दंण्ड भावमय नहीं ।

(८९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं सर्वारम्भ परित्यागी भावमय, मैं किंचित् उपकार को भयंकर अखबार-सूचना भावमय नहीं ।

(९०) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं गुणवान् आदर, सेवा भावमय, मैं मान्यवान् दम्भी राक्षस, सेवा भावमय नहीं ।

(९१) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं खादी धारण भावमय, मैं रेशमी बाना धारण भावमय नहीं ।

(९२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं सात्त्विक-पदार्थ-प्रिय भावमय, मैं राजस-तामस-पदार्थ-प्रिय भावमय नहीं ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(८३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं धर्मात्मा गुणगायन भावमय, मैं धर्मात्मा अवगुणगायन भावमय नहीं ।

(८४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं ईश्वर-रचना-दर्शन भावमय मैं सिनेमा, नाटक आदि दर्शन भावमय नहीं ।

(८५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं अन्तः आनन्द भावमय, मैं संगीत आनन्द भावमय नहीं ।

(८६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं ईश्वर-संत चितवन भावमय, मै संसार चितवन भावमय नहीं ।

(८७) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं विश्वशान्ति, गीता शास्त्र श्रवण भावमय, मैं अखबार, रेडियो का प्रमाद श्रवण भावमय नहीं ।

(८८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं सादा भोजन प्रिय भावमय, मैं होटल, मिठाई, चाय प्रिय भावमय नहीं ।

(८९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं दूध, फल, साग, सब्ज़ी प्रिय भावमय, मैं अण्डा, काफ़ी प्रिय भावमय नहीं ।

(९०) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं सीधा सादा शरीर प्रिय भावमय, मैं स्वर्ण गहना, मोती, हीरा सजावट प्रिय भावमय नहीं ।

(९१) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं खुले मैदान भ्रमण प्रियभावमय, मैं मोटर, साईकल भ्रमण प्रिय भावमय नहीं ।

(९२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं दुखी सेवा भावमय, मैं गरीब शोषभावमय नहीं ।

(९३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं दम्भी, पाखण्डी दण्ड भावमय, मैं दम्भीपाखण्डी सन्यासी की सेवा, नमस्कार भावमय नहीं ।

(९४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं विश्वशान्ति भावमय, मैं विश्वनाश भावमय नहीं ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(९५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं जप ध्यान कामनामय, मैं धन, मान, भोग, सन्तान कामनामय नहीं।

(९६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं संत प्रेम भावमय, मैं स्त्री, पति, पुत्र प्रेम भावमय नहीं।

(९७) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं तामस, राजस कर्म, संग, भाव में लज्जा भावमय, मैं सात्त्विक कर्म, संग, भाव में लज्जा भावमय नहीं।

(९८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं देश-जाति-एकता भावमय, मैं देश-जाति-भेद (अनेक) भावमय नहीं।

(९९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं सत्त्वगुणी, गुणातीत अभिमान भावमय, मैं लालवस्त्र-स्वांग, जाति श्रेष्ठ अभिमान भावमय नहीं।

(१००) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं जाति-समभावमय, मैं उच्च जाति श्रद्धा प्रेम, नीच जाति घृणा-द्वेषभावमय नहीं।

(१०१) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं भक्त संगमय, मैं विषयी संगमय नहीं।

(१०२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं गुण, कर्म, ज्ञान भावमय, मैं संस्कृत भाषा रटन अभिमान भावमय नहीं।

(१०३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं विश्व-गुण-ज्ञानवानदर्शी भावमय, मैं दर्जन बेटे पोते दर्शी भावमय नहीं।

(१०४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं निन्दा-स्तुति में समचित्त भावमय, मैं स्तुति-निन्दा में हर्ष-शोक भावमय नहीं।

(१०५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं मान-अपमान में समचित्त भावमय, मैं मान-अपमान में राग-द्वेष भावमय नहीं।

(१०६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं अनुकूल-प्रतिकूल में समचित्त भावमय, मैं अनुकूल-प्रतिकूल में द्वन्द्व भावमय नहीं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(१०७) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं लाभ-हानिमें सम भावमय, मैं लाभ-हानिमें विषम भावमय नहीं ।

(१०८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं दुःख-सुख में समचित्त भावमय, मैं दुःख में घबराहट भावमय नहीं ।

(१०९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं जय-पराजय में सम भावमय, मैं पराजय में दुःख भावमय नहीं ।

(११०) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं ब्रह्मचर्य भावमय, मैं व्यभिचार भावमय नहीं ।

(१११) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं ध्यानस्थ,दुखियों पर धन व्यय भावमय, मैं धन संग्रह कृपण भावमय नहीं ।

(११२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं गुण, कर्म, ज्ञान, प्रभाव से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र भावमय, मैं जन्म से ही ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र भावमय नहीं ।

(११३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं धूप अगरबत्ती से घर सुगन्धिमय, मैं तम्बाकू हुक्का सिग्रेट आदि से आकाश भी दुर्गन्धिमय नहीं ।

(११४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं मान बड़ाई में वैराग्य भावमय, मैं मान बड़ाई में अमोद प्रमोद भावमय नहीं ।

(११५) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं सौम्य स्वभावमय, मैं चिड़-चिड़ा स्वभावमय नहीं ।

(११६) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं सात्विक गुणातीत की आज्ञा-पालन भावमय, मैं राजस, तामस, नास्तिक, दम्भी माता, पिता, पति ही भगवान् की आज्ञा-पालन भावमय नहीं ।

(११७) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं पुरुषार्थ से ही ईश्वर-संतकृपा भावमय, मैं प्रारब्ध से सब कुछ भावमय नहीं ।

(११८) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं शुद्ध वायु प्रियभावमय, मैं धुआँ,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

गर्द प्रिय भावमय नहीं ।

(११९) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं इन्द्रिय संयम भावमय, मैं देवी पुरुष रमण भावमय नहीं ।

(१२०) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं कीर्ति वैराग्य भावमय, मैं कीर्ति इच्छा भावमय नहीं ।

(१२१) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं पर-उपकार-स्मरण भावमय, मैं पर-उपकार—अवहेलना भावमय नहीं ।

(१२२) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं देवी-पुरुषों में समान शक्ति भावमय, मैं देवियों पर दबाव भावमय नहीं ।

(१२३) हे आनन्दमय प्रभु ! मैं पर-दण्ड विस्मृति भावमय मैं परदण्ड स्मरण भावमय नहीं ।

(१२४) हे शान्तिमय प्रभु ! मैं मृत्यु में भगवत् कृपा भावमय मैं मृत्यु में रुदन भावमय नहीं ।

(१२५) हे आनन्दमयप्रभु ! मैं एकान्त घर, स्थानप्रिय भावमय, मैं हल्ला-गुल्ला, खचखच प्रिय भावमय नहीं (जैसे पाश्चात्य देशवासी)

उपर्युक्त मानसिक चिकित्सा के १२५ सूत्रों को आप प्रति दिन पढ़ें; आपके दुःख, अशान्ति, अज्ञान का नाश होकर श्री महापुरुष भगवान् की कृपा से अतिशीघ्र आनन्द, शान्ति, ज्ञान, सुख की प्राप्ति होगी।

(१) हे भगवान् ! मैं उपरोक्त सत्त्वगुणी, गुणातीत देवी-संपदावान् के गुण, कर्म, ज्ञान, भाव, आचरणों को धारण करूँगा (करूंगी) और उपर्युक्त तामस, राजस, दम्भी, नास्तिक आसुरी, राक्षसी संपदावान् के गुण, कर्म, ज्ञान, भाव, आचरणों का सर्वथा त्याग करूंगा (करूंगी) !

(२) हे भगवान् ! मैं उपर्युक्त सज्जन के लक्षणयुक्त सत्य महापुरुष श्री मर्यादा पुरुषोत्तम महात्मा श्री योगिराज

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ॐ आनन्दमय भगवान्‌का संग, सेवा, गुणगायन, आज्ञा-पालनकर परमलाभ प्राप्त करूंगा (करूंगी) और उपरोक्त दुर्जनके लक्षणयुक्त दम्भी महात्मा, गुरु, पुरोहितका संग, सेवा, नमस्कार करनेका त्याग करूंगा (करूंगी) !

(३) हे भगवान् ! मैं संपूर्ण मानसिक बीमारी, अज्ञानकी निवृत्ति तथा पूर्ण आनन्दकी प्राप्ति के लिए योगसिद्ध ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्रको हर समय रटन करूंगा (करूंगी) एवं विश्व शान्तिकी २१प्रार्थना, ९५सूत्र ज्ञानामृत, १२५ सूत्र मानसिक चिकित्सा का नित्य स्वाध्याय और समाधिस्थ (देवी-पुरुष) महात्मा, परमात्मा का ध्यान करूंगा (करूंगी) !

(४) हे ॐ श्री योगिराज आनन्दमय भगवान् ! मुझे ध्यान शिक्षा दीजिए !

(५) हे ॐ श्री योगिराज महापुरुष भगवान् ! मेरा पूर्ण श्रद्धा-विश्वास है कि श्री आपके जप, ध्यान, द्वादश भक्ति से ही मनुष्य सर्वश्रेष्ठ गुणवान्, ज्ञानवान् आनन्दवान् विश्वपति पदाधीश, प्रभाववान् और परमसुखी होता है।

(६) हे ॐ श्री योगिराज आनन्दमय भगवान् ! मैं श्री आपकी शरण हूँ, श्री आपकी आज्ञापालन करूंगा (करूंगी)।

ॐ श्री आनन्दमय भगवान् की जय !

आपको ॐ श्री स्वामी आनन्दमय
संत भगवान् के संग
देखने का अभिलाषी,
ध्यानमग्न प्रसन्नात्मा (आनन्दमय)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ज्ञानामृत

ॐश्री गुण, ज्ञान, ध्यान, आनन्द, आत्म-प्रभाव दाता परमगुरुदेव श्री योगिराज आनन्दमय भगवा शरणम् ।

पूर्णानन्द महात्मा, परमात्मा, आत्मा ध्यान से आ पहर आनन्द ।

त्याग तत्त्व

(दुर्गुण-दुराचार का ज्ञान)

निम्नलिखित गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों का त्याग न हो के कारण ही आज मनुष्य दुःखी, अशान्त, कलहयुक्त, भू रोगमय हैं ।

(१) हे चेतनस्वरूप भगवान् ! मैं छः घन्टा से अधिक सोने प्रेम का त्याग करूँगा ।

(२) हे भक्त-वत्सल भगवान् ! मैं कर्तव्य कर्मों में आलस्य त्याग करूँगा ।

(३) हे सर्वहितमय भगवान् ! मैं मन, बुद्धि, इन्द्रिय, शरीर होने वाले ऐसे प्रमाद कर्मों का त्याग करूँगा जिनसे अपना न दूसरों का ही भला हो ।

(४) हे सर्व अन्तर्यामी भगवान् ! मैं प्रमाद से अथवा स्वा वश मन, वाणी, शरीर द्वारा किसी जीव को कष्ट देने हिंसाभाव का त्याग करूँगा ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(५) हे सर्वरक्षक भगवान्! मैं दुःख, चिन्ता, भय, क्रोध, वैर, द्वेष, कलह का त्याग करूँगा।

(६) हे सन्तोषमय भगवान्! मैं देख, सुन पढ़कर धनवान्, जनवान, मान्यवान, कीर्तिमान् बनने की कामना का त्याग करूंगा।

(७) हे विश्वम्भर भगवान्! मैं सीमित ममता-बुद्धि से अन्न, वस्त्र, धन, भवन आदि के अधिक संग्रह का त्याग करूंगा।

(८) हे वैराग्यस्वरूप भगवान्! मैं आवश्यकता से अधिक देखने, सुनने, बोलने, पढ़ने, खाने, सूंघने का त्याग करूंगा।

(९ हे परमपिता भगवान्! मैं प्राणी पदार्थों में सीमित ममता का त्याग करूंगा।

(१०) हे संत भगवान्! मैं शरीर निर्वाह मात्र से अधिक (शौकीनी, मान, भोग बुद्धि से) अन्न, वस्त्र का त्याग करूंगा।

(११) हे समतामय भगवान्! मैं शरीर, प्राणी, पदार्थों के उत्पत्ति-विनाश तथा अनुकूल-प्रतिकूल की प्राप्ति में हर्ष-शोक का त्याग करूंगा।

(१२) हे ज्ञानस्वरूप भगवान्! मैं जाति, वर्णाश्रम, आयु, धन, मान, विद्या, वेद-शास्त्र कण्ठस्थ करने के अहङ्कार का त्याग करूंगा।

(१३) हे कर्मठ भगवान्! मैं शरीर के आराम (व्यर्थ बैठे रहने) का त्याग करूंगा।

(१४) हे शान्तिमय भगवान्! मैं आवश्यकता से अधिक मन, बुद्धि, नेत्र, कान, वाणी आदि के विषय ग्रहण तथा हाथ पैर आदि हिलाने की चंचलता का त्याग करूंगा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(१५) हे रसमय भगवान्! मैं सिनेमा, सरकस, गाना, बजा
आदि देखने, सुनने की आदत का त्याग करूंगा।

(१६) हे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान्! मैं मनोरंजक उपन्
तथा कल्पित पुस्तकों से वैराग्य करूँगा और अख
पेपरों में पढ़कर एवं सुनकर राग-द्वेष की वृत्तिका त
करूंगा।

(१७) हे अभयं भगवान्! मैं अज्ञानियों द्वारा अपमान
के भय, निन्दा होने पर द्वेष तथा हानि होने पर शोक
त्याग करूंगा।

(१८) हे गुणदाता भगवान्! मैं सेवा, स्मरण, संयम,
आदि शुभकर्मों में मान,बड़ाई,प्रतिष्ठा की कामना-आ
का त्याग करूंगा।

(१९) हे सर्वसुहृद भगवान्! मैं मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा में आ
प्रमोद माननेका त्याग करूंगा।

(२०) हे क्षमावान भगवान्! मैं द्वेष, वैर करने वालों के
वदला लेने के स्वभाव का त्याग करूंगा।

(२१) हे सर्वशक्तिमान् अकर्त्ता भगवान्! मैं कर्मों में 'मैं
के अभिमान का त्याग करूंगा।

(२२) हे आत्मानन्दमय भगवान्! मैं दुश्मन की भौ
उन्नति देख, सुन,पढ़कर संतप्त होने का त्याग करूंगा

(२३) हे सहनशीलतामय भगवान्! मैं अपने ही मान
भावों से किसी प्रकार उद्विग्न होने का त्याग करूंगा।

(२४) हे समचितमय भगवान्! मैं शरीर, इन्द्रियों के
प्राणी-पदार्थों, वैरी-मित्र में राग-द्वेष का त्याग करूंगा

(२५) हे शरणागतवत्सल भगवान्! मैं विषयी पामर मनु
तथा राजस भोग्य पदार्थों में प्रेम का त्याग करूंगा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

२६) हे दुष्टदण्डदायक भगवान् ! मैं दम्भाचरण का त्याग करूँगा।

२७) हे प्रेममय भगवान् ! मैं कठोर वाणी का त्याग करूँगा।

२८) हे सृष्टि के रचयिता भगवान् ! मैं सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय, स्तुति-निन्दा में हर्ष-शोक का त्याग करूँगा।

२९) हे परम भावमय भगवान् ! मैं भाव में कृपणता का त्याग करूँगा।

३०) हे प्रेम स्वरूप भगवान् ! मैं रूखेपन का त्याग करूँगा

३१) हे तत्त्वज्ञानी भगवान्! मैं मत्सरता (ईर्षा) का त्याग करूँगा।

३२) हे महापुरुषदेव भगवान् ! मैं सर्वत्र इच्छा का त्याग करूँगा।

३३) हे शान्तिदायक भगवान् ! मैं अपने अशान्त भावों को प्रकट करने का त्याग करूँगा।

३४) हे ज्ञानस्वरूप भगवान् ! मैं पढ़-सुन कर सत्य व असत्य मानने की महामूर्खता तथा देख कर मानने की मूर्खता का त्याग करूँगा (केवल अनुभव ही सत्य है)।

३५) हे जितेन्द्रिय भगवान् ! देवी-पुरुष परस्पर सम्भोग (रमण) का त्याग करूँगा।

३६) हे न्यायकारी भगवान् ! मैं पापियों और दम्भियों को दण्ड देने के भय का त्याग करूँगा।

३७) हे कृपामय भगवान् ! मैं अपने अवगुण प्रकट होने के समय सफाई देने का त्याग करूँगा।

३८) हे दयामय भगवान ! मैं जिद्दवाद (हठ), जबरदस्ती का त्याग करूँगा।

३९) हे सर्वरूप भगवान । मैं ऊँच जाति से प्रेम, नीच जाति से घृणा-द्वेष छूआछूत का त्याग करूँगा (मनुष्यमात्र की

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

एक ही जाति है, जैसे चमड़े, सोने, लोहे का कार्य करने वालों को क्रमशः चमार, सुनार, लोहार कहा जाता है परन्तु यह जातियाँ नहीं हैं; गुण, कर्म, ज्ञान, भाव तो संग के प्रभाव से परिवर्तन-शील है। क्या बाटा और टाटा के कार्यकर्ताओं को चमार, लोहार कहेंगे ?)

(४०) हे त्यागमय भगवान्। मैं दूसरों द्वारा हुए अपकार और अपने द्वारा हुए उपकार की स्मृति रखने का त्याग करूँगा।

(४१) हे निष्कामी भगवान्! मैं मान-बड़ाई के लिए तन, धन खर्च करने के स्वभाव का त्याग करूँगा।

(४२) हे कोमलतामय भगवान्। मैं अपनी खुशामद कराने के स्वभाव का त्याग करूँगा।

(४३) हे समानशक्ति दायक भगवान। मैं देवियों की शक्ति, ज्ञान कम समझकर उन पर दबाव डालने का त्याग करूँगा।

(४४) हे पालनकर्ता भगवान्। मैं असत्यता पूर्वक कपट नीति से धन आदि कमाने का त्याग करूँगा (गुप्त कार्यों में नीति-हे प्रेमियों! मैं मिथ्या वचन बोलूँगा नहीं और सत्य बतलाऊँगा नहीं)।

(४५) हे जनार्दन भगवान्! मैं अपने द्वारा हुए अपकार और दूसरे द्वारा हुए उपकार की विस्मृति का त्याग करूँगा।

(४६) हे सत्यस्वरूप भगवान्! मैं उत्तम पुरुषों के गुण, ज्ञान, भाव, आचरण न समझकर उनमें अवगुण देखने तथा प्रकट करने के स्वभाव का त्याग करूँगा (यदि गुण-अवगुण प्रकट करने में परिणाम हित-अहित का अनुभव हो तो हित भाव से प्रकट करना कर्तव्य है)।

(४७) हे सर्वगुणसम्पन्न भगवान। मैं अवगुणों में सुख भावना का त्याग करूँगा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(४८) हे सुखस्वरूप भगवान् ! मैं मूर्खता वश अपने मन, बुद्धि, शरीर को कष्ट देने का त्याग करूँगा।

(४९) हे पतितपावन भगवान् ! मैं झूठ, कपट, चोरी, धोकेबाजी और ब्लैक, पगड़ी (मकान मालिकों की लूट), रिश्वत, सट्टा, जूआ आदि हिंसामय कर्मों का त्याग करूँगा।

(५०) हे इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम् भगवान् ! मैं नकली घी, लहसुन, प्याज, शलगम, बैंगन, मिर्च, खट्टा, चाय, पान, सुपारी, मांस, अण्डे तथा तम्बाकू, सिग्रेट, बीड़ी, हुक्का, शराब, अफीम, भाँग, गाँजा आदि नशीले पदार्थ भक्षण करने का त्याग करूँगा।*

(५१) हे गुरु भगवान् ! मैं माता, पिता, पति, स्त्री, स्वामी, मित्र के राजस, तामस आचरणों का अनुकरण तथा आज्ञा पालन करने का त्याग करूँगा।

(५२) हे शान्तिमय भगवान ! मैं दूसरों को पापमय अशान्त देखने के स्वभाव का त्याग करूँगा। (प्रेम दृष्टि—सब आनन्दमय हैं, सब शान्तिमय हैं, सब रूपों में एक ॐ आनन्दमय भगवान् ही लीलामय हैं)।

---

*बहुत से पदार्थ एवं नमक-मसाले दवाइयाँ हैं। दवाई को भोजन बनाना तथा आदत वश रोज खाना निषेध है। घी, तेल में तले हुए तथा भुने हुए पदार्थ रूक्ष, राजसी एवं रोगों को बढ़ाने वाले हैं। उत्तेजक तथा नशीले तामस पदार्थों से रोग, अशान्ति, बुद्धि का नाश तथा आयु कम होती है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मनुष्य के लक्षण

(सद्गुण-सदाचार का ज्ञान)

(५३) निर्भयता
(५४) अन्तःकरण की निर्मलता
(५५) वीरता
(५६) सहनशीलता
(५७) धैर्य
(५८) सुहृदता
(५९) गम्भीरता
(६०) सन्तोष
(६१) निष्कपटता
(६२) कोमलता
(६३) उत्साह
(६४) अतिथिसत्कार
(६५) जितेन्द्रिय
(६६) हल्का अल्पाहार
(६७) आसन जय
(६८) स्थिरमति
(६९) बुद्धिमता
(७०) प्रसन्नता
(७१) विश्व प्रेम
(७२) क्षमा
(७३) निर्द्वन्द्वता
(७४) समता
(७५) शान्ति
(७६) आनन्द

(७७) अपना धन, भवन, तन, ज्ञान आदि वृक्ष के सदृश विश्व को देते रहना (ध्यानस्थ सद्गुण-सदाचारी देवी-पुरुषों की सेवा ही प्रत्यक्ष सुख-शान्तिदायक परम सेवा समझें।

(७८) ब्रह्मचर्य—देवियों के रज तथा पुरुषों के वीर्य की रक्षा (सन्तानों से जीवन दुःख, चिन्ता, भय, रोगमय हो जाता है)।

(७९) सफाई (शरीर, वस्त्र, मकान आदि की)।

(८०) प्रिय हितकारक तथा अनुभव युक्त यथार्थ भाषण।

(८१) जिस किस प्रकार से भी शरीर का निर्वाह होने में सदा प्रसन्न रहना।

(८२) गुणातीत से मित्रता, सत्त्वगुणी (सेवा, सादगी परायण ध्यानस्थ) देवी-पुरुषों से प्रेम, दुःखियों पर दया।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(८३) राजसी, तामसी, नास्तिक, दम्भियों से उपेक्षा (वैराग्य)।
(८४) वैरी के गुणों, प्रेमी के अवगुणों में पक्षपात रहित रहना।
(८५) आततायी तथा दम्भी पुरुषों के दण्ड विधान में भी हित भाव।
(८६) वैरी की भी अध्यात्मिक उन्नति देखकर प्रसन्न होना।
(८७) शान्तभाव का प्रदर्शन तथा हर समय आनन्द की भावना में मग्न।
(८८) भूत प्राणी मात्र में समभाव (आत्म भाव)।
(८९) महात्मा-परमात्मा के नाम जप और स्मरण (ध्यान) करने-कराने से ही संपूर्ण सुख, शान्ति, परमानन्द, ईश्वर पद प्राप्त होने का अनुभव।
(९०) महावैर करने वालों को भी आनन्द देने का स्वभाव।
(९१) बन्धन मोक्ष का ज्ञान, अन्तःकरण में संशय और विक्षेप का अभाव।
(९२) महात्मा और परमात्मा में पूर्ण विश्वास।
(९३) भगवन्नाम मंत्र सिद्धि (अन्य देवी-पुरुषों को मन्त्र देने से उन्हें सुख शान्ति हो।
(९४) ध्यान सिद्धि (अन्य देवी-पुरुषों का ध्यान लगाने का सामर्थ्य हो)
(९५) आत्म साक्षात्कार-सम्पूर्ण दुःखों का अभाव, सम्पूर्ण प्राणियों का हिताधिकार।

उपरोक्त ९५ सूत्रों (दुर्गुण-दुराचार के ५२ तथा सद्गुण सदाचार के ४३) को प्रति दिन पढ़ें और तदनुसार भाव-आचरण बदलने की चेष्टा करें। ॐ श्री गुरू भगवान् की कृपा से आप शीघ्र ही उत्तम गुण, ज्ञान, भाव, आचरण युक्त सुख-शान्तिमान् हो जायंगे।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

त्यागी वह मनुष्य है जिसने ईश्वर मर्यादा को भंग करना त्याग दिया है। उपरोक्त आचरण जिन देवी-पुरुषों के नहीं हैं वह ईश्वरीय मर्यादा को भंग करते हैं; इस कारण दण्ड के पात्र हैं—रोगी, भूखे, अशान्त, दुःखमय भयातुर हैं।

इस ज्ञानामृत लेख के गुण, ज्ञान, भाव, आचरण युक्त ईश्वरपद प्राप्त श्री महापुरुष देव की द्वादश भक्ति—दर्शन, भाषण, आचरण, सेवा, नमस्कार, समर्पण, मानसिक पूजा, नाम जप, स्वरूपध्यान, प्रार्थना, गुणगायन, आज्ञापालन करने से आप भी अतिशीघ्र श्री महात्मापद को प्राप्त हो जायंगे।

उपरोक्त दुःखमय आसुरी, राक्षसी पापमय स्वभाव का त्याग विश्व के राजा रानी पद प्राप्तहोने पर होगा ऐसा समझना अज्ञान है। यह त्याग पदाधीश, धनी अथवा भिक्षा माँगने वाले सन्यासी कंगले बनने से नहीं हो सकता।

यह परमलाभयुक्त त्याग तो ध्यानयोगी अध्यापक ॐ श्री परमहंस योगिराज आनन्दमय भगवान् के संग, सेवा, स्मरण, आज्ञायुक्त आचरण से अतिशीघ्र बालक, बालिकाओं (मनुष्य मात्र) को आन्तरिक ध्यान-आनन्द—ईश्वरपद प्राप्त होने से होता है। ध्यान का महान् फल गीता अ० ६ श्लोक ११ से ३२, अ० ५ श्लोक १७ से २८ तक देखें।

उपरोक्त अध्यात्मिक विद्या (दैवीसम्पदा) के गुण ज्ञान, भाव, आचरण युक्त महापुरुष परमात्मा का युवराज है। सबसे पुत्रवत् आत्मप्रेम करने से ऐसे पुरुषों को स्वामी जी तथा छोटे से घर, परिवार, गाँव या प्रान्त के राजा ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को ही अपना माननेके कारण महाराज सम्बोधन देते है। शास्त्रों में ऐसे तत्त्ववेत्ता भगवत्-पद-प्राप्त देवी-पुरुषों को ही महात्मा, पण्डित, पुरोहित, पण्डा, मण्डलेश्वर, वीतराग, त्यागी, ब्रह्मचारी, सन्यासी,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

गुणातीत, ब्राह्मण, योगिराज, महाराज, गुरु, वेदान्ती, स्वामी, आचार्य, महापुरुष, मर्यादापुरुषोत्तम, विद्वान, भगवान् इत्यादि सम्बोधन दिया है।

उपरोक्त लक्षणयुक्त सच्चे आन्तरिक वैद्यराज महापुरुष श्री योगिराज आनन्दमय जी महाराज को घर २, ग्राम २, देश २, व्यक्ति २ से मिलाने लाने से ही विश्व सुख-शान्तिमान्, गुणवान्, ज्ञानवान् प्रभाववान् हो जाएगा।

याद रक्खो ! एक तो होता है ईश्वर मान्य महात्मा, दूसरा अज्ञानियों द्वारा मानित लोक-प्रसिद्ध महात्मा। ईश्वर मान्य महात्मा का संग, सेवा, स्मरण, आज्ञापालन करने से ज्ञानामृत के ९५ सूत्र और मानसिक चिकित्सा के १२५ सूत्रों मेंप्रकाशित दुर्गुण-दुराचारों का त्यागएवं सद्गुण-सदाचारों —ईश्वर-मर्यादा का पालन उत्साह और प्रेम पूर्वक होता है; सुख, शान्ति, ध्यान, आनन्द प्रतिदिन बढ़ता है जैसे पेड़ को जल देने से पत्तियां, पुष्प, फल बढ़ते हैं। महात्मा के अनुकूल एक सप्ताह संग तथा आचरण करने से ध्यान नहीं लगता तो समझ लें अभी तक नकली महात्माओं की ही द्वादश भक्ति की है। जो खुद अशान्त है उनकी भक्ति करने से आपको कैसे शान्ति होगी ?

विश्व को सुखी शान्ति-ध्यान ज्ञानवान्
देखने का अभिलाषी
आनन्दमोहन (आनन्दमय) एम० बी० बी० एस०
ॐआनन्दमय ध्यानाश्रम

—:❀:—

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

❋ ॥ ॐ आनन्दमय ॥ ❋

आनन्द--वर्षा

"गुरु-वन्दना"

नमो नमो गुरु आनन्दकन्दम्, नमो नमो गुरु शांतिकन्दम् ।टेर
मायारहितं त्रिगुणातीतम्, स्थितप्रज्ञं गुरु परमानन्दम् ॥
हो कैवल्यं हो अवधूतम्, ज्ञानमूर्ति आत्मानन्दम् ॥ १ ॥
नित्यं, एकम्, स्वच्छं, शुद्धम्, सदा उदीतं निजानन्दम् ॥
नत मस्तक है "शान्ति" नमामि सद्गुरु तव चरणार्विन्दम ॥२॥

महामंत्र की महिमा

ॐ आनन्दमय तेरा नाम, ॐ शान्तिमय तेरा नाम ॥ टेर ॥
तेरा नाम तेरा ध्यान, चिन्तन करते जो निष्काम ।
ॐ आनन्दमय जो कोई रटते, वो होवे हैं पूर्ण काम ॥ १॥
मूल मंत्र जो मानें इसको, वे पावेंगे पद निर्वाण ।
ॐ शांतिमय जो जपते वे, शांति शाश्वत पाते नाम ॥ २ ॥
मन ही मन में जो इस जप को, रटते रहते आठों याम ।
सत्य प्रतिज्ञा करती हूँ मैं, उनको मिल जायें भगवान् ॥ ३ ॥
अर्थ सहित जो जपते हैं वे, हो जावेंगे ब्रह्म समान ।
कहती हूं कर जोर विनय से, "शान्ति" संत चरणरज जान ॥४॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

गुरुदेव की कृपा

नहीं बुद्धि नहीं विद्या, पड़ी अज्ञान तम में थी।
कृपा गुरुदेव ने करके, अज्ञता को मिटाया है ॥१॥
नहीं श्रद्धा नहीं भक्ति, नहीं कछु ज्ञान था मुझको।
दया करके दयासागर, राह सतपथ बताया है ॥२॥
जो जाते हैं शरण उनकी, भक्ति श्रद्धा को लेकर के।
उन्हीं पै कर कृपादृष्टि, तत्त्व प्रभु का बतायाहै ॥३॥
नहीं कुछ चाह है उनको, विरक्ति हैं वे त्यागी हैं।
लोककल्याण करने का, कार्य भगवन् बताया है॥४॥
नहीं भक्ति नहीं सेवा, नहीं कछु प्रेम था प्रभु का।
कृपालु ने कृपा करके, ध्यान करना बताया है ॥५॥
कृपा करके अहै तुक वे, दीन जन जान अपनाया।
"शान्ति" है शरण में उनके, गुरु बेड़ा लंघाया है॥६॥

ध्यान प्रेमी प्रचारक
शान्ति देवी (आनन्दमय)
भागलपुर

——:o:——

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ॐ श्री संत प्रेम

जो भजते मुझे भावसे, मैं उनका ही बन जाता,
जो भजते मुझे भाव से ॥टेक॥
विना भाव के कोई पुकारे, कभी नहीं मैं आता,
कभी नहीं मैं आता।
भाव भरी सुन टेर भक्त की, मुझ से रहा न जाता ॥१॥
मुझे नहीं चाह वस्त्रकी, नहीं अन्न, धन चाहता,
मैं नहीं अन्न धन चाहता।
पर मैं करता स्वीकार प्रेम से, जो इक पुष्प चढ़ाता ॥२॥
विशुद्ध हृदय अनन्य मन से, मेरा ध्यान लगाता,
जो मेरा ध्यान लगाता।
उसके सारे योग क्षेम को, मैं ही स्वयं चलाता ॥३॥
कोई नहीं है दोषी मेरा, किसी को नहीं रिसाता,
मैं किसी को नहीं रिसाता।
पर जो करता अपराध भक्त का, मुझको नहीं सुहाता ॥४॥

(चारों स्तुतिप्रार्थना प्रतिदिन उच्च स्वर से गान करें, लाभ होगा)

योग-सिद्ध मंत्र का प्रभाव

आप 'ॐ अनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का ही जप क्यों बतलाते हैं ?

(१) काठ को काठ नहीं जला सकता किन्तु किंचित् जला हुआ काठ भयानक जंगल को भस्म करने में समर्थ है। ऐसे ही ॐ श्री महापुरुष भगवान् का स्वानुष्ठान युक्त योगसिद्ध ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र संपूर्ण दुखों को भस्म करने में समर्थ है; यह मेरा प्रत्यक्ष अनुभव है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(२) मिट्टी से वस्त्र साफ नहीं होता किन्तु शुद्ध सोडा मिट्टी से बना साबुन वस्त्रो को शुद्ध कर देता है; ऐसे ही ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र अन्तःकरण की मैल को अति शीघ्र शुद्ध कर देता है। किन्तु अनुभव रहित दम्भी उपदेशकों के मंत्र वर्षों भर रटने से भी लाभ नहीं होगा।

(३) लोहेको लोहा नहीं काट सकता किन्तु लोहे की आरी घन लोहे को काट कर खंड २ करने में समर्थ है। ऐसे ही मर्य्यादा पुरुषोत्तम ॐ श्री योगिराज आनन्दमय जी महाराज का 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' योगसिद्ध मंत्र मन के राजस-तामस संकल्प काटने में समर्थ है। हर समय रटन कर अनुभव करिए प्रथम महीनें में ही आपके हृदय में शान्ति, आनन्द, प्रेम, प्रसन्नता उत्पन्न होगी।

(४) तोप का गोला शक्तिशाली तोप के मुख से ही अपना प्रभाव दिखाता है हमारे हाथ से नहीं,ऐसे ही पूर्ण निष्ठावान समाधिस्थ महापुरुषके मुखारविन्द के योगसिद्ध मंत्रतथा ज्ञान से ही तमोगुण-रजोगुण का नाश होकर सत्वगुण की प्राप्ति होती है। क्या दम्भियों के मंत्र से किसी का ध्यान लगा?

(५) शिक्षा रहित अध्यापक दूसरों को कैसे पढ़ा सकता है? ऐसे ही केवल शास्त्र कंठस्थ करने वाले, स्वयं तमोगुण रजोगुण के आचरण युक्त, धन, मान, भोगों में ही श्रद्धारखने वाले नाममात्र के ही महात्मा, पण्डित, उपदेशकों के मंत्र तथा उपदेश से किंचित भी सुख.शान्ति, ध्यान, ज्ञान का लाभ नहीं होता किन्तु ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय योगसिद्ध मंत्र रटने तथा मनोविज्ञान विश्वशान्ति ग्रंथ के पठन से प्रत्यक्ष लाभ होता है।

'राजा की कलम, महात्मा का वचन'

पदाधीश की कलमसे कुछ समय तक कार्य की सिद्धि होती

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

है किन्तु सच्चे महापुरुष का मंत्र एवं ज्ञान आजीवन सुख, शान्ति, आनन्द, शक्ति, ज्ञान प्रदान करता रहता है।

परमार्थ प्रेमी पुष्प (आनन्दमय)
ॐ आनन्दमय ध्यान आश्रम

ॐ आनंदमय ध्यान आश्रम के संचालक प्रेमियों के भाव

(१) सम्पूर्ण मनुष्य ईश्वर-मर्यादा के ज्ञाता हो जाएँ।
(२) सम्पूर्ण मनुष्य ईश्वर-मर्यादा का पालन करें।
(३) सम्पूर्ण जीव दुःख, चिन्ता, भय, क्रोध, वैर, द्वेष से रहित हो जायें।
(४) सम्पूर्ण प्राणी संकटों से मुक्त, शारीरिक मानसिक रोगों से रहित हो जायें।
(५) सम्पूर्ण मनुष्य दयालु, प्रेमी हो जाएँ।
(६) सम्पूर्ण मनुष्य समता, प्रेम, प्रसन्नता, संतोष तथा शांतियुक्त हो जाएँ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(७) सम्पूर्ण मनुष्य विश्वहितैषी, दीर्घ जीवी हों।

(८) सम्पूर्ण मनुष्य गुणवान्, ज्ञानवान्, शन्तिमान्, आनंदवान्, प्रभाववान् परम सुखी हो जाएँ।

(९) सम्पूर्ण मनुष्य ईश्वर-पद प्राप्त कर प्रभु के युवराज हो जाएं।

(१०) सम्पूर्ण मनुष्य ऊँच-नीच जाति-भेद भावसे रहित परस्पर समान प्रेमभाव से युक्त हो जाएँ।

(११) सम्पूर्ण मनुष्य ध्यानानन्द में मग्न समाधिस्थ हो जाएँ।

(१२) सम्पूर्ण मनुष्य निरन्तर परमानन्द में मग्न रहें।

हे विश्व प्रेमियों! श्री प्रभु ने उपरोक्त भाव तथा गुण आचरणों के साथ-साथ आपकी सेवार्थ ज्ञान और शक्ति भी प्रदान की है। आप विधि पूर्वक समागम कर अनुभव करें।

ध्यान से सम्पूर्ण लाभ

ॐ श्री महापुरुष भगवान् के सङ्ग, सेवा, स्मरण; भक्ति से क्या-क्या लाभ होता है?

ध्यानस्थ देवी-पुरुषों का स्वअनुष्ठान युक्त अनुभवपूर्ण उत्तर—

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(१) उत्तम जलवायु वाले देश में निवास।
(२) अन्न, वस्त्र, धन, भवन, जन आदि सात्त्विक पदार्थों का समय पर आवश्यकता अनुसार प्राप्त होना।
(३) शरीर में भयानक बीमारियों का न होना।
(४) समय पर सर्दी, ज्वर आदि साधारण बीमारी होने पर दुःख, चिन्ता, भय, कष्ट आदि नहीं होता।
(५) शरीर हल्का, मन शान्त, हृदय में आनन्द, सेवा कार्य में उत्साह, प्रसन्नता, सबके साथ प्रेम तथा उत्तम व्यवहार का आचरण होता है।
(६) शरीर में हार-थकावट तथा मन में अशान्ति का न होना।
(७) मानसिक रोगों की निवृत्ति होकर मानसिक आरोग्यता रहती है।
(८) असली धर्म के पालन में उत्साह, नकली धर्म से उपेक्षा।
(९) ईश्वर मर्य्यादा भंग करने का त्याग तथा पालन करने में रुचि।
(१०) चार पांच घन्टा सोने से ही शरीर स्वस्थ तथा बुद्धि कुशलता से काम करती है।
(११) मुख पर प्रसन्नता, शान्ति, तेज, उज्ज्वलता आदि चिन्हों का प्रादुर्भाव।
(१२) ॐ श्री महापुरुष भगवान् की कृपा से कई घन्टे ध्यानावस्थित बैठकर अनन्द में मग्न हो जाना।
(१३) द्वन्द्वों में समचित रहना।
(१४) हर प्रकार के स्वभाव युक्त प्रेमियों के साथ नानात्व होने पर भी अपनी विजय का दर्शन।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(१५) निशाचर प्रकृति के दुर्जन मनुष्य चाहे कितना ही विरोध करें परन्तु श्री प्रभु की अदृश्य शक्ति के प्रभाव से अन्त में द्रोह करने वाले पराजित होकर दुःखी हो जाते हैं।

(१६) गुणों के ज्ञाता श्रद्धालु प्रेमी देवी-पुरुष हमारे गुण, ज्ञान, भाव आचरणों को समझ कर गुणगायन, यश, मानकर लाभ को प्राप्त होते हैं और मूढ़ पापी लोग निन्दा करके नाश को प्राप्त होते हैं, जिससे सम्पूर्ण जीव सुखी होते हैं किन्तु हम निंदा-स्तुति में सम रहते हैं।

(१७) जिज्ञासु प्रेमी भगवत्-बुद्धि से श्रद्धा, प्रेम, उत्साह पूर्वक सेवा शुश्रूषा करते हुए सात्त्विक लाभ प्राप्त कर सन्तुष्ट होते हैं।

(१८) राजस, तामस, सात्त्विक गुण-माया का ज्ञान।

(१९) 'मैं' तथा 'ईश्वर' के भेद-अभेद का ज्ञान।

(२०) नाना प्रकार के मनुष्यों के गुण, ज्ञान, भाव, आचरण पहचानने की योग्यता।

(२१) उत्तरोत्तर ईश्वर पद को प्राप्त होरहे हैं, इस विषय का प्रत्यक्ष अनुभव, जैसे एक सिपाही को क्रम-क्रम से राष्ट्र-पति पद पर पहुँचने तक अपने से आगे वाले पद का ज्ञान होता रहता है।

(२२) 'पिण्डे सो ब्रह्माण्डे' का ज्ञान—जो सुख, दुःख, शांति, आनंद, ज्ञान, प्रभाव सम्पूर्ण विश्व में है, वही प्रत्येक मनुष्य के शरीर में है। अन्य २ योनियों में समान होते हुए भी उनको अनुभव नहीं होता

(२३) हर समय पद २ पर भगवान् के मंगल मय विधान का ज्ञान।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(२४) प्राणी-पदार्थों के संयोग-वियोग में प्रभु की अहेतुक कृपा का अनुभव।
(२५) ध्यानावस्था में श्री प्रभु से वार्तालाप।
(२६) ईश्वर के न्याय, दयालु, प्रेम आदि गुणों का ज्ञान।
(२७) ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामी, सर्वाधार हैं इत्यादिक ईश्वर विषयक प्रभाव का ज्ञान तथा संशय-भ्रम से रहित अपरोक्ष अनुभव हो जाना।
(२८) ईश्वरीय दण्ड तथा पुरस्कार का प्रत्यक्ष अनुभव होते रहना।
(२९) श्री प्रभु आवश्यकता अनुसार हर समय हृदय से ही कर्तव्य-अकर्तव्य का ज्ञान देते रहते हैं।

हमारा यह दृढ़ विश्वास-ज्ञान है कि श्री प्रभु सम्पूर्ण मनुष्यों को उनके संग, भाव, कर्मों के अनुसार ही ज्ञान- शक्ति प्रदान करते हैं। जो प्रेमी ॐ श्री महापुरुष भगवान् का संग तथा आज्ञा पालन कर ध्यानावस्थित हो जाते हैं उनके हृदय में कार्य को विधिवत् करने की सर्वोत्तम बुद्धि तथा ज्ञान प्रकट होता ही रहता है। जैसे साधन करने वालों को अभ्यास वैराग्य का; उपदेश देने वालों को उपदेश देनेका, तत्त्वज्ञान लिखने वालों को शास्त्र लिखने का; सिद्धि चाहने वालेको सिद्धिका; (सिद्धि प्राप्त करने काफल केवल प्रजा से धन, मान प्राप्त करना ही है, अतः इनका ठीक २ परिणाम समझ कर हमारा सिद्धियों से वैराग्य है) प्रजा रक्षक राष्ट्रपति को प्रजा की सुव्यवस्था का, सेनापति को संग्राम का, वकील को वकालत विषय का तथा पुलिस आफिसर को चोर, डाकू, बदमाशों पर शासन करने का, डाक्टर-वैद्य को रोगों की उत्पत्ति तथा किस रोग के लिये कौन सी औषध उपयोगी है और श्री भगवान् ने कौनसी जड़ी-बूटी, अन्न, फल,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पुष्प आदि बनस्पति किस काम के लिए बनाई है इत्यादि का; अध्यापकों को पढ़ाने का, छात्रों को पढ़ने का, व्यापारियों का क्रय-विक्रय का, खेती करने वालों को वृक्ष, अन्न, रुई, शाक, फल, पुष्प आदि अधिक पुष्ट, बड़े रसमय बनाने की युक्ति तथा जल की मात्रा, खाद्य, जमीन के विषय का, सांईस वेत्ताओं को सांईस; का इन्जिनीयरों को मशीनरी (कल पुर्जों) का इत्यादि अनेक प्रकार के विभिन्न कार्यों का ज्ञान तथा शक्ति प्राप्त होती है।

ॐ श्री महापुरुष भगवान् के अनुकूल चलने वाले श्रद्धालु प्रेमी देवी-पुरुषों द्वारा क्या और कितना लाभ विश्व में होगा: यह पूर्णतया वाणी लेखनी द्वारा प्रकट नहीं होसकता। श्री महा-पुरुष भगवान् के प्रतिकूल चलने वालों अर्थात् द्वेष वैर का व्यवहार करने वालों द्वारा विश्व मे क्या और कितनी हानि होगी उसकी भी हम वाणी लेखनी से प्रकट करने में अस-मर्थ हैं।

उपरोक्त विषय ठीक-ठीक केवल हमारी बुद्धि में ही आया है। हम लोग श्रद्धा प्रेम, उत्साह पूर्वक अमृतमय "विश्वशांति" के गुण, ज्ञान, भाव, आचरण (धर्म) का पालन आजीवन करते रहेंगे।

लोभ, कामना, इच्छा, भय तथा भारी से भारी संकट उपस्थित होने पर भी ईश्वर-मर्य्यादा का कभी त्याग नहीं करेंगे अपितु सम्पूर्ण मनुष्यों से भाव, लेखनी, वाणी द्वारा करवाने का प्रयत्न करते ही रहेंगे। इस श्रेष्ठ गुण, ज्ञान, भाव, आचरण को पालन करने में हमें किंचित् भी कष्ट नहीं होता, अपितु श्री महापुरुष भगवान् की अहेतुक कृपा से सपूर्ण सङ्कटों का नाश हो कर सुख, शांति, ध्यान, आनन्द, ईश्वर पद की ही

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्राप्ति हो रही है। अतः हमारा दृढ़ विश्वास है कि ॐ श्री गुरु भगवान् की दिव्य कृपा से अति शीघ्र ही इस पूर्णानन्द दायक महत् कार्य को अवश्य ही पूर्ण कर लेंगे।

प्रश्न—ग्रन्थ का नाम 'विश्व-शांति' तथा ॐ श्री महापुरुष योगिराज आनन्दमय जी महराज का ईश्वर पदाधीश, विश्व-शान्ति इन्चार्ज आदि नामों से प्रकाशित किया किन्तु एक ही महात्मा द्वारा ऐसा महत् कार्य होना कैसे सम्भव है शास्त्र, युक्ति और अनुभव प्रमाण दीजिए ?

उत्तर—शास्त्र प्रमाण गीता अ० १२/४ में दैवी सम्पदावान् महात्मा को सर्वभूत हितेरताः तथा अ० १६/६ में आसुरी सम्पदावान् को 'क्षयाय जगतोऽहिताः' कह कर दोनों का समान ज्ञान, शक्तियुक्त वतलाया है। और प्रत्यक्ष में आसुरी सम्पदा-वान् एक २ पुरुष ने ही ज्ञान-शक्ति से एटम, हाइड्रोजन आदि बम तैय्यार किया है जो कि सम्पूर्ण भूतों को प्रलय काल के सदृश नाश करने वाला है। इसी प्रकार ईश्वर से सम्पूर्ण भूतों का हित शान्ति इंचार्ज पद यानी सम्पूर्ण प्राणियों का हितएवं सुखी करने की ज्ञान-शक्ति प्राप्त करना भी सम्भव ही है। यह युक्ति प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जो कोई भी प्रेमी दैवी-पुरुष ॐ श्री भगवान् ॐ आनन्दमय जी महाराज का सङ्ग, सेवा, स्मरण, आज्ञापालन करता है वह सब प्रकार से आनन्दवान् एवं ज्ञानवान् हो रहा है। यह मेरा तथा अन्य-अन्य प्रेमियों का प्रत्यक्ष अनुभव प्रमाण है।

याद रक्खो—राजस-तामस मनुष्य तो अपने अनुकूल न चलने वालों का अपनी ज्ञानाशक्ति से अनिष्ट करते हैं किन्तु सात्त्विक गुणातीत दैवी पुरुष स्वार्थ रहित, न्यायकारी, दयालु प्रेमी होते है अतः उनके अनुकूल चलने से ही परम हित होता

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

है। यही दैवी आसुरी सम्पदावान् की ज्ञान शक्तिके प्रयोग में अन्तर है। वास्तव में तो श्री महापुरुषों का अपरिमित गुण, ज्ञान, भाव, आचरण, प्रभुत्व वाणी, लेखनी द्वारा अभी तक प्रकट नहीं हो सका। यह स्थिति अनुभव-गत अनिर्वचनीय है।

अज्ञानपूर्ण भाव-आचरण

(१) गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों से गुणातीत, सात्विक, राजस तामस, दम्भी देवी-पुरुषों की परीक्षा करने के ज्ञान का न होना।

(२) पक्षपात रहित उत्तम गुण, ज्ञान, भाव, आचरण युक्त ध्यानस्थ देवी-पुरुषों के गुणोंमें दोष दिखाकर उनसे घृणा, द्वेष, निन्दा, अपमान, वैर आदि नानात्व करना (ब्रह्म हत्या पाप है)।

(३) याद रक्खो ! सम्पूर्ण अज्ञानजनित दुर्गुण, दुराचार, पापाचार, हिंसा, धोखेबाजी आदि से महाघोर दुःख बढ़ने का मूल कारण है—सीमित ममता, सीमित आसक्ति, सीमित कामना, सीमित अहंकार।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सीमित ममता—एक मेरा शरीर और इतने प्राणी-पदार्थ ही मेरे हैं।

सीमित आसक्ति—अपना शरीर तथा एक आधा दर्जन बेटे, पोते, भाई बान्धव और जाति ग्राम वालों से ही प्रेम।

सीमित कामना—मेरे और मेरे कुटुम्ब के सुखके लिए इतने पदार्थ तो हैं, इतने धन, जमीन, जायदाद पर मेरा और कब्जा हो जाए।

सीमित अहङ्कार—मैं कर्त्ता भोक्ता क्षुद्रतम जीव शरीर के ही अन्दर हूँ।

(४) आज एक मनुष्य ही नहीं सारे जीव-पशु, पक्षी, पेड़, पौदे आदि भी भयातुर, दुखी, अशान्त, भूखे, कलहयुक्त रोगमय हैं। अब महाघोर दुःख-अशान्ति का प्रसार होने वाला है। यह सम्पूर्ण धोके परायण दान, मान, दक्षिणा लेने की नीति से कल्पित धार्मिक पुस्तक लिखने-सुनाने वालों का ही तांडव नृत्य है।

(५) जोंकबुद्धि युक्त प्रजाशोषक, लोभी तथा श्रेष्ठ जाति-आश्रम के अभिमानियों को ही प्रधान, सभापति, समाज सुधारक, प्रजारक्षक आदि नियुक्त करना अज्ञान है।

(६) नाना जाति तथा अनेक मतान्तरिक अहंकार जैसे 'मैं हिन्दू तू मुसलमान, मैं ईसाई, मैं इस्लामी, मैं सनातनी मैं आर्यसमाजी, मैं जैनी, मैं बौद्धो, मैं सिख, मैं दादूपन्थी मैं कबीर पन्थी, इत्यादि कलह की जड़ हैं।

(७) मैं सन्यासी, मैं ब्राह्मण, मैं क्षत्रिय, मैं वैश्य, तू शुद्र-भंगी, तू चूड़ा-चमार, तू क्षुद्रतम नारी, परदे-बुर्के की ही रानी इत्यादि अज्ञानजनित नीच जाति से घृणा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

द्वेष और ऊंच जाति-आश्रम से श्रद्धा-प्रेम करना हिंसा पाप है।

(८) भोजन, पानी, वस्त्र इत्यादि से अंग स्पर्श होने में ही छुआछूत मानकर घृणा-द्वेष करना।

(९) देवियों को चारदीवारी के अन्दर परदे की रानी बनाकर दबाव में रखना और उनके ज्ञान तथा शक्ति का विकास न होने देना। इसी कारण भारत की देवियों का जीवन दुखःमय हो रहा है।

हे विचारवान् दयालु पुरुषो! आप गर्मियों में एक घन्टा अपने मुख पर परदा-बुर्का लगाकर अनुभव करें आपकी क्या दशा होती है? जो कष्ट आपको होगा वही आप की प्रिय प्रेमी सेविका देवियों को होता है। क्या देवियों को इस प्रकार कष्ट पहुँचाना पाप-हिंसा नहीं?

इस्लामी राज्यमें हिन्दू देवियों को निशाचर इस्लामी लोग ले जाते थे। घर गांव वाले पहचान न लें इस भय से पुनः देवियों को परदे में ही रखते और बुर्का पहना कर ही बाहर निकालते थे। इसी कारण उस समय छोटी आयु में ही शादी तथा परदा बुर्काकी प्रथा प्रचलित हुई थी, किन्तु वर्तमान में क्यों?

(१०) क्या देवियों का रूप-रंग देखकर उनके नाक, कान, नेत्र आदि को कोई चाकू से काट लेंगे? मूर्खता वश कोई हंसे तो भी देवियों तथा आपकी क्या हानि हुई? वर्तमान के विधान में देवियों के साथ छेड़छाड़ करने वाले मूढ़ों के लिए कड़ी सज़ा की धारा है। अतः देवियों को अबला, गृहणी, कामनी, गुलाम न बनाकर सहधर्मणी यानी अपने ही समान बनाइये।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(११) हे प्रिय प्रेमी देवियो ! आप पराये घरमें जाकर सबकी गुलाम, दबाव में परदे की रानी, पुरुषोंकी भोग सामग्री बन कर अपने अमूल्य जीवनको दुःख, चिन्ता भय, रोगमय ही बनाओगी। मेरा अनुभव है कि जिस घरमें आपका पालन-पोषण हुआ है वहीं रहकर प्रेम, प्रसन्नता पूर्वक प्रभु स्मरण सहित उद्योग-धन्धा करती हुई अपना जीवन सुख, शान्ति, शक्ति, ज्ञानमय बनाओ। विश्वासकरो और प्रयत्नशील हो जाओ; पुरुषों में और आपमें शक्ति समान है।

(१२) कुंवारी देवियों में किसको दुःख, अशांति है और विवाहिताओं में से किसको सुख, शान्ति है? अपितु विवाह होते हीदुःख, चिन्ता, भय, अशान्ति और नाना रोगों में ग्रसित हो जाती हैं।

(१३) आप अपनी प्रिय देवियों (बेटियों) को जबरन अपने घर से निकाल कर दूसरे के घर क्यों भेजते हैं? वह शादी करें या न करें, उनको आजादी देने में आपकी क्या हानि है?

(१४) हे ज्ञानवान् पिता-माताओ! आयु छोटी में ही देवियों की शादी करने के लिए उतावले हो जाना, उनकी इच्छा न होने पर भी जबरन शादी कर देना, देवियों के कारण खूब परेशानी तथा कलह, क्लेश, चिन्तामें रहना, शादी न होने पर दुखी, भयातुर होना सर्वथा अज्ञान है। यदि आप विवाह का परिणाम सुख समझते हो तो कमसे कम वर २५, वधू २० वर्ष की आयुसे कदापि कम न हो। इसके लिए कानून धारा की परम आवश्यकता है।

(१५) सीमित जातियों में ही विवाह-शादी करने की प्रथा होने से बहुत परेशानियाँ हो रही हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(१६) धनवान्, मान्यवान्, रूपवान् बालक-बालिकाओं के गुण, ज्ञान, भाव, आचरण कनिष्ठ होने पर भी उत्साह-प्रेम से शादी कर लेने के परिणाम में परिवार कलहमय तथा दुखी हो जाता है।

(१७) बालक-बालिकाओं के गुण, ज्ञान, भाव, आचरण एक समान या श्रेष्ठ होने पर भी जाति-भेद के भ्रमसे नीच-ऊँच समझकर विवाह न करना।

(१८) बहुत खाने एवं पहनने की इच्छा, तथा धनादि संग्रह का लोभ।

(१९) देवी-पुरुष सम्भोगही परमसुख है, परिणाम—शारीरिक-मानसिक महारोग तथा आत्मशक्ति का ह्रास।

(२०) अधिक से अधिक पशुवत् संतान।

(२१) अधिक गर्मीयुक्त पदार्थ भक्षण—शराब, मांस, नकली घी, खट्टा, मिर्च, चाय, काफी, भांग, गांजा, लहसुन, प्याज, शलगम, बैगन, करेला, पान, सुपारी, तम्बाकू, सिगरेट, रसायन, औषधि, सरसों का तेल तथा तेल-घी से तले हुये और भूने हुए मिठाई, अन्नआदि को सुख-बुद्धिसे सेवन करनेकी आदत का परिणाम—दुःख, रोग, अशान्ति और हार्दिक ज्ञान-शक्ति का ह्रास।

(२२) अधिक सोना, कर्तव्य कर्मों में आलस्य, तास, चौपड़, खेल, तमाशा, हंसी-मज़ाक, संगीत आदि प्रमाद कर्मों में प्रवृत्ति।

(२३) झूठ, कपट, चोरी, डकैती, ब्लैक, सट्टा, जुआ, रिश्वत, पगड़ी (मकान मालिकों की लूट) आदि हिंसाजनक पर-दुःखदायक पापमय आचरणों की जोरों से वृद्धि।

...NA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. ... 220...
CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(२४) हे धर्मध्वजी-साधू-सन्यासी कहलाने वालो ! तुम जाति-वर्णाश्रम के अज्ञानजनित अहंकार तथा भिक्षा-पण्डा-वृत्तिका त्यागकरो और खेती आदि यथायोग्य कार्यों में प्रवृत्तहोकर स्वावलम्बी-उद्योगी-कर्मठ बन जाओ अन्यथा विश्व युद्ध-बमवर्षा होने वाली है। न्यायकारी ईश्वर सब के हृदय के भावों को प्रत्यक्ष जानने वाला है। याद करो ! इस्लामी शासन तथा जिन्नाह की जल्लादी को !

(२५) हे धन संग्रही प्रेमियों ! दम्भ, धोके और निशाचर आचरणों के कारण भारतमें अन्न-वस्त्र की कमीहो रही है, यह ईश्वर पिता का कोप-दण्ड है। यदि अबभी आप लोग सोने-चांदी को अलमारियों में ही रक्खोगे तो विदेशों से अन्न कैसे आ सकेगा ? आपको ज्ञान हैकि हमारी सरकार को अंग्रेजी सरकार ने धन का कोष प्रदान नहीं किया।

प्रजारक्षक प्रेमी हमारे सुख साधनार्थ अन्न-वस्त्रादि पदार्थों से हमारी सेवा करते हैं, बदले में हम उन्हें ब्रिटेन सरकार के जाली सिक्के—नोट प्रदान करते हैं, जो भारत की सीमा के बाहर चल नहीं सकते। यह गम्भीरता पूर्वक विचारनेका समय है कि आप लोगों के पास धन-राशि विद्यमान रहते हुए भी यदि भारतवासी भूखे, नंगे रहें, तो ॐ श्री दण्डदायक प्रभु पिता की कानून धारा में आप कृपण, निर्दयी, पापी, हिंसक ही ठहरे। अतः नोटोंकी तो होली करो और जिन देवी-पुरुषोंके पास जो भी सोना, चांदी, हीरा, ज्वाहरात हैं उसे भारत भगवान् की सेवार्थ सरकारको प्रदान करें। इससे आपके पापों का प्रायश्चित हो जायगा। तनसे सेवा, सादगीमय जीवन, मन से ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवन्नाम महामंत्र

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

की रटन करो, सम्पूर्ण संकट शान्त हो जाएंगे; अन्यथा डाकुओं के आक्रमण और अन्न, वस्त्रके अभावमें घोर हाहाकार मच जायगा। जापान पर ऐटम वर्षा, वर्मा-पाकिस्तान की धन-राशि एवं जयदाद की बरबादी तथा हिटलर के अहंकार का सर्वनाश इत्यादि में ईश्वर के न्यायदण्डकी स्मृति आपको है ही। कुछ समयके लिए आप आजाद हैं, अतः जैसे आपकी इच्छा हो वैसे ही करें।

(२६) श्री सन्तज्ञान-मर्यादाकी स्थापना करने से उपरोक्त नाना प्रकार के महादुःख, अशान्ति, कलह तथा अज्ञानपूर्ण आचरणों का अतिशीघ्र नाशहो जाएगा। सब कर्मठ, उद्योगी, सादगी परायण तथा परस्पर प्रेम-प्रसन्नता पूर्वक रहेंगे। आवश्यकतानुसार वर्षा होगी। अन्न, साग, फल, दूध, घी. वस्त्र आदि की कमी नहीं रहेगी अन्यथा महाघोर दुःख बढ़ता ही जायगा।

(२७) हे सर्वत्र सुख-शान्ति इच्छुक प्रेमी देवी-पुरुषो! जिन पर फौजदारी का मुकद्दमा लगाहै उन्हें दिन-रात दुःख, चिंता, भय रहता है। यदि आपको भी किसी प्रकार का दुःख चिंता, भय हो रहा है तो समझ लें कि आपने ईश्वर पिताकी मर्यादा भंग की है, और यह न्यायकारी प्रभुका ही दण्ड है। आपसे मेरी सविनय प्रार्थना है कि आप ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्रकी हर समय हरएक कार्य करते हुए रटन करें। यह महामंत्र महापुरुष ॐ श्री योगिराज आनन्दमय जी महाराज का योगसिद्ध है। इस दिव्य मंत्र को रटनेसे आपके सम्पूर्ण दुःखों का नाश होकर सुख-शान्ति की क्रमशः वृद्धि होती जायगी।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ॐ श्री महापुरुष भगवान् का समागम करनेका यथा-शक्ति प्रयत्न करें तथा श्री आपका ज्ञानामृत ग्रन्थ 'विश्वशान्ति' का प्रतिदिन स्वाध्याय करें।

ईश्वर-कोप-दण्ड

भारत के दम्भी-पाखण्डियों की स्वार्थ मर्यादा का फल

(१) वर्षा समय पर न होना, कम होना, अधिक होना, बे समय पर होना।

(२) बाढ़, ओलें, चूहे (मूसे), टिड्डीदल आदि कीटों से फसलका नष्ट होना।

(३) वायु वेग (आंधी), अधिक गर्मी, अधिक शीत, भूकम्प, बिजली अग्निकाँड आदिसे अनेक तरहकी हानि।

(४) प्लेग, हैजा, तपेदिक, टाईफाईड, इन्फ्जूएन्ज़ा, मलेरिया आदि अनेक बीमारियोंका आक्रमण।

(५) शेर, भेड़िया, कुत्ता, सर्प, बिच्छू तथा नाना विषैले कीट-कीटाणुओं के आक्रमण द्वारा दण्ड।

(६) रुई, अन्न आदि की फसल कम होना (काश्तकार अशिक्षित)।

(७) दूध-घी, साग, फल, मेवा आदि सात्त्विक पदार्थोंका ह्रास।

(८) जड़ी, बूटी आदि औषध-ज्ञानका नाश।

(९) गाय, भैंस, बकरी आदिका वध।

(१०) परस्पर कलह-क्लेशसे पाकिस्तान हिन्दुस्तान तथा अनेकों देशोंमें हाहाकार, दीन दशा और जर्मन, जापान, आदि देशों का नष्ट-भ्रष्ट हो जाना।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(११) कलह, क्लेश, मारपीट, झगड़ा, मुकद्मेबाजी, संग्राम ।

(१२) राक्षसी विद्या—अनेक भयानक अस्त्र-शस्त्र जैसे हाईड्रोजन, एटम, राकेट बम्ब, गोले, गैस आदि तमोगुणी शक्तियों का ज्ञान दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है ।

(१३) आसुरी विद्या-ऐश—आराम, शौकीनी-सजावट विषयक साईंस ज्ञान का प्राकट्य ।

(१४) अन्न, धन, वस्त्र आदि आर्थिक कष्ट ।

(१५) जेल, जुर्माना, सम्पति निलाम तथा समाजका कब्जा और फांसी इत्यादि से दण्ड ।

(१६) दुःख, चिन्ता, भय, क्रोध, उद्वेग ।

(१७) इन्द्रिय चंचल, मन अशान्त ।

(१८) आयु कम होना ।

(१९) मानसिक व्याकुलतासे कष्ट ।

(२०) टुंडा, लूला लंगड़ा, काना, बहरा, अन्धा, गूंगा तथा नाक, कान आदि अंगहीन हो जाना ।

(२१) आवश्यक नींद का न आना तथा स्वप्नोंमें भी अनेक प्रकारसे दुःख ।

(२२) भयानक रोग, डाक्टरों द्वारा भयंकर आपरेशन और कड़ी दवाइयोंका प्रयोग ।

(२३) बूढ़े-बूढ़ियोंको श्वास, खाँसी, दमा इत्यादि ।

उपरोक्त दण्ड देते हुए भी न्यायकारी प्रभु आपको आपके दुर्गुण-दुराचारों के बारे में हर समय चेता रहे हैं । याद रक्खो । जन्मान्तर में भी इस जीवको नाना योनियों द्वारा दण्ड मिलता ही रहेगा ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

श्री प्रभु मर्यादा का फल ध्यान

प्रश्न—सुनते हैं कि ध्यान तो एकान्त में लगता है किन्तु हम लोग जब बैठते हैं तो भूत, भविष्य, वर्तमान के अनन्त संकल्प विकल्प प्रकट होने से मन परेशान होकर नेत्रों को खुला देता है और शरीर भी प्रायः डगमगाता रहता है, अथवा नींद घेर लेती है। परन्तु आप लोग जब चाहते हो तब ही नेत्र बन्द कर कई घंटों मूर्तिवत् ध्यानावस्थित हो जाते हो। इस कार्य में दम्भ-हठ होना तो असम्भव है। कृपथा इस विषय पर कुछ प्रकाश डालिए।

उत्तर—ॐ श्री महापुरुष भगवान् के अनुकूल चलने से मन एकाग्र, चित्त स्थिर, शान्त ध्यानमग्न हो जाता है। जैसे तमोगुण का आचरण निद्रा एकान्त में अथवा समय पर ढोल, नगारे, बाजे बजने पर भी आ जाती है ऐसे ही सत्त्वगुण का आचरण ध्यान ॐ श्री सन्त भगवान् के प्रभाव से एकांत में अथवा लोकान्त में भी लग जाता है। जो कोई भी देवी-पुरुष श्री महापुरुष देव का प्रसाद—ईश्वर मर्यादा पालन करना स्वीकार करेगा उस दिन से ही उसका मन सदा-सर्वदा शान्त और आनन्द में मग्न रहेगा और कैसा ही देश काल क्यों न हो वह जब चाहे खड़े बैठे ध्यानावस्थित हो जाएगा।

निद्रा की शांति तो ॐ श्री दयालु प्रभु अपने महा-द्रोही को भी प्रदान करते हैं किंतु ध्यान-शांति तो श्री प्रभु मर्यादा को पालन करने वाले अपने प्रेमियों को ही प्रदान करते हैं। आप योग सिद्ध ॐ आनन्दमय ॐ शांतिमय महामंत्र का जप तथा ईश्वर मर्यादा के ज्ञान से पूर्ण विश्व-शांति ज्ञानग्रन्थ का

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

पठन करिए और ॐ श्री महापुरुष भगवान् के सन्मुख एक सप्ताह एक दो घन्टा प्रति दिन बैठिए, आप भी ध्याना· वस्थित हो जाएँगे। आपके अन्दर ही सुख, शांति, आनन्द, उत्तम २ ज्ञान, प्रभाव प्रकट होगा तथा और क्या २ अनुभव होगा वाणी-लेखनी से प्रकट नहीं हो सकता, वह अनिर्वचनीय है।

प्रण

पालन करने योग्य धर्म

(१) हे परम पिता परमात्मा देव ! श्री आप सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापी, सर्वाधार, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी, दयालु, प्रेमी, अनन्त, अपार, असीम, निर्विकार, नित्य एक ही स्वरूप हो। मैं श्री आपकी मर्यादा पालन करूँगा।

(२) हे भगवान् ! मैं जीवित सन्त-पदयुक्त देवी-पुरुषों की द्वादश भक्ति करूँगा और कराऊँगा।

(३) हे भगवान् ! मेरा विश्व-शांति, गीता शास्त्र पर ही दृढ़ श्रद्धा-विश्वास है।

(४) हे भगवान् ! मैं सब मनुष्यों की एक ही जाति समझूँगा

(५) हे भगवान् ! मैं श्री महापुरुषों में श्रद्धा, प्रेम, विश्वास कर सेवा, स्मरण, आज्ञापालन करूँगा।

(६) हे भगवान् ! मैं दम्भी-पाखण्डी देवी-पुरुषों की निन्दा तथा उनके लिये दण्ड विधान की आयोजना करता रहूँगा !

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(७) हे भगवान् ! मैं अपना तथा दूसरों का गुण, कर्म, भाव, ज्ञान जैसा-का-तैसा ही प्रकट करूँगा।

(८) हे भगवान् ! मैं दम्भ और धोके के भावों का त्याग करके, अपनी योग्यता को परहित भाव से प्रकट करूँगा।

(९) हे भगवान् ! मैं योग्यता अनुसार विश्व की सेवार्थ कार्य-कर्म करता हुआ सदा कर्मठ रहूँगा।

(१०) हे भगवान् ! मैं ॐ श्री गुरु-ज्ञान को ही तैरने की नौका—तीर्थ मानूँगा।

(११) हे भगवान् ! मैं अपना अनुभव कहने वाले का ज्ञान प्रेम पूर्वक सुनूँगा।

(१२) हे भगवान् ! धन आदि पदार्थों का श्री महापुरुष भगवान् की आज्ञा से विश्व-शांति ग्रन्थ प्रचारार्थ व्यय करूँगा।

(१३) हे भगवान् ! मैं ईश्वर तथा जीवित महात्मा के सिवाय सम्पूर्ण नकल धर्मों में भेड़ चाल युक्त अंध-श्रद्धा का त्याग करूँगा।

(१४) हे भगवान् ! मैं दैवी सम्पदावान ध्यानस्थ देवी-पुरुषों से प्रेम करूँगा।

(१५) हे भगवान् ! मैं ध्यान-समाधि रहित देवी-पुरुषों का व्याख्यान सुनने की आदत का त्याग करूँगा।

(१६) हे भगवान् ! मैं गुण, ज्ञान, आनन्द, प्रभाव तथा मोक्ष के लिये संयम, सेवा, सादगी, सत्यपुरुषों का संग, जप, ध्यान, प्रार्थना, स्वाध्याय तथा भगवत् भाव से सम्पूर्ण सात्त्विक कर्म ही करूंगा।

(१७) हे भगवान् ! मैं देवियों के धर्म-कर्म अलग, पुरुषों के

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

धर्म-कर्म अलग ऐसी गलत मान्यता की व्याख्या नहीं करूँगा।

(१८) हे भगवान् ! मैं दम्भी-पाखन्डियों के धर्माचरण में अमूल्य समय व्यर्थ नहीं खोऊंगा।

(१९) हे भगवान् ! मैं अनुभव रहित उपदेश नहीं करूँगा !

(२०) हे भगवान् ! मैं गुणातीत होने से पहिले मान, बड़ाई, पूजा, प्रतिष्ठा के भाव का त्याग करूँगा !

(२१) हे भगवान् ! मैं गुण, ज्ञान, शांति, आनन्द, प्रभाववान् समाधिस्थ देवी-पुरुषों के चित्र-फोटो का दर्शन, तथा स्मरण (ध्यान) करूँगा।

(२२) हे भगवान् ! मैं गुणातीत, सत्त्वगुणी तथा असमर्थ जीवित शरीरों की सेवा में अन्न, धन, वस्त्र का व्यय करूँगा।

(२३) हे भगवान् ! मैं देख, सुन, पढ़ कर अनुष्ठान युक्त अपने अनुभव को ही प्रकट करूँगा।

(२४) हे भगवान् ! मैं अबला, स्त्री, नारी, पड़दे की रानी नहीं, मैं ॐ आनन्दमय का अंश ॐ आनन्दमय स्वरूप ही हूँ।

(२५) हे भगवान् ! मैं ब्रह्मचारिणी रह कर आत्म प्रभाव, ईश्वर पद, आनन्ददायक धर्म—सेवा, स्मरण (ध्यान) का पालन करूँगी और कराऊँगी।

(२६) हे भगवान् मैं रङ्ग-बिरङ्गे वस्त्र-आभूषण युक्त राजसी चित्र-फोटो का दर्शन नहीं करूँगा।

(२७) हे भगवान् ! मैं परम पद की प्राप्ति के लिये सात्त्विक इन्द्रिय भोग ही करूँगा।

(२८) हे भगवन भगवत्-लाभ तो शुद्ध भावों से होता है,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

रागनी भाषा तो इन्द्रिय का विषय है।

(२९) हे भगवान् ! मैं मुफ्तखोरी, भिक्षा वृत्ति की आदत का त्याग करूँगा !

(३०) हे भगवान् ! मैं समय परिस्थिति के अनुसार सस्ता, ताजा, सात्विक आहार करूँगा।

(३१) हे भगवान् ! शरीर छूटने के बाद कर्मों के अनुसार श्री आपकी न्याय शक्ति से पुनः किसी एक योनि से संबन्ध होता है।

(३२) हे भगवान् ! मैं श्री आपका ही प्रेमी पुत्र होने से महान् भाग्यशाली हूँ।

(३३) हे भगवान् ! वृक्षोंको खाद और जल देना उनकी पुजा है।

(३४) हे भगवान् ! मैं धर्म के नाम पर पशु की बली तथा खाद्य पदार्थों को अग्नि में हवन नहीं करूँगा।

(३५) पढ़ गया चार वेद; छः शास्त्र, अठारह पुराण, जैनधर्म ग्रन्थ साहिब, कुरान, बाईबल और भगवद्गीता;
बिना महापुरुष ध्यान के रह गया रीता का रीता।

उपरोक्त मानव कर्तव्य,नकली असली मर्यादा का ज्ञान ॐ श्री मर्यादा पुरुषोत्तम संत श्री आनन्दमय भगवान् की अहेतुक कृपा से आन्तरिक आनन्द, जप, ध्यान से हुआ !

सत्त्व गुण के लक्षणों में ध्यान प्रधान लक्षण है। ईश्वर-मर्यादा को पालन करने वाले श्री संत प्रेमी देवी-पुरुषों को श्री प्रभु ध्यान गुण प्रदान करते हैं। ईश्वर प्रेमी की चपरास(सार्टी-फिकेट) ध्यान है। परन्तु याद रक्खो ! प्राण वायु को रोककर जमीन के गड्डे की जड़ समाधि शांति, संतोष, समता, प्रेम,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ज्ञान रहित, ईश्वर अमान्य, मिथ्या है। ईश्वर द्रोही की चपरास है— मन इन्द्रियों की चंचलता, परेशानी, क्रोध, अशांति !

यदि आपके मन की एकाग्रता नहीं हुई अर्थात् ध्यान नहीं लगा तो समझ लें कि आप केवल शास्त्र कण्ठस्थ कर नकली धर्मों को पालन करने वाले हैं और दम्भी महात्माओं के प्रेमी हैं।

हे भगवत् प्रिय प्रेमियों तथा भक्तिमति देवियो ! आपसे मेरी सविनय प्रार्थना है कि इस अमूल्य ग्रन्थ के नियमों का नित्य पाठ करें; योगसिद्ध ईश्वर मान्य ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय दिव्य मन्त्र का अर्थ भावना सहित जप जाग्रत अवस्था में हर समय करें तथा यथा-शक्ति नेत्र बंद करके ॐ आनन्दमय भगवान् की दिव्य फोटो पर मन लगाएँ। प्रथम मास में ही आपके मन की चंचलता, क्रोध, उद्वेग आदि का नाश तथा शान्ति, प्रसन्नता, ज्ञान, सुख का प्रत्यक्ष अनुभव होगा। श्री संत आनन्दमय जी महाराज का प्रसाद— अमृतज्ञान विश्व-शान्ति बालक-बालिकाओं को देकर आप सब सुखी हो जायेंगे। जितना अधिक विश्व-शान्ति ग्रन्थ का प्रचार करेंगे, उतना ही अधिक लाभ आपको तथा विश्व को होगा—यह मेरा अनुभव सत्य सत्य है। श्री आपका संग हुए दो वर्ष हुए हैं, श्री आपकी सेवा, ध्यान, आज्ञापालन से मुझे व अन्य २ प्रेमी धर्मात्मा देवी-पुरुषों को प्रतिदिन क्या-क्या आन्तरिक अनुभव हो रहा है और होगा, इस छोटे से लेख में कैसे वर्णन करूँ ! आप लोग अपने लाख काम तथा हानिभावों को छोड़कर अपने बालक-बालिकाओं सहित श्री आपका संग करें। श्री संत समागम से ही आपका भाग्य उदय होगा !

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

इससे अधिक आपकी सेवा में और क्या लिखूँ !

ॐ श्री आनन्दमय भगवान् की जय !

आपको श्री महापुरुष संग कराने का परम इच्छुक,

ध्यान प्रेमी निर्विकार (आनन्दमय)

सेवा योग यज्ञ

भगवत् पद प्राप्ति अर्थ श्रद्धा, प्रेम, उत्साह पूर्वक जीवित शरीरों की सेवा की क्रमशः सत्ताईस प्रक्रिया निम्नलिखित हैं।

(१) प्रेममय भगवत् दृष्टि।
(२) आदर सत्कार।
(३) आसन।
(४) प्रिय हितकारक वचन।
(५) जल।
(६) भोजन।
(७) अन्न।
(८) वस्त्र।
(९) धन।
(१०) भवन।
(११) जागीर।
(१२) औषध।
(१३) आश्वासन, सान्तवना (धैर्य)।
(१४) जन—मनुष्य (सेवक) पशु (गाय, भैंस आदि)
(१५) हिन्दी पढ़ाई।
(१६) सात्त्विक व्यवहार का ज्ञान।
(१७) तन—अपना शरीर
(१८) मान।
(१९) कीर्ति, बड़ाई।
(२०) प्रतिष्ठा।
(२१) ध्यान।
(२२) स्वरूपबोध—ज्ञान अपरोक्ष विज्ञान।
(२३) विशुद्ध आचरण (दिव्य कर्म)।
(२४) मन—सबका हितचिंतन
(२५) बुद्धि—विश्वशांति विचार
(२६) परमाणु (जैसे पुष्प से स्वाभाविक सुगन्धि)
(२७) सत्यशास्त्र

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सेवा का प्रयोग दर्शन

सेवा नं० १ से १५ तक श्रद्धा-मिश्रित राजस मनुष्यों द्वारा कारवाई जाती है।

सेवा नं० १६ से २१ तक के कर्म श्रद्धा, प्रेम, उत्साह पूर्वक सात्त्विक देवी-पुरुष करते हैं।

सेवा नं० २२ से २७ तक तत्त्वदर्शी महापुरुषों से विशुद्ध प्रेम युक्त होती है।

योग्य पात्र की सेवा प्रत्यक्ष में लाभदायक है

(क) सेवा नं० १ से २० तक समाधिस्थ गुणातीत महापुरुषों की करने से अतिशीघ्र सुख, शान्ति, गुण, ज्ञान, ध्यान, आनन्द, ईश्वर-पद की प्राप्ति होगी।

सावधान—वह महापुरुष गीता अ० २ श्लोक ५५ से ५६, १४। २२ से २५, १८। ४२ के अनुसार गुण, ज्ञान, भाव, आचरण प्रभावयुक्त होना चाहिए। ऐसा निर्द्वन्द्व, समतावान् परम पवित्र, परम श्रेष्ठ, विशुद्ध आत्म प्रेम प्राप्त महापुरुष किसी भी भेष, भाषा, देश, जाति का हो विश्व-शान्ति का ज्ञाता, सम्पूर्ण सुव्यवस्था, सुख, शान्ति, गुण, ज्ञान, ध्यान, आनन्द प्रभाव देने वाला सर्वमान्य है।

(ख) सेवा नं० १ से १९ तक सत्त्व गुण में स्थित ध्यानस्थ देवी पुरुषों की करने से ईश्वर आनन्द, गुण, ज्ञान, सुख का लाभ प्राप्त होगा।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

चेतावनी---वह धर्मात्मा (ध्यानस्थ) परम दयालु, परहित में रत, गीता अ० १२ श्लोक १३ से १९ के लक्षण, आचरण, ज्ञान, भाव युक्त किसी भी भेष, भाषा, जाति, देश का हो। गुणवान् देवी-पुरुष ही सनातन ईश्वर-मर्यादा तथा गीता शास्त्र मान्य श्रेष्ठ है।

(ग) सेवा नं० १ से १६ तक, आवश्यकता अनुसार का पात्र राजस देवी-पुरुष है।

देखिए---ऐसे मनुष्यों के भाव, कर्म तथा अन्न, धन, भवन आदि का संग्रह सत्यता पूर्वक युक्ति-युक्त हो और वह स्वयं कर्मठ हो एवं विपत्तिकाल में भी सेवा ग्रहण करने में उसका हृदय दुःखी हो।

(घ) सेवा नं० १ (प्रेममय भगवत् दृष्टि) के पात्र तामस मनुष्य हैं।

तामस देवी-पुरुषों के भाव-आचरण झूठ, कपट, चोरी, जारी, क्रोध, वैर, हिंसा, अति सोना, आलस्य, प्रमाद, दम्भ, पाखण्ड तथा धोकेयुक्त होते हैं। अतः ऐसे दुष्ट मनुष्यों को दण्ड देना तथा निगरानी के साथ कार्य-कर्मों में लगाए रखना ही इन की सेवा समझें।

(ङ) सेवा नं० १ से १४ के पात्र रोगी, दुखी, गरीब, असमर्थ, पीड़ित देवी-पुरुष हैं। संकट के समय में गुण, ज्ञान, आचरणों पर दृष्टि न करें।

(च) सेवा नं० १ से २० तक योग्य पात्रों की अपनी २ शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता अनुसार करने से महान् लाभ, न करने से महान् हानि होती है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(छ) निर्दयी, मोटे-ताजे अकर्मण्य, तामसी मनुष्यों की सेवा करना अकर्तव्य, पाप है। क्रोधी, क्रूर, प्रमादी, धोके-परायण और दम्भी-पाखण्डियों की सेवा से कर्त्ता को पाप का भाग मिलेगा। ऐसे लोगों को बैठाकर उनकी पालना करते रहने से प्रजा को हर प्रकार से पाप दबा लेता है, वर्तमान में यह हालत प्रत्यक्ष ही है। इन लोगों को हर हालत में कार्य में लगाने की ही चेष्टा हो। याद रक्खो—बूढ़े, असमर्थ माता पिता नीच प्रकृति के होने पर भी सेवा करना कर्तव्य है।

प्रश्न—क्या तामस देवी पुरुष स्वतः परहित सेवा नहीं करते ?

उत्तर—नहीं! उन लोगों में ईश्वर, महापुरुष, गीता शास्त्र, आवागमन, पुण्य-पाप के फलस्वरूप सुख, दुःख आदि पर श्रद्धा-विश्वास नहीं होता; अतः दूसरों का बुरा करना आदि अवगुणों की ही अधिकता रहती है। इसलिए तामस मनुष्य स्वतः सेवा नहीं करते; उन लोगों से भय, दण्ड, ताड़ना द्वारा करवाई जातीहैं। अश्रद्धालु को आन्तरिक सुख, शान्ति, आनन्द का लाभ नहीं मिलता। गुण-हीन देवी-पुरुषों को जाति, वर्णाश्रम से ही श्रेष्ठ मानना अज्ञान, भ्रम-मात्र है।

प्रश्न—क्या तामस देवी-पुरुषों का स्वभाव नहीं बदल सकता ?

उत्तर—भगवत्-पद प्राप्त ध्यान-समाधिस्थ देवी-पुरुषों के अधिक संग, सेवा से पापों का नाश होकर श्रद्धा उत्पन्न होने से बदल जाता है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रश्न—भगवत् पद प्राप्त महापुरुषों के साथ अनुचित व्यवहार करने से क्या होता है ?

उत्तर—जैसे उत्तम व्यवहार का फल ध्यान-समाधि, अक्षय सुख—भगवत् पद है; ऐसे ही अनुचित व्यवहार से जीवित अवस्था में ही अत्यन्त दुःख और मृत्यु के बाद नीच योनियों की प्राप्ति होती है।

सेवा नं० १ से २७ तक का पूर्णतया आदर्श दर्शन, प्रायः पैंतालीस वर्ष से, विश्वहितैषी श्री सत्यमहापुरुष ॐ श्री जयदयाल जी भगवान् प्रत्यक्ष हैं।

सेवा नं० २१ से नीचा कार्य श्री भगवत् पद प्राप्त महापुरुषों से करवाने से विश्व में आसुरी सम्पदा बढ़कर पतन होता रहता है। सेवा नं० १६ सात्त्विक व्यवहार का ज्ञान अवश्य लेना चाहिए।

समाज सुधार

आज़ाद भारत में निम्नलिखित समाज सुधार अवश्य हो।

(१) कोई भी अन्नहीन-भूखा तथा वस्त्रहीन-नङ्गा न रहे।
(२) बालक-बालिकाएँ हिन्दी शिक्षा के अभाव में मूर्ख न रहें।
(३) क्लिष्ट संस्कृत भाषा की रटन व्यर्थ समझकर त्याग करें।
(४) अकर्मण्य-निकम्मा-हरामखोर कोई न रहे।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(५) ठग, चक्रान्तिकार, धोकेबाज, भिक्षु, दम्भी, पाखण्डी एक भी न रहे। कड़े कानून तथा दण्डनीति का प्रयोग हो।

(६) अन्न, वस्त्र, धन, भवन, जमीन आदि पर व्यक्तिगत कब्जा न रहे (सीमित ममता-बुद्धि से संग्रह करना हिंसा है)।

(७) अन्न, साग-सब्जी, फल, रूई आदि की खेती अधिक से अधिक हो तथा नदियों, नहरों, कूओं से खेतों में जल सिंचाई का प्रबन्ध हो।

(८) पशुओं में गाय, भैंस, बैल, भेंड़, बकरी, ऊँट, गधा, घोड़ा, खच्चर आदि का पालन अधिक संख्या में हो (कुत्ते, बन्दर, बिल्ली, सुअर, पक्षी आदि आततायी और अनिष्टकारी प्राणियों का त्याग)।

(९) तम्बाकू, चाय, गांजा, भाँग, अफीम, लाल मिर्च, लहसुन, प्याज, शलगम, बैंगन, पान, सुपारी आदि अनिष्टकारी पदार्थों की फसल बन्द हो तथा शराब, नक़ली घी और बीड़ी-सिगरेट के कारखाने सर्वथा बन्द हों।

(१०) व्यापार के नाम पर ठगी, हिंसा तथा जुआ (सट्टा-फाटका) बन्द हो।

(११) सम्पूर्ण मनुष्यों की एक ही जाति है अतः स्वार्थ-अज्ञान-जनित ऊंचनीच जाति भेद, देवियों पर दबाव तथा परदा प्रथा न रहे।

(१२) सब मनुष्य कर्मठ, स्वावलम्बी, कम खर्चीले, सादगी परायण हों।

(१३) ब्रह्मचर्य का पालन, सन्तान (आबादी) कम हो। सन्तानों से सुख के भ्रम में दुःख ही होता है जितनी अधिक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सन्तान होगी उतना ही अधिक दुःख माता-पिता को होगा तथा आबादी जितनी अधिक बढ़ेगी उतनीही कलह, ईर्ष्या, अहंकार आदि बीमारियों की वृद्धि होगी अतः सन्तान ईश्वर का पुरस्कार नहीं अपितु दण्ड विधान है।

(१४) बालक-बालिकाओं की शादी (सुख के भ्रम में परिणाम दुःख) जरूरी नहीं है। युवक, युवती अपनी आजादी से प्रेम तथा गुण, कर्म, ज्ञान की एकता से शादी कर सकते हैं। स्वभाव की एकता होने से कलह नहीं होगी।

(१५) दहेज प्रथा तथा शादी में देवपूजा दान-दक्षिणा आदि की पद्धति बन्द कर दी जाए, वर-वधू परस्पर केवल पुष्प-माला से ही स्वागत करें। सोने, चाँदी, हीरे, मोती आदि के गहनों को हथकड़ी-बेड़ियाँ, जान की जोखिम समझें। धन राशि को अलमारी में रखना मूर्खता तथा हिंसा है।

(१६) अशिक्षित वैद्य, डाक्टर तथा हकीमों से बहुत हानि हो रही है अतः शीघ्र शिक्षा, परीक्षा तथा रजिस्ट्रेशन की व्यवस्था हो।

(१७) स्वआचरण रहित अनुभव शून्य दम्भियों का उपदेश बन्द हो।

(१८) सम्पूर्ण मनुष्यों पर समान मित्र-बन्धु भाव तथा मनुष्य उपयोगी पशुओं के प्रति दया और प्रेम भाव हो।

(१९) मनुष्यों की परीक्षाकी व्यवस्था वोटों द्वारा न होकर गुण, कर्म, ज्ञान, भाव से हो।

(२०) सोलह साल से अधिक आयु वाले बालक बालिकाओं पर माता, पिता, अध्यापक, भाई बान्धव दण्ड-नीतिशासन का त्याग कर उनकी आजादी से प्रेम का व्यवहार ही करें। अन्यथा दुःख, चिन्ता, भय, अशान्ति, निन्दा, अपमान

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

होगा। परिणाम-हित भाव से अपराधी को दण्ड दिलाना निषेध नहीं।।

(२१) जन्म-मृत्यु के समय दान, दक्षिणा, भोजन आदि के निमित्त से किंचित् भी धन व्यय न करें।

(२२) विवाह में बराती दो से पाँच तक आवें तथा एक रात्रि से अधिक निवास न करें।

(२३) होली, दिवाली आदि पर्व तिथियों को आडम्बर समझ कर त्याग करें।

(२४) महीन, रेशमी वस्त्र तथा आभूषणों का त्याग करें। विलासिता, शौकीनी, सजावट की वस्तुओं का विदेशों से आना तथा यहाँ तैयार होना बन्द हो।

(२५) सिनेमा-थियेटरों से अज्ञान, चंचलता, उच्छृंखलता, अशान्ति, प्रमाद बढ़ रहा है।

(२६) ताम्बा, पीतल, कलई, एलमोनियम, निक्कल, जिस्त के बर्तनों में भोजन बनाना, भोजन खाना तथा पानी रखना निषेध है क्योंकि इनमें से ऐसा विष निकलता है जो स्वास्थ्य और दिमागके लिए हानिकारकहै अतः मिट्टी, चीनीमिट्टी, पत्थर, प्लास्टिक, शीशा, स्टेन लेस स्टील (लोहा) के पात्र उत्तम है।

(२७) मशीनरी-कल-कारखाने जितने अधिक बढ़ेंगे उतनी ही बेकारी, अकर्मण्यता, प्रमाद, अज्ञान, अशान्ति, हिंसा बढ़ेगी।

(२८) धन का ब्याज-सूद लेना हिंसा है।

(२९) धन कर्ज का मुकदमा दिवानी अदालत बन्द हो।

(३०) अपने नामका अधिक धन होने से अहङ्कार, भोग, बेकारी, पाप, हिंसा, प्रमाद, दुःख बढ़ता है। अतः नोट-करेन्सी कम करदी जाये।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(३१) सोने-चाँदी का मूल्य कम कर दिया जाये ।

(३२) अन्न, धन, वस्त्र, भवन, जमीन, आदि पदार्थों को अधिक मात्रा में एकत्र करके मार्केट में अभाव कर पुनः अधिक दामों पर बेचने की इच्छा करना भाग्यवान के लक्षण तथा प्रारब्ध नहीं है अपितु अन्याय, निर्दयता, अत्यन्त दीनता, धोकेबाजी तथा हिंसा है ।

(३३) खाद्य पदार्थोंमें मिलावट करने तथा नकली बनाने वालों पर कड़ी निगरानी सहित सजा की धारा हो ।

(३४) देवी-पुरुषोंका समान अधिकार हो ।

(३५) प्रजातन्त्र राज्य में सभी परम पिता ईश्वर की सम्पत्ति का यथायोग्य प्रेमपूर्वक भोग करें ।

(३६) देश, जाति, भेष, भाषासे रोटी, पानी, बेटी आदि की अज्ञान पूर्ण छुआ-छूत, घृणा-द्वेषका नाश करें ।

(३७) दुर्जन देवी-पुरुष, बालक-बालिकाओं के कनिष्ट आचरण, गुण, ज्ञान, भावोंसे छुआछूत अर्थात् वैराग्य करें किन्तु शरीर से नहीं जैसे डाक्टर हैजा, प्लेग आदिके कीटाणुओं से करते हैं किन्तु रोगियों से नहीं । सद्‌गुण सदाचारी ध्यानस्थ देवी-पुरुषों से प्रेम करना परमलाभदायक है ।

(३८) दम्भी-पाखण्डी महाराक्षसों के उपदेश, आचरणोंसे ही भारत तथा विश्व के अन्य लोग महाघोर दुखी, अशान्त, कर्तव्य ज्ञान-रहित, बेईमान, भूखे हुये हैं अतः श्रेष्ठ, मध्य, कनिष्ठ गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों की परीक्षाका प्रबन्ध अतिशीघ्र हो अन्यथा आपके बालक-बालिकायें पशु-पक्षियों से भी अधिक अधोगामी हो रहे हैं ।

(३९) ब्रह्मविद्या-विश्वविद्यालय की स्थापना कर ईश्वरीय गुण, ज्ञान, भाव, आचरण, आत्मप्रभावकी शिक्षा-परीक्षा का प्रबन्ध करें ।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(४०) दर्शन, श्रवण, कथन आदि इन्द्रियों का विषय जितना अधिक होता है उतनी ही चंचलता, अशान्ति, प्रमाद, अज्ञान बढ़ता है अतः शहर तथा ग्रामों में घर खुले और दूर-दूर के फासिले पर हों (जैसे पाश्चात्य देशवासियों के)।

(४१) धर्मध्वजी लोगों ने कुम्भ, संक्रान्ति, सोमावती, अमावस पूर्णिमा, एकादशी आदि पर्व-तिथियों का माहात्म्य लिख-लिख गा-गा कर तीर्थ-मेले के नाम से नदी-स्थानोंपर अड्डे बना रक्खे हैं। इन पर्वमहात्म्यों को सुनकर भारत के अन्ध श्रद्धालु लोग भेड़-चाल के सदृश एकत्रहो जाते हैं। परिणाम में परेशानी तथा तन, धन, मन, ज्ञान, शक्ति का ह्रास होता है। सब से बड़ी हानि तो यह होती है कि राष्ट्र द्रोही पाखण्डी लोग प्रजा को भड़का देते हैं जिससे राष्ट्र की उन्नति में बहुत ही बाधा आ रही है अतः मेला प्रथा सर्वथा बन्द हो।

(४२) देवी-पुरुषों की शक्ति तथा ज्ञानमें कोई अन्तर नहीं केवल शारीरिक चिह्न तथा सन्तान-यन्त्र में भेद है।

देवियों और पुरुषों के धर्म दो नहीं हैं। शक्ति, पद, गुण, ज्ञान, भाव तथा आचरण तो संग के प्रभाव से मनुष्य मात्र के ही परिवर्तन शील हैं। यदि समान ज्ञान तथा शक्ति नहीं तो वर्तमान काल में सरोजनी नायडू गवर्नर, विजयलक्ष्मी राजदूत, राजकुमारी अमृतकौर मंत्रिणी केन्द्रीय सरकार पद पर और हजारों ही डाक्टरी, वकालत आदि गुण-कर्म, ज्ञान, पद युक्त प्रत्यक्ष में कैसे हैं? किन्तु भारत की अधिकांश देवियां तो अज्ञानियों की मर्यादा से प्रतन्त्रता में प्रत्यक्ष ही दुःख, चिंता, अशान्ति, कलह-कलेश तथा रोगों में ग्रसित हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(४३) सब मनुष्यों की एक ही जाति है। जन्म से जाति श्रेष्ठ या कनिष्ठ—यह बड़ा भारी भ्रम जाल फैला हुआ है। इसी से सारा विश्व गारत हुआ है।

(४४) दम्भी-पाखण्डी देवी-पुरुषों की निंदा तथा उनके लिये दण्ड विधान को आयोजना हो। रंग-बिरंगे भेस, जटाधारी, कंगले भिक्षुक, संयम-सेवा-स्मरण के त्यागी, विषयानुरागी, कामी, क्रोधी, तामस (महाराक्षस) दम्भी-पाखण्डी-नकली साधु-संन्यासी विश्व के भार रूप हैं; कानून के द्वारा इनके प्रमाद संन्यास धर्म को खतम करना तथा इनको खेती आदि कार्यों में लगाना इनकी सेवा है।

(४५) सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापी, न्यायकारी ईश्वर के नाम मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' के जप को जाग्रत अवस्था में एक क्षण भी न भूलें।

उपरोक्त परिवर्तनमें प्रारब्ध बाधकनहीं अपितु परमात्मा पूर्ण समर्थक है। नाम मंत्र हृदय से चालू रहेगा तो उपरोक्त मर्यादा की व्यवस्था स्वाभाविक प्रेम पूर्वक होगी अन्यथा दण्ड-भय-नीति से होगी। जन्म-मृत्यु, लाभ-हानि में प्रभु की मंगल कृपा समझकर सदा सर्वदा हर्ष-शोक रहित प्रसन्न रहो।

हे धर्मध्वजी प्रेमियों! आपके दम्भाचरण, ज्ञान, भावसे ही भारत अन्य देशों की अपेक्षा ज्ञानहीन, कलहमय, भयातुर महादुखी, भूखा है अतः दम्भ-पाखण्ड को त्याग कर श्री कृष्ण भगवान् के आदेश (पृष्ट ७६ से ८१) के अनुसार गुण, ज्ञान, भाव, आचरणयुक्त ब्राह्मण पद को प्राप्त कर विश्व को सुखी, ज्ञानवान् बनाओ अन्यथा ईश्वर कोप, कानून-दण्ड-विधान, कम्यूनिस्ट ज्ञान तथा महासंग्राम आ रहा है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रजा रक्षक प्रेमी हमारे सुख साधनार्थ अन्न, वस्त्र आदि पदार्थों से आपकी सेवा करते हैं। बदले में आप उन्हें ब्रिटेन सरकार के जाली सिक्के-नोट प्रदान करते हैं जो भारत की सीमा के परे चल नहीं सकते। यह गम्भीरता पूर्वक विचार करने का समय है कि आप लोगों के पास धन-राशि विद्यमान रहते हुए भी यदि भारतवासी भूखे-नंगे रहें तो ॐ श्री दण्ड दायक प्रभु पिता की कानून धारा में आप कृपण, निर्दयी, पापी, हिंसक ठहरे। इस हिंसा के कारण ही आज आपको दुःख, चिंता, भय तथा परेशानियाँ हो रही हैं। अतः आप नोटों की तो होली करो और जिन देवी-पुरुषों के पास जो भी सोना,चांदी,हीरे, जवाहरात है उन्हें भारत भगवान् की सेवार्थ सरकार को प्रदान करें। इससे आपके पाप का प्रायश्चित हो जायगा। याद रक्खो! श्री प्रभु रचित तन को अकर्मण्य निकम्मा रखना एवं धन आदि पदार्थों पर अपना अधिकार करना आपकी सर्वथा अनाधिकार चेष्टा है! तन से सेवाकर्म, मन से ॐ आनन्दमय ॐ शान्ति मय भगवन्नाम मंत्र की रटन करो, सम्पूर्ण सङ्कट नाश हो जाएगें।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ध्यान द्वारा प्राप्त आनन्द-शक्ति-ज्ञान से समाज सुधार

प्रश्न—ध्यान करना श्रेष्ठ है या समाज सुधार सेवा कार्य करना ?

उत्तर—शारीरिक शक्ति एवं ज्ञान, की वृद्धि तथा रक्षा के लिए जैसे नींद, भोजन, जल आदि की आवश्यकता है ऐसे ही उससे भी अधिक यानी परम आवश्यकता है जप, ध्यान करने की। सात्त्विक अन्न-जल से रक्त, मांस, वीर्य बढ़ कर शरीर में शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। नींद द्वारा देखना, सुनना. बोलना, पढ़ना लिखना आदि दिन भरके नाना कर्मोंके कारण हुई हृदय की चंचलता, अशान्ति एवं शरीर तथा मस्तक की थकावट दूर हो जाती है। पुनः जागने के साथ ही, न चाहते हुए भी, आयु भर के कर्मों का ज्ञान हृदय में प्रकट होने लग जाता है। इसी कारण नवीन कार्य करने में असमर्थता होती है किन्तु जप, ध्यान करने से पिछले प्रमाद संकल्प विकल्प शान्त होकर शान्ति, आनन्द, मनकी एकाग्रता, शरीर में फुरती उत्साह एवं प्रेम, प्रसन्नता बनी रहती है और बुद्धि (दिमाग़) भी ठीक कार्य करती है। श्री प्रभु की कृपा, प्रेम, न्यायकारिता का प्रत्यक्ष अनुभव होता रहता है कि कैसे ज्ञान, शक्ति, आनन्द प्रदान करते हैं और कैसे दण्ड देते हैं।

जैसे अन्न, जल के ग्रहण-त्याग करने की विधि हैं ऐसे ही सद्गुणों को ग्रहण करने तथा दुर्गुणों को त्याग करने की शिक्षा अनुभवी पुरुषों से प्राप्त करने की परमावश्यकता है।

रोग की निवृत्ति के लिए जैसे औषध की आवश्यकता है

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ऐसे ही मानसिक रोगों की निवृत्ति के लिए भी जप, ध्यान, प्रार्थना से गुणों को धारण करने की परमावश्यकता है।

हमारे तीन शरीर हैं—स्थूल सूक्ष्म और कारण। इनमें स्थूल शरीर का आहार है अन्न-जल, सूक्ष्म का जप-ध्यान और कारण का निद्रा। इन तीनों शरीरों को अपना-अपना आहार देने से सम्पूर्ण शक्ति, ज्ञान ठीक रहता है।

जप-ध्यान करने से समाज का कार्य सीमित ममता-बुद्धि पक्षपात तथा धन संग्रह की इच्छा के त्याग पूर्वक कर्तव्य-बुद्धि से होता है। अन्न-वस्त्र आदि की सादगी रहती है। हम लोग प्रायः चार छः घन्टे शयन; छः घन्टे जप, ध्यान, प्रार्थना, स्वाध्याय, सत्संग, चार-पाँच घन्टा शौच, स्नान, व्यायाम, भ्रमण आदि शारीरिक कर्म; आठ घण्टा पर-शरीरों की सेवा तथा समाज सुधार का कार्य प्रेम उत्साह से करते हैं।

जब तक आप ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जप आरम्भ नहीं करते तब तक आपका ध्यान नहीं लगेगा; बिना जप-ध्यान किए श्री संत भगवान् से क्या लाभ होता है यह भी आपकी समझ में आना असम्भव है।

हमारे अन्दर ही श्री प्रभु पिता का रक्खा हुआ सुख, शान्ति, आनन्द, ज्ञान, प्रभाव का अमूल्य कोषहै किन्तु हमें प्राप्त नहीं हो रहा था अतः उस अल्मारी की चाबी श्री संत आनन्दमय भगवान् से प्राप्त की है।

श्री प्रभु-शक्ति-ज्ञान—के आश्रय से हम लोग आजीवन समाजसुधार सेवा कार्य करने को तैयार हैं तथा जो भी देवी-पुरुष हमारा संग करेगा वह भी तन, मन, धन, ज्ञान, शक्ति से समाज को पूर्ण सहयोग देगा। हम लोग समाज सुधार के लिए ही श्री प्रभु से ज्ञान, शक्ति, आनन्द प्राप्तकर रहे हैं।

———

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ब्राह्मण पद

ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः।

जिन भगवत् प्रेमियों ने तत्त्वदर्शी महात्माओं का सङ्ग, सेवा, स्मरण, आज्ञा पालन, भक्ति कर, कर्मयोग-ध्यानयोग द्वारा समाधिस्थ होकर सम्पूर्ण गुण, ज्ञान, आनन्द, आत्म प्रभाव का अनुभव कर लिया है, ऐसे पूर्ण निष्ठावान, भगवत् पद प्राप्त महापुरुषों का टाइटल ब्राह्मण है। जिनको ईश्वर से सर्वभूतहित, सुख, शान्ति, मर्यादा स्थापन करने का आधिपत्य (चार्ज) मिला हो और सम्पूर्ण मनुष्यों को ईश्वर श्रद्धामय, सादगी, सेवा, स्मरण (ध्यान) परायण करने को जिनकी स्वाभाविक ही चेष्टा हो तथा जिनकी द्वादश भक्ति आरम्भ करते ही सुख, शान्ति, ध्यान, आनन्द का अनुभव होने लगे ऐसे देवी-पुरुष ही ब्राह्मण कहलाने के पात्र हैं। ब्राह्मण पद इंचार्ज महापुरुषोंके लक्षण (गुण, ज्ञान, भाव, आचरण) गीता अध्याय १८ श्लोक ४२ के अनुसार होते हैं—

शमो दमस्तपः शौचं क्षांतिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्॥

शमः—कर्मयोग,-ध्यानयोगका अभ्यास करते-करते जब बिना कष्ट के, आनन्दपूर्वक ईश्वर शक्ति के प्रयोग से शरीरइन्द्रिय बिना हिले-जुले, नेत्र बन्द, पलक शांत, मन विक्षेप, निद्रा, आलस्य रहित छः आठ घन्टा लगातार स्थिर आसन से आत्मास्मरण परायण समाधिस्थ-ध्यानावस्थित बैठसकें तथा दिन रात के चौबीस घन्टों में से १६ घन्टे सुखपूर्वक ध्यानावस्थित रहनेका सहज स्वभाव हो एवं व्यवहार कालमें भी मन-बुद्धि के साथ नाना अनुकूल-प्रतिकूल संघर्षण होते रहने पर भी हर्ष

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ईश्वर पदाधीश

श्री ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष श्री स्वामी योगिराज
आनन्दमय जी महाराज

ॐ ब्रह्म सहित श्री आपके स्मरण (ध्यान) से मुझे सर्वोत्तम शांति, गुण, ज्ञान आत्मप्रभाव प्राप्त हो रहा है। आप भी भव करें।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शोक रहित, समचित, निर्द्वन्द्व, निर्विकार रहे तथा नित्य आत्मानन्द, विलक्षण अलौकिक शांति सदा-सर्वदा बनी रहे और अपना स्वरूप ज्ञान—अनन्त, अपार, असीम, समष्टि चेतन ब्रह्म में एकाकार, अभेद, विदेह—हो जाए तब समझना चाहिए कि 'शमः' गुण का अनुभव हुआ है।

दमः—इन्द्रियदमन—कान, उपस्थ (ब्रह्मचर्य), नेत्र, त्वचा, जिह्वा, नाक और वाणी इन सात इंद्रियों पर विजय (कन्ट्रोल) इन्द्रियाँ पूर्ण रूपसे निग्रहीत और विषयोंके रसास्वादसे रहित हो जायं अर्थात् मिथ्या मनोकल्पित स्वर्गादि तक के समस्त दर्शन, श्रवणआदि भोगोंकी तृष्णा और आसक्तिका अत्यन्त अभावहो जाय; सम्पूर्ण इन्द्रियों से जगत के नाना अनुकूल-प्रतिकूल प्राणी, पदार्थ, भोगों से संयोग-वियोग होने पर भी इच्छा, द्वेष, क्रोध आदि विकार न हों; स्वभाव सर्वथा कामनाशून्य सन्तोषमय हो जाय तथा इंद्रियाँ हर समय ईश्वर परायण कर्म, भाव, ज्ञानयुक्त रहें, तब समझना चाहिये कि 'दमः' गुण को अनुभव-सिद्धि प्राप्त हुई है।

तपः—अपने स्थूल-सूक्ष्म शरीर, सम्पूर्ण प्राणी-पदार्थों को विश्व के अर्पण करदेना—निष्काम सेवाभाव से भगवत्-मर्यादा-प्रचार में लगा देना; 'तू तेरा' 'मैं मेरा' भाव से रहित विशुद्ध प्रेम युक्त, दयालु, न्यायकारी स्वभाव; भोग सामग्रियों में सीमित ममता-बुद्धि का त्याग; सादगी परायण जीवन तथा कोई भी ऊंच-नीच कार्य प्राप्त होने पर राग-द्वेष रहित प्रवृत्त हो जाना। उपरोक्त आचरण उत्साह, प्रेम, शांति, श्रद्धापूर्वक स्वाभाविक होने लगे तब समझना चाहिए कि 'तपः' गुण का अनुभव हुआ है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

शौचम्—हृदय का दुःख, चिन्ता, भय, राग-द्वेष,हर्ष-शोक, ममत्व-अहङ्कार, मोह-मत्सर,उद्विग्नता-व्याकुलता, संताप,दम्भाचरण, धोका, झूठ, कपट, चोरी आदि नाना कलुषित, पापमय भावों से रहित अर्थात पूर्ण रूप से निर्मल परिशुद्ध हो जाना—'प्रसन्नात्मा न शोचित न कांक्षति'; शरीर, वस्त्र, स्थान सादा स्वच्छ तथा शरीर की समस्त चेष्टाओं का निष्काम भाव से होना, ऐसे गुण-आचरण स्वभाव से हों तब समझें कि 'शौचम्' सिद्धि प्राप्त हुई है।

क्षमा—ध्यान करने वाला सत्वगुणी साधक क्रोध को सहन करने में समर्थ हैं, किन्तु गुणातीत ब्राह्मण का हृदय नाना संघर्षण होते हुये भी सदा-सर्वदा सम शान्त रहता है। अपने पास दण्ड देने की शक्ति रहते हुए भी, बड़े से बड़ा अपराध करने वाले को भी दण्ड देने का भाव नहीं होता; उसके अपराध को अपराध ही नहीं मानता। याद रक्खो! महापुरुषों तथा धर्मात्माओं को दुःख पहुँचाने वाले ब्रह्महत्यारों को समष्टि ईश्वर से प्रत्यक्ष में तथा जन्मांतर में महादण्ड मिलता ही है किन्तु महापुरुषों की शरण होते ही अपराधी के सम्पूर्ण अपराध क्षमा हो जाते हैं। उपर्युक्त भाव हो जाए तो समझो कि 'क्षमा' गुण के तत्त्व का ज्ञान हुआ है।

जगत का अनिष्ट करने वाले आततायी तथा दम्भियों को दण्ड देना निषेध नहीं बल्कि कर्तव्य है जैसे महात्मा श्री कृष्ण की आज्ञा के अनुसार आततायियों को मारना पाप नहीं, धर्म है।

आर्जवम्—मन, इन्द्रिय, शरीर की सरलता अर्थात मन में किसी प्रकार के दांव-पेच, अकड़, दुराग्रह, कुटिलता, वक्रता आदि दोषों का सर्वथा अभाव; जैसा मन का भाव हो वैसा

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ही इद्रियों द्वारा प्रकट करना; शरीर में भी किसी प्रकार की ऐंठ का न होना तथा अभिमान रहित कोमल, सरल स्वभाव। उपरोक्त लक्षण पूर्णतया घट जांय तब समझें कि 'आर्जवम्' गुण का अनुभव हुआ है।

ज्ञानम्—तीनों गुणों का ज्ञान।

तमोगुण के कार्य—निद्रा, आलस्य, प्रमाद, झूठ, कपट, चोरी, दुःख, चिन्ता, भय, कलह-क्लेश, अशांति, अभक्ष्य भक्षण आदि हिंसामय कर्मों का परिणाम—महादुःखमय जीवन।

रजोगुण के कार्य—धन, स्त्री, पति, पुत्र, इन्द्रिय भोग, ऐश-आराम, मान-बड़ाई आदि के संग्रह, सीमित ममता, आसक्ति, कामना, लोभ का परिणाम—चंचलता, अशांति, नाना रोग, दुःखमय जीवन।

सत्त्वगुण के कार्य—सत्य महापुरुषों का संग, सेवा, स्मरण, आज्ञापालन, जप, ध्यान, प्रार्थना, ध्यानस्थ देवी पुरुषों की सेवा, संयम, सादगी, धीरता, वीरता, सहनशीलता, प्रेम, प्रसन्नता, सन्तोष, शांति, समचित, श्रद्धा, उपेक्षा, आदि गुणों का परिणाम—सुखमय जीवन।

पृथ्वी से उत्पन्न तीनों गुण युक्त प्राणी (मनुष्य, पशु, पक्षी), बनस्पति (अन्न, फल, सबजी) तथा वस्त्र आदि पदार्थों को पूर्णतया जानकर यथायोग्य उपयोग में लेना; स्थूल, सूक्ष्म, कारण शरीर की उत्पत्ति, स्थिति, विनाश का पूर्ण ज्ञान; समस्त चराचर प्राणियों में अद्वितीय, अविनाशी, निर्विकार, ज्ञान स्वरूप परमात्मा को समभाव से व्याप्त देखना और स्वयं अपने को अविनाशी परमात्मा से अभिन्न, एकीभाव में स्थिति समझना; ब्रह्मसाक्षात्कार—परमात्मा-आत्मा का अपरोक्ष अनुभव, सर्वत्र आनन्दमय दर्शन। उपर्युक्तस्थूल-सूक्ष्मजड़-चेतन तत्त्वोंका

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अर्थात प्रकृति, जीव, ईश्वर का संशय रहित ज्ञान हृदय से ही हो जाय; तब समझें कि 'ज्ञानम्' सिद्धि की प्राप्ति हुई है।'

विज्ञानम्—आत्मा नित्य, चेतन; निर्विकार और अविनाशी है; इससे भिन्न नाशवान, जड़ विकारी और परिवर्त्तनशील स्थूल-सूक्ष्म (दृश्यमात्र) जो कुछ भी प्रतीत होता है वे सब अनात्मा है; आत्मा के साथ इनका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। अपने को संसार से सर्वथा असङ्ग, निर्विकार, नित्य और अनन्त समझ कर जन्म से अब तक किये हुये समस्त शुभाशुभ कर्म बन्धनसे सदाके लिए मुक्त होजाना। इस प्रकार आत्म-तत्त्व को भली भांति समझ लेना और चित्त में नित्य निरन्तर आत्मतत्त्वका चिन्तन होते रहना—ऐसा स्वभाव-सिद्धि अनुभव हो जाये तब समझना चाहिये कि 'विज्ञानम्' पद प्राप्त हुआ है।

आस्तिक्यम्—बुद्धिमें परमात्मा पर अटल प्रत्यक्ष विश्वास, परम आस्तिक स्वभाव अर्थात संपूर्ण कर्म-गुण, ज्ञान, भाव, आचरण श्रद्धा,प्रेम, उत्साहपूर्वक सात्त्विक हों तब समझे कि 'आस्तिक्यं' गुण सिद्धि प्राप्त हुई है।

ब्रह्मकर्म—मन, बुद्धि, इन्द्रिय, शरीरसे जो कुछ भी स्वाभाविक कर्म होता है, वह केवल समष्टिचेतन ब्रह्म की प्रेरणा से होता है। राजस, तामस प्रकृतिके देवी-पुरुष मनुष्य-कर्तव्य, शक्ति, ज्ञानसे अनभिज्ञ होने के कारण अपनी सन्तानों को भी कनिष्ट गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों की शिक्षा देकर उनका जीवन भी घोर दुःखी, अशान्त, अज्ञानमय बना देते हैं। ऐसे सांसारिक लोगोंको दुस्तर माया-जाल से निकाल कर ईश्वर-आनन्द-पद परायण करते रहना ही ब्रह्मवेताओंकी स्वाभाविक चेष्टा होती है। यही 'ब्रह्मकर्म' गुणतत्त्व का ज्ञान प्राप्त होना है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

स्वभावजम्—सम्पूर्ण कर्म फल—धन, मान,बड़ाई, प्रतिष्ठा, भोग कामना—के त्याग पूर्ण सीमित ममता, आसक्ति, कर्तापन के अभिमान, राग-द्वेष, हर्ष-शोक रहित हो तथा तीनों गुणोंके के कार्य—निद्रा, प्रवृत्ति, ध्यान में स्वाभाविक ही प्रवृत्ति होने पर न बुरा समझता हो तथा निवृत्ति होने पर न उनकी कामना ही करता हो, तब समझें कि 'स्वभावजम्' स्थिति प्राप्त हुई है।

एवं—जो देवी-पुरुष उपर्युक्त लक्षण, आचरण, ज्ञान, भावयुक्त हैं वह ही ब्रह्म-स्वरूप ईश्वर-युवराज हैं। शास्त्रों में इस परमपद- स्थिति- प्राप्त महापुरुषों को ही संत, ब्राह्मण, संन्यासी महात्मा, पण्डित, भगवान्, ब्रह्मवेत्ता, मर्यादा पुरुषोत्तम, महाराज आदि टाईटल दिए हैं।

सावधान—जिनमें उपर्युक्त स्वभाव, गुण, ज्ञान, प्रभाव की कमी है वे जप, ध्यान-समाधि करते ही रहें, जप-ध्यान तथा गुरुसंग की अवहेलना (त्याग) न करें। अन्तिम स्थिति होने पर ध्यान करने की कामना-आसक्ति नहीं रहती किन्तु लोक दर्शनार्थ समय-समय पर समाधि होती है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

संन्यासी शब्द का ज्ञान

व्यष्टि अहंभावके त्यागी, आत्मानन्दमय, संत-पद-युक्त आत्मवेत्ता, तत्त्वदर्शी ब्राह्मणका ही टाईटल संन्यासी है।

गीता प्रमाणित संन्यासी पदयुक्त महापुरुषके लक्षण—

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति।
निर्द्वन्द्वो ही महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ॥ ५।३

'जो पुरुष न आकांक्षा करता है, न द्वेष करता है, द्वन्द्वोंसे अतीत, मायाके बन्धन से सदा मुक्त; अक्षय सुख को प्राप्त है, उसी को संन्यासी समझो।'

भावार्थ—शरीर, इन्द्रिय और अन्तःकरणमें तीनों गुणोंके कार्यरूप निद्रा, प्रवृत्ति, ध्यान में प्रवृत्ति होने पर न तो दुःख, चिन्ता, भय, शोक आदि करता है, न आमोद-प्रमोदमय भावों से हर्षित ही होता है; तथा न निवृत्ति होने पर पुनः आगमन की आकांक्षा ही करता है। दोनों अवस्थाओं में उसकी स्थिति सदा एकसी रहती है। अनुकूल-प्रतिकूल, दर्शन, श्रवण, चितवन, भोग, रोग तथा प्राणी-पदार्थोंकी प्राप्ति में द्वन्दों से रहित, सम-चित, माया के बन्धन से मुक्त, अक्षय सुख, शान्ति, परमानन्द को प्राप्त है।

इन लक्षण-आचरणों का विस्तार गी० अ० १४।२२ से २५ में गुणातीत के नाम से है। अतः संन्यासी शब्द गुणातीत महापुरुष का ही वाचक है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

'नानुशोचन्ति पण्डिताः २।११, 'कामसंकल्पवर्जिताः ४।१९ 'सर्वसंङ्कल्पसंन्यासी' ६।४ 'पण्डिताः समदर्शिनः' ५।१८, 'अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ६।१

अर्थात् जिन महापुरुषों का लोक तथा ईश्वर पद प्राप्ति की सम्पूर्ण इच्छायें समाप्त हो गई हैं, ऐसे वीतराग, आत्मदर्शी देवी-पुरुषों को ही संन्यासी, पण्डित, महात्मा, ब्राह्मण आदि कहा है न कि लाल-काले वस्त्र, दण्ड कमण्डल, मुण्डन, जटा, तिलक, माला, छद्मभेषधारी, संस्कृत रटन मात्र से विद्वान, वाचाल मुफ्तखोर दम्भी भिक्षुओं को।

प्रश्न—उपरोक्त लक्षण आचरण युक्त महापुरुष के साथ कैसा व्यवहार करने से अति शीघ्र लाभ होगा ?

उत्तर—सम्पूर्ण इच्छाओं को त्यागकर ॐ श्री गुरु भगवान् की द्वादश भक्ति—दर्शन, भाषण, आचरण, सेवा, नमस्कार, समर्पण, मानसिक पूजा, नाम जप, स्वरूप ध्यान, प्रार्थना, गुण गायन, आज्ञापालन तथा श्रद्धा-प्रेम से ॐ श्री गुरु भगवान् के मनके अनुकूल मन, बुद्धि, इन्द्रिय, शरीर द्वारा निष्काम भावसे कर्म करने से दिन-प्रति-दिन गुण, ज्ञान, ध्यान, आनन्द, शांति सुख का अनुभव होता रहेगा।

सावधान याद रक्खो ! उपरोक्त गुण, ज्ञान, भाव, आचरण युक्त समझकर आपने ॐ श्री गुरु भगवान् की द्वादश भक्ति की, एक सप्ताह या एक महीने में आपको सुख, शान्ति, ध्यान आनन्द का लाभ होना आरम्भ नहीं हुआ तो समझें की गुरु

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

नकली, दम्भी, महाराक्षस, धूर्त है। उसका अति शीघ्र त्याग करें अन्यथा हानि होगी।

यज्ञ शब्द का ज्ञान

श्रद्धा-प्रेम युक्त ईश्वर परायण सात्त्विक भावों से मन, बुद्धि, इन्द्रिय, शरीर द्वारा किए हुए कर्मों का नाम ही यज्ञ है जैसे—

(१) विश्व-शांति, गीता तत्त्व विवेचनी ग्रंथों का स्वाध्याय।

(२) योगसिद्ध ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जप।

(३) ध्यानस्थ सद्गुण-सदाचारी देवी-पुरुषों से ज्ञान श्रवण।

(४) महात्मा-परमात्मा के स्वरूप पर धारणा, ध्यान (मन की एकाग्रता)।

(५) स्तुति, प्रार्थना, सद्भावों का चिंतन।

(६) चराचर को ॐश्री संत भाव से देखना।

(७) मानसिक संकल्पों में भगवत् भावना।

(८) नाना प्रकार के शब्दों को ॐ आनन्दमय ॐ शांतिमय मंत्र भाव से सुनना।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(९) वायु शुद्धि—रेचक, पूरक, कुम्भक प्राणायाम (कष्ट पूर्वक श्वास को रोकना अज्ञान है)।

(१०) इन्द्रिय संयम।

(११) वस्त्र, भोजन आदि में सादगी।

(१२) ॐ श्री गुरु तथा ध्यान समाधिस्थ देवी-पुरुषों की सेवा, नमस्कार, गुणगायन।

(१३) सर्वव्यापी ईश्वर के तत्त्व रहस्य को समझना।

(१४) ईश्वर रचना को देख देख कर आश्चर्य युक्त विचार करना।

(१५) पद-पद पर ॐ श्री संत-ईश्वर की दया-प्रेम का अनुभव करना।

(१६) अपने शरीर के भीतर और बाहिर कौन कार्य कर रहा है, उस अदृश शक्ति के प्रति बारबार विचार।

(१७) अपने ज्ञान एवं शक्ति के अनुसार नियत-स्वाभाविक कर्म, तथा भगवत् भाव से असमर्थों की सेवा।

(१८) अपने अनुभव के अनुसार ईश्वर, संत, भक्तों के गुण, ज्ञान, प्रभाव का प्रचार।

(१९) संसार, शरीर, प्राणी, पदार्थों में स्वप्नवत भावना।

(२०) हर्ष-शोक आदि वृत्तियों का अभाव; समता, प्रेम, प्रसन्नता, शांति, सन्तोष आदि गुणों में स्थिति (गुणों का विस्तार ज्ञानामृत में 'मनुष्यके लक्षण' पृष्ठ २६ से ३३ तक पढ़ें)।

उपरोक्त यज्ञ-कर्मों के फलस्वरूप ध्यान, समाधि, स्व-स्वरूप बोध, ईश्वर पद प्राप्त शांतिइन्चार्ज हो जाता है। मानव

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

कर्तव्य के ज्ञाता महात्मा श्री कृष्ण द्वारा प्रतिपादित सात्त्विक कर्म, आचरण, भाव का ज्ञान गी० अः ४ श्लोक २४ से ३३ तक में प्रमाणित है तथा यज्ञानां जप-यज्ञोऽस्मि १० । २५ 'सम्पूर्ण यज्ञों में जप-ध्यान सर्वश्रेष्ठ यज्ञ है ।

हे भगवान्! मैं उपरोक्त यज्ञधर्म का श्रद्धा, प्रेम, उत्साह पूर्वक पालन करूँगा (करूँगी) ।

दान शब्द का ज्ञान

अपने पास जो कुछ भी अन्न, धन, वस्त्र, भवन, औषध, जल, पुस्तक एवं ज्ञान आदि हो उसे ममता बुद्धि से परिग्रह न करके योग्य पात्र की सेवा में देते रहना दान है ।

(१) सर्वोत्तम दान है गुणातीत महापुरुष की सेवा ।

(२) दो नम्बर सत्त्वगुणी, ध्यानस्थ, सादगी परायण देवी-पुरुषों की सेवा ।

(३) तीन नम्बर गुणातीत व सत्त्वगुणी की आज्ञा से अथवा अपनी इच्छा से अग्नि, जल, अकाल, वायु, समाज, रोग

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आदि से पीड़ित तथा अंगहीन दुखियों की सेवा।

(४) चार नम्बर गाए-भैसों की गोशाला कुआँ, पाठशाला, औषधालय, तालाब, धर्मशाला, फल तथा औषध का बगीचा लगाने तथा नहर, रास्ता, सड़क, पुल आदि बनवाने की सेवा।

उपरोक्त सात्विक दान से इस जन्म में ही प्रत्यक्ष सुख शांति की प्राप्ति होती है। सेवा में जितना अधिक से अधिक निष्काम भाव होगा उतनी ही अधिक दामी समझी जाएगी इस भाव का भी त्याग करदे अर्थात त्याग भाव का भी त्याग कर दे और ऐसा भाव रक्खे कि प्रभु की वस्तु प्रभु के ही काम आ रही है; मेरा तो इसमें केवल नाम मात्र है; मेरा अहो भाग्य है जो प्रभु ने मेरी सेवा स्वीकार कर ली, मैं कृतार्थ हो गया! प्रेम, प्रसन्नता, हर्ष, आदर सत्कार तथा भगवत् बुद्धि ज्ञान-भाव से सेवा हो। इस प्रकार का दान ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय जप तथा महात्मा-परमात्मा के स्वरूप का स्मरण करते हुए करने से पूर्ण तथा सात्त्विक होगा।

करोड़ों मनुष्यों की सेवा सहायता से भी सद्गुण-सदाचारी ध्यानस्थ देवी या पुरुष एक ही की सेवा शुश्रूषा बढ़कर है।

इस तत्व-ज्ञान विश्व-शाँति ग्रन्थ के प्रचार रूपी ज्ञान-यज्ञ के सम्मुख सम्पूर्ण दान-सेवा गौण हैं। क्योंकि ईश्वर मर्यादा का ज्ञान होने से सदा के लिए सम्पूर्ण सुख तो श्री प्रभु कृपा से प्राप्त हो जाता है। दम्भी-पाखण्डी

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मुफ्तखोर को दान देना ऐसा है जैसे आम का बीज माली को न देकर बन्दर को देना।

ज्ञान—दान करने के उद्देश्य से धन उपार्जन करना ऐसा है जैसे पहले बदन पर कीचड़ लगाकर पुनः शुद्ध करने का प्रयत्न (उदाहरणार्थ सट्टा-फाटका प्रेमी 'दानवीर' अशांत जुगलकिशोर बिड़ला)।

हे भगवान्! उपरोक्त दान सेवाधर्म प्रत्यक्ष में सुख, शांति लाभ का देनेवाला है, मैं इसका यथाशक्ति पालन करूँगा (करूँगी)!

तप शब्द का ज्ञान

. शरीर इन्द्रिय सम्बन्धी तप—

(१) सद्गुण-सदाचारी, विश्व-शान्ति स्थापक, ध्यानस्थ गुणातीत-सत्त्वगुणी देवी-पुरुषों का संग, दर्शन, आदर-सत्कार, नमस्कार-प्रणाम, आज्ञापालन करना, उनके श्रेष्ठ आचरणों का इन्द्रिय, शरीर द्वारा अनुकरण करना तथा तन, धन से उन्हें सुख पहुँचाने की चेष्टा करते रहना।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(२) शरीर एवं वस्त्रोंको शौकीनी, सजावट रहित स्वच्छ रखना; अकड़, ऐंठ, वक्रता आदि दोषों से रहित शारीरिक सरलता;-किसी भी जीव को कष्ट न देकर सदा सुख देने का प्रयत्न करना; परहक का त्याग करते हुए उद्योग कार्य से जीविकाउपार्जन; आवश्यकता से अधिक देखने सुनने, बोलने, खाने, सूंघने का त्याग करते हुए शरीर को पर-हित-कार्य में लगाये रखना।

(३) वाणी द्वारा ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय योगसिद्ध महामंत्र का जप, विश्व-शान्ति, गीता, तत्त्वचिन्तामणि, तत्त्वविवेचनी, परमार्थ पत्रावली सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय और श्री ईश्वर, श्री संत तथा ध्यानस्थ देवी पुरुषों का गुण गायन करना; किसी की निन्दा न करना; (दम्भियों की निन्दा करना निषेध नहीं); कटुता, रूखापन, तीखापन, ताना, अपमान आदि दोषों से सर्वथा रहित, हित भरे, प्रेममय, मीठे, सरल, शान्त, अनुभवपूर्ण वचन कहना।

(४) सात्त्विक भोजन-आहार करना (पृष्ट १४ पर देखें)।

(५) ब्रह्मचर्य का पालन (देवी-पुरुष मैथुन का त्याग)

(६) नेत्रों द्वारा सब रूपों में सर्वत्र ॐ आनन्दमय भगवान् का दर्शन करते रहना।

(७) कानों द्वारा श्री महात्मा, परमात्मा तथा श्रेष्ठाचारी विश्वहितैषी, ईश्वर मर्य्यादा युक्त ध्यानस्थ देवी-पुरुषों के गुण, प्रभाव का श्रवण करना।

उपरोक्त सात्त्विक आचरण करना शरीर तथा इन्द्रियों का तप कहा जाता है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मन बुद्धि सम्बन्धी तप—

(८) दुःख, चिन्ता, भय, कलह-क्लेश, रूक्षता, क्रूरता, क्रोध, उद्वेग आदि महादुःख-अशान्तिदायक मानसिक रोगों की निवृति तथा मन की एकाग्रता, शान्ति, शीतलता, समता (समचित), आनन्द, प्रसन्नता का हर समय बने रहना।

(९) मन से ॐ श्री ईश्वर, श्री संत के स्वरूप का ध्यान तथा ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम मंत्र का जप।

(१०) बुद्धि द्वारा राजस, तामस दुर्भावों का त्याग कर सात्त्विक भावों को ग्रहण करते रहना। (सात्त्विक भाव पृष्ठ १५ से २५ तक देखें।)

(११) ॐ आनन्दमय भगवान् की कृपा का पद २ पर दर्शन-अनुभव करना।

(१२) ईश्वर, सत्य महापुरुष तथा धर्म तत्त्वज्ञ शुद्धाचारी ध्यानस्थ देवी-पुरुषों के गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों के प्रचार की शुभ भावना करना।

(१३) बुद्धि द्वारा ध्यानस्थ देवी-पुरुषों के गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों का समझना।

ज्ञान—उपरोक्त १३ सूत्रों में जो तप का वर्णन किया है वह केवल पुरुषों के लिए ही नहीं अपितु देवी, पुरुष, बालक, बालिका—मनुष्य मात्र के लिए परम आवश्यक है। तप और यज्ञ दो भिन्न-भिन्न शब्द होते हुए भी लक्षण आचरणों से भिन्न नहीं हैं (गीता अध्याय ४ श्लोक २४ से ३२ तक और अः १७ श्लोक १४ से १७ तक देखें।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

भाव से सर्वभूत हितेरताः, आचरण को जलचर, बनचर, नभचर प्राणियों की सेवा का त्याग ।

दम्भी-पाखण्डी कौन है?

प्रश्न—दम्भी किसको कहते हैं ?

उत्तर—जिन देवी-पुरुषों ने श्री तत्त्ववेत्ता, ईश्वर पदाधीश अध्यापकों के संग, सेवा, स्मरण-(ध्यान) द्वारा आत्मप्रभाव पद प्राप्त किए बिना, कुछ पुस्तक रटकर ही, अपने को संन्यासी गुरु, महात्मा, उपदेशक प्रसिद्धकर दियाहै तथा बिना अनुभव के ही सात्त्विक गुण, ज्ञान, भाव, आचरण, ईश्वर पद, आत्मज्ञान प्राप्ति का उपदेश, एवं मंत्र देना और स्वाचरण रहित पुस्तक, लेख लिखना आरम्भ कर दिया है, ऐसे ग्रामोफोन के सदृश वक्ता देवी-पुरुषों को ही दम्भी-पाखण्डी कहते हैं। दम्भियों के दर्शन, भाषण, ज्ञान, सेवा, मन्त्र से श्रोताओं के हृदय में किंचित भी मन की एकाग्रता, सुख, शान्ति नहीं होती, अपितु अमूल्य समय की बरबादी एवं नाना-गलत पाखण्ड संस्कारों की ही

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

वृद्धि होती है। उदाहरणार्थ लौकिक ज्ञान जैसे डाक्टरी, वैदिक की पढ़ाई किए बिना ही रोगियों को मनमानी दवाई देने से लाभ के बदले महाहानि होती है।

याद रक्खो! तोप का गोला हाथों से चलाने से काम नहीं करता किन्तु तोप के मुख से पूरा काम करता है ऐसे ही वर्तमान के स्वाचरण रहित दम्भियों का संग, सेवा, दर्शन, भाषण, ज्ञान, मंत्र काम नहीं करता। ऐसे धोकेबाज-महाराक्षस देवी-पुरुषों को ही शास्त्रों में दम्भी-पाखण्डी कहा है अतः दम्भी लोग महापापी से भी पापी हैं। पाप के जन्म दाता भी दम्भी पाखण्डी ही हैं।

प्रश्न—साधु,संत कौन हैं?

उत्तर—जो दिन-रात के चौबीस घण्टों में से बारह घन्टे सुख पूर्वक ध्यान-समाधिस्थ रह सकें वह देवी-पुरुष साधु पद प्राप्त हैं और जो अन्य मनुष्यों का ध्यान लगा दें वह देवी पुरुष संत पद प्राप्त हैं (साधु और संत (ज्ञानी) के लक्षणों अर्थात सद्गुण-सदाचार के ग्रहण और दुर्गुण-दुराचार के त्याग का विस्तार पृष्ट २६ से ३३ तक देखें)।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ब्रह्महत्या

प्राचीन समय में भारत ब्रह्मविद्या-ज्ञान का केन्द्र माना जाता था, किन्तु वर्तमान में इसके लक्षण-आचरण सर्वथा विपरीत हैं— आज भारत में दम्भी-पाखण्डियों को तो महात्मा, सच्चे महात्माको दम्भी–पाखण्डी, सद्गुण-सदाचारी ध्यानस्थ देवी-पुरुषों को मूढ़-पापात्मा और दुर्गुण-दुराचारी वाचालों को ज्ञानी-धर्मात्मा माना जारहा है। सबसे कनिष्ट महाराक्षस चाण्डाल दम्भी तो पूजे जाते हैं और पूजने योग्यों की निन्दा, अपमान, तिरस्कार किया जा रहा है। इससे अधिक ब्रह्महत्या और क्या होगी? बनावटी भेष, भाषा, जाति-वर्णाश्रम तथा नाना प्रकार के मजहब-धर्मों की स्थापना का ही यह प्रसाद है जो आज भारतवासी उत्तम, मध्यम, कनिष्ट गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों की परीक्षा रहित होगये हैं। इसी कारण करोड़ों की संख्या में लोग महात्मा-पण्डित बन बैठे हैं।

वकील, डाक्टर, अध्यापक या साधारण सिपाही पद प्राप्त कर लेने पर वह सर्वमान्य हो जाता है अर्थात् लोग उसको जिस पदवी का है ऐसा ही मान कर यथा योग्य व्यवहार करने लगते हैं किन्तु ईश्वर के सच्चे वकील, डाक्टर, अध्यापक सिपाही-महात्मा के प्रति विभिन्न भावों से विचार तथा व्यवहार करते हैं। इसो कारण भारतवासी हंस-बुद्धि रहित भेड़चालयुक्त होगए हैं। हंस-बुद्धि वही है जो असत्य का परित्याग करके सत्य का ग्रहण करती है।

सत्य-असत्य के ज्ञान का ह्रास होने के कारण विश्व में महान् ब्रह्महत्या तथा विधाता का विधान भी भंग हो रहा है

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

और महाराक्षसी दम्भ-पाखण्ड धर्म-मर्यादा को स्थापना हो गई है, जिसके भंवर-जाल में फंसे हुए भारतवासी गारत हो रहे हैं।

एक ही ब्रह्महत्या से सम्पूर्ण विश्व दुखी…!

जब चोर चोरी करने जाता है तो चाँद के प्रकाश से अपने इस लोभयुक्त कार्य में बाधा आती देखकर सोचता है कि सूर्य-चाँद को नष्ट कर दूं। यदि वह सूर्य, चाँद को नष्ट करदे तो स्वयं उसे गर्मी, प्रकाश, शीत के बिना महाकष्ट होगा ही और उसके साथ ही साथ प्रत्येक प्राणी—पशु, पक्षी, वृक्ष आदि को भी महान् कष्ट होगा। ऐसे ही अपनी अज्ञानता से सद्गुण-सदाचारी ध्यानस्थ देवी-पुरुषों को कष्ट पहुँचाने तथा उनके शरीर को नष्ट कर देने वाला स्वयं तो परम लाभ से वंचित रहकर ब्रह्महत्या महापाप से जन्म-जन्मान्तर में में महादुखी होगा ही उसके साथ ही सम्पूर्ण जीव दुखी हो जायेंगे। क्योंकि ईश्वर मर्य्यादा के ज्ञाता ध्यानयोगी अनुभवी देवी-पुरुषों के आचरण, भाषण, स्मरण से ही सब प्रकार से शान्ति, सुख, ज्ञान प्राप्त होता है।

याद रक्खो ब्रह्महत्या पांच प्रकार से होती है

(१) महापुरुषोंके उपदेश, आदेश, आज्ञा की अवहेलना करना। सावधान! ब्रह्मज्ञानी सत्य महापुरुष वह ही देवी-पुरुष हैं जिनके लक्षण, आचरण, गुण, ज्ञान, भाव गीता अध्याय १२ श्लोक १३ से १९, अः २ श्लोक ५५ से ५९; अः १४ श्लोक २२ से २५; अः१८ श्लोक ४२ के अनुसार हों।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

(२) धर्मात्मा ध्यानस्थ देवी-पुरुषों के आचरणों का मन, वाणी, शरीर से अनुकरण न करना।

(३) विश्व-हितैषी सद्गुण-सदाचारी देवी-पुरुषों की निन्दा करना; उनके दिव्य गुणों में दोष देखना।

(४) दैवी सम्पदावान के शरीर को बुद्धि, मन, वाणी, शरीर से कष्ट पहुँचाना।

(५) न्यायकारी दयालु पुरुषों के शरीर को बुद्धि, मन, वाणी, शरीर से शान्त कर देना; शान्त होने पर हर्षित-प्रसन्न होना; जैसे धर्मात्मा गांधी जी के साथ हुआ।

उपरोक्त ब्रह्महत्या के पाँच सूत्र पढ़ने में सुगम होते हुए भी इनका ज्ञान इतना गूढ़ है कि बारम्बार पठन-मनन से ही समझमें आ सकता है। आप गीता अ० १८ श्लोक ४२ के आदर्शपुरुष धर्मात्मा गांधी के गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों को पालन करते हैं या नहीं ? इस प्रकार अपने तथा विश्व का आदर्श कर के पढ़ने से ब्रह्महत्या आंशिक रूप से आपकी समझ में आ सकती है।

(क) सत्य वक्ता महात्मा गाँधी के आदर्श गुण, ज्ञान, मनुष्य मात्र के लिए हितमय होने पर भी कई धर्मध्वजी मुफ्त-खोर, दम्भी, धोकेबाज, प्रजा शोषक प्रेमी उनकी निन्दा करते हैं और झूठे दोष दिखाकर अनभिज्ञ प्रजा को भड़काते हैं। उन ईश्वर प्रेमी देशभक्त की निन्दा करने वाले चाहे अपने को महात्मा, दण्डी स्वामी, समाज सुधारक, देशभक्त प्रसिद्ध करते हों और करोड़ों ही

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

देवी-पुरुष उनकी वाणी से प्रभावित हो जाते हों, परन्तु उनके अन्तःकरण को मूढ़ महाराक्षसी ही समझो और सचेत साव-धान रहो! धीवर मांस के अन्दर कांटा लगाता है और पारधी अन्न के साथ जाल भी बिछाता है। मूढ़ मछली और पक्षी लोभ में आकर फंस जाते हैं। इसी प्रकार बगुले भक्त-पंडित-महात्माओं ने भारत को गारत किया है। यदि इनकी मीठी २ वाणी सुनकर इनको वोट देकर पदाधीश बना दिया तो अतिशीघ्र सर्वनाश कर देंगे!

शूरवीर, तेजस्वी, धीर, बुद्धिमान महात्मा गाँधी के शरीर को अस्त करने-कराने वाले महाराक्षसों ने सफाई पेश की थी कि हे भारत वासियो! आपके हित के लिए ही महात्मा गांधी को शूट किया है। उस ब्रह्महत्यारे की वाणी का करोड़ों मनुष्यों ने समर्थन भी किया, क्या उन लोगों की मनोकामना सिद्ध हुई? अपितु महात्मा गाँधी के बिना प्रजारक्षण के कार्य में परेशानी तथा बड़ी हानि हो रही है। विचार करो कितनी मूर्खता तथा ब्रह्महत्या दुष्ट-दण्ड-दायक ईश्वर पिता की न्याय-कारिता में हुई है।

(ख) ऋषिकेश स्वर्गाश्रम आदि स्थानों के दम्भी-पाखन्डी साधु, संन्यासी, महात्मा पन्डित कहलाने वाले प्रायः ३० वर्ष से श्री सत्य महापुरुष जयदयाल जी महाराज का निन्दा, अपमान कर रहेहैं और महाराक्षसी दम्भ पाखन्ड चक्रान्ति धर्म के प्रचारक लाखों महात्माओं की प्रशंसा करते हैं।

(ग) प्रत्यक्ष में अनुभव करो! श्री ईश्वर मान्य ब्राह्मण-संन्यासी पदयुक्त महापुरुष श्री योगिराज आनन्दमय जी महाराज का संग, सेवा, भक्ति करने वाले देवी-पुरुष तो सद्गुण-

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सदाचारी, ईश्वर-मर्यादा (दण्ड-पुरस्कार) के ज्ञाता, सब प्रकार से सुखी, शान्तिमान्, ध्यान-आनन्द में मग्न हैं और श्री आपके दिव्य गुणों में दोष दिखाने वाले दम्भी-पाखण्डी, मूढ़ लोग प्रत्यक्ष में दुःख, चिन्ता, भय, रोग परेशानी के समुद्र में गोता लगा रहे हैं।

याद रक्खो ! एक करोड़ राजस देवी-पुरुषोंका वध करने से भी अधिक पाप तथा विश्वमें हानि एक ध्यानस्थ सत्त्वगुणी के वध करने से होती है। एक हजार सत्त्वगुणी का वध और एक गुणातीत ध्यान करवाने वाले महापुरुष का वध करने के महापाप (ब्रह्मघात) से विश्व का सर्वनाश ही समझें।

महात्मा-परमात्मा ध्यान परायण सच्चे गुणवान देवी पुरुषों की निन्दा, अपमान, घृणा, द्वेष, वैर तथा दुःख पहुँचाने वाले जीवित अवस्था में ही घोर अशान्ति, आसुरी राक्षसी सम्पदा से पक कर दुःख, चिन्ता, भय, कलह क्लेश अशान्ति तथा नाना रोगों में ग्रसित होते हैं। ध्यान, शान्ति सन्तोष रहित ठगधर्मी मुफ्तखोर निन्दा के पात्र हैं।

याद रक्खो ! कीट, पतंग, सर्प, पक्षी, सियार, सुअर, कुत्ता आदि लाखों योनियों में भ्रमण करते २ अमूल्य मनुष्य शरीर मिला है, 'अतः अब सावधान............! दण्ड-दायक, न्यायकारी, दयालु, प्रेमी ईश्वर हमारे हृदय में है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

धर्म-शास्त्रों का मत

ॐ श्री महापुरुष श्रीयोगिराज आनन्दमयजी का सरकार और जनता के प्रति आदेश—

भारत सरकार (समाज) कानून द्वारा निम्नलिखित प्रबन्ध करे—

(१) भारत में कोई भी देवी, पुरुष, बालिका, बालक अकर्मण्य न रहकर अपनी शक्ति एवं ज्ञान के अनुसार कार्य करे यानी कर्मठ रहे। करने योग्य कार्यमें अवहेलना या आलस्य करने वाले को उस समय के भोजन से वंचित कर दिया जाय।

(२) अकर्मण्य, बदमाश, उदण्डता तथा पक्षपात करने वाले दम्भी-पाखण्डी एवं धोखेबाज देवियों व पुरुषों को विभिन्न प्रकार से कड़ी सजा दी जाए।

(३) २० वर्ष तक सन्तान की पैदायश (खेती) न हो ऐसी चेष्टा की जाय। जैसे भारत में पर-स्त्री एवं पर-पुरुष गमन को घृणा-लज्जाजनक बतलाया है ऐसे ही स्त्री-पुरुष सम्भोग-रमण पर घृणा एवं हानि की शिक्षा दी जाए। मनुष्यों की आबादी अधिक होने से अन्न,वस्त्र, भवन आदि पदार्थों की कमी एवं घर, ग्राम, देश में कलह, संग्राम की वृद्धि होती है।

(४) देवियों को समान अधिकार और पूर्णतया स्वतन्त्रता दी जाए तथा आदर पूर्वक उद्योग-धन्धे की सुव्यवस्था हो।

(५) भारत के उपासना (ध्यान-मनकी एकाग्रता) रहित दुर्गुण-दुराचारी,बूढ़े मनुष्यों का दिमाग चंचल—पागलके सदृशहै

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

अतः दिमागी कार्यों के लिए २०से४०वर्ष की अवस्था वाले सद्गुण-सदाचारी, शिक्षित, शान्त, प्रसन्नचित्त वाले पुरुषों और देवियों को नियुक्त करने से ही कार्य ठीक चलेगा।

(६) मनुष्यों का तन, धन, पदार्थ, भवन, जमीन आदि सर्वस्व सरकार (समाज) के स्वामिपने में रहे। आजादी से कर्म भोग, संग्रह करने से ही भारत गारत हुआ है अतः रुपये-पैसे का लेन-देन सर्वथा बन्द कर सम्पूर्ण मनुष्यों की भोजन, वस्त्रादि की व्यवस्था उनके ज्ञान एवं शक्ति के अनुसार समाज ही करे।

(७) कागजी धन (नोट) को रद्दी की टोकरी में गिराकर सोने-चांदी को सरकार अपने कब्जे में रक्खे। कोई भी देवी-पुरुष सोने-चांदी को शरीर पर धारण न करे। भारत की देवियों ने मूर्खता वश प्रायः पांच २ सेर तक की सोने-चांदी की हथकड़ी-बेड़ियों से शरीर को जकड़ रक्खा है। इन सोने, चांदी, जवाहरात से रेलगाड़ी के कई डिब्बे भर सकते हैं।

ऐसा प्रबन्ध करने से समाज की संपूर्ण बीमारियाँ जैसे धोकेबाजी, चोरी, डकैती, रिश्वत, ब्लैक, कपट सट्टा, जुआ, छीना-झपटी, संग्रह, प्रमाद, अकर्मण्यता, अधिक भोग आदि शान्त हो जाएगी। सामाजिक विप्लव शान्त होते ही दुःख, चिन्ता, भय, कामना, क्रोध, ईर्षा से उत्पन्न होने वाली मानसिक बीमारियाँ भी शान्त हो जाएंगी। शारीरिक रोग भी अधिकांश मनमाने कर्म तथा भोगों से ही होते हैं। सुव्यवस्था के परिणाम में प्रबन्ध होनेसे भोगोंके फल—रोग और शोक स्वतः बन्द हो जाएंगे और देश की मुकदमें

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

बाजियाँ भी समाप्त हो जायेंगी। भारत को गारत करने वाली महामारी, मुफतखोर धर्मध्वजियों की महाराक्षसी-दम्भ-पाखण्ड मय-नकली धर्म की मर्यादा, भी समाप्त हो जाएगी।

बेईमानी तथा महाबेईमानी (दम्भ-पाखण्ड) के समाप्त होते ही ॐ श्री सुख, शान्ति, शक्ति, ज्ञान, आनन्ददायक प्रभु आवश्यकता अनुसार ठीक समय पर वर्षा करेंगे।

ॐ श्री प्रभु कृपा से विश्व सेवार्थ हम ॐश्री ईश्वर की मर्यादा पालन करने वाले देवी-पुरुषों का एक आश्रम तैयार कर रहे हैं। सरकार (समाज) प्रथम एक ऐसा ही कम आबादी का आदर्श ग्राम बसाकर अनुभवकरे। आश्रम की देवियाँ व पुरुष हर प्रकार से आजीवन देश-सेवा-सहयोग देने को तैयार हैं।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मनुष्य ध्येय

(आनन्द की खेती)

(१) सादगीमय जीवन।

(२) सेवा कार्य प्रेम भाव पूर्वक परेच्छा से हो।

(३) सात्विक भावों से सात्विक इन्द्रिय-भोग।

(४) अन्न-वस्त्रादि पदार्थ एवं यश-मान परेच्छा से त्यागभाव-पूर्वक स्वीकार हों।

(५) ब्रह्मचर्य का पालन (सन्तानों से मनुष्य आजीवन दुखी, अशान्त, परेशान, रोगमय हो जाता है)।

(६) सीमित ममता, इच्छा, द्वेष, क्रोध, हर्ष, शोक तथा जाति, आश्रम आदि सब प्रकार के अहंकार का त्याग।

(७) सहनशीलता समता, विश्वप्रेम, प्रसन्नता, शान्ति, सन्तोष श्रद्धा, उपेक्षा आदि सद्‌गुणों में स्थित रहें।

(८) ॐ श्री सत्यमहापुरुष भगवान् तथा सद्‌गुण-सदाचारी ध्यान-समाधिस्थ देवी-पुरुषों का समागम हो।

(९) विश्व-हित भाव।

(१०) श्री भगवन्नाम योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐशान्ति-मय हर समय याद रहे। अन्यथा विपरीत भाव-आचरणों से दुःख अशान्ति की खेती बढ़ रही है।
ॐ श्री प्रभु पिता की दैवी सम्पदा रूपी अखण्ड सम्पति आपके अन्दर ही हैं।

आठ पदार्थ अन्दर माहीं।
ज्ञानहीन नर पावत नाहीं॥

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

आठ पदार्थ क्या हैं—सुख, शान्ति, गुण, ज्ञान, ध्यान, आनन्द, पद, प्रभाव। उपरोक्त गुण, ज्ञान, भाव, आचरण धारण करने से ही इनकी प्राप्ति होगी।

सूचना—भारत एवं विश्व की उन्नति कैसे हो इस विषय पर हमारे पास कर्मयोग-ध्यानयोग द्वारा अनुभव किया हुआ बहुत कुछ ज्ञान लिखा हुआ है जो प्रत्यक्ष लाभ दायक है।

वर्तमान के यथा महाराज (गुरु दम्भी-पाखण्डी) तथा राजा (भोगी-संग्रही) और प्रजा (धोखेबाज)!

प्राचीन काल में यथा महाराजा (गुरु श्री वसिष्ठ) तथा राजा (श्री राम) और प्रजा (अयोध्यावासी)।

मनुष्य का भाग्य (प्रारब्ध अर्थात् सब प्रकारके सुख-दुःख, लाभ-हानि) पूर्व जन्म का लिखा हुआ नहीं है। जन्म के पश्चात मृत्यु पर्यन्त स्वेच्छा, परेच्छा, ईश्वरेच्छा से जैसा संग होता है ऐसा ही मन बनता है, संग के अनुसार ही श्रद्धा होती है; श्रद्धासे कामना-आसक्ति की वृद्धि होती है, कामना-आसक्ति से पुरुषार्थ होता है और तदनुसार गुण, ज्ञान, भाव आचरणों में परिवर्तन होता रहता है। अतः मेरी सविनय प्रार्थना है कि ॐ श्री महापुरुष भगवान् के उपदेश-आदेशानुसार नकली धर्म तथा अज्ञान से गारत हुए भारत के स्कूल-कालेजों के बालक-बालिकाओं को देश सेवा एवं सरकारी कार्य के योग्य आत्मवीर, तेजस्वी, ज्ञानवान, विश्वपति बना लीजिए।

विनीत,

सम्पादक

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रश्न—दूर देशों के मनुष्य एवं पशु अधिक सुखी तथा ज्ञानवान् क्यों हैं ?

उत्तर—उन लोगों को ॐ श्री आनन्दमय ईश्वरपिता की वास्तविक मर्यादा का पूर्ण ज्ञान न होते हुए भी उत्तम व्यवहार तथा मन को एकाग्र करने का ज्ञान है। एकाग्रता (Meditation, concentration of mind) होने से हृदय के अनुरूप ही प्रेमी प्रभु उनकी बुद्धि में ज्ञान देते रहते हैं। मनकी एकाग्रता ही अमृत है और मन की चंचलता ही विष है। रूस राज्य की बाहरी मर्यादा उत्तम है, जो प्रायः धर्म शास्त्र के अनुसार है। उन देशों में महापापमय, महा राक्षसी, दम्भ-पाखण्डमय, नकली धर्म के अनुष्ठान तथा मर्यादा का तो अत्यन्त अभाव ही है।

उन देशों में झूठ, कपट, चोरी, डकैती, ईर्ष्या, वैर बेईमानी, अन्याय आदि दुर्गुण-दुराचारों की मात्रा कम है। वह लोग ज्ञान एवं शक्ति के अनुसार ऊँच-नीच कार्य करते हुए भी परस्पर में घृणा, द्वेष, छुआछूत न करके प्रेम करते हैं तथा देवियों पर भी दबाव नहीं है। दिवानी, फौजदारी के मुकद्दमे कम होते हैं। प्रजा आलस्य का त्याग कर कर्मठ रहती है। रहन-सहन, खान-पान का ज्ञान है। सन्तानों को पालन करने का भी बहुत उत्तम ज्ञान है। जलवायु का ज्ञान होने के कारण रहने के स्थान दूर-दूर एकान्त में हैं। गुण-आचरणों की मर्यादा का अधिक ज्ञान होनेके कारण सुखदायक ॐ शान्तिमय ईश्वर पिताने उन देशों की व्यवस्था भारत देश से अच्छी कर रक्खी है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

प्रेरणा

विश्व—शान्ति संसार के सम्पूर्ण धर्म ग्रंथों का सार—संक्षेप—सूत्र—बीज रूप है। मनुष्य कर्तव्य-अकर्तव्य के परिणाम सुख दुःख, ज्ञान-अज्ञान के ग्रहण-त्याग का भण्डार है। इस दिव्य ग्रंथ में सद्‌गुण-सदाचार, आत्म प्रभाव, परम भाव में स्थिति का मंडन तथा दुर्गुण-दुराचार का पूर्णतया खण्डन है। इसमें एक भी शब्द—भाव, गुण, ज्ञान—ऐसा नहीं जो स्व-आचरण तथा परिणाम सुख-दुःख के अनुभव रहित हो। दम्भ-पाखण्ड-महापाप के कारण प्रकाण्ड दावानल के सदृश जलते हुए भारत तथा विश्व को बचाने के लिये यह सत्य ज्ञान ईश्वर कृपा से प्रचलित भाषा में प्रकट हुआ है। धर्म तत्त्वज्ञ, श्रद्धालु, साधन सम्पन्न विश्वप्रेमी देवी-पुरुषों ने विश्वहितार्थ इन सुख, शान्ति, आनन्द, प्रभाव दायक गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों को प्रकाशित करने में अपना अमूल्य समय खर्च कर इस ग्रंथ के तैयार करने में हर प्रकार से सहयोग प्रदान किया है और आजीवन सर्वस्व देने के लिए तैयार हैं।

हे विचारवान प्रेमियों तथा श्रीमती देवियो ॐ आनन्दमय ध्यान आश्रम के श्रेष्ठ गुण, ज्ञान, भाव, आचरण युक्त ईश्वर मर्यादा के ज्ञाता, ध्यानस्थ देवी-पुरुषों का समागम कर मनुष्य जीवन पाने का महत्त्व तथा प्रत्यक्ष में सुख, शान्ति का अनुभव करो। इस ब्रह्मविद्या महाविद्यालय की शिक्षा पाकर आपके बालक बालिकाएँ क्याही वीर, धीर, बुद्धिमान,

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

विश्वप्रेमी होकर राज समाज के शासन कर्ता, सुधारक, उद्योगी, उजागर हो जाएँगे। इस महत् ज्ञानयज्ञ प्रचारार्थ सर्वोत्तम भाव तथा उदार हृदय से तन, मन, धन, वाणी, लेखनी से यथाशक्ति सहयोग प्रदान कर भारत को पुनः उत्थान करें।

हे धनी प्रेमियों! आप अपनी धन राशि का सदुपयोग तत्त्वज्ञान विश्व-शान्ति ज्ञानग्रन्थ प्रचार में करें; इसके समान सेवा-दान का महत्त्व दूसरा नहीं है। अतः स्कूल कालेजों के बालक बालिकाओं तथा देश-विदेश व्यक्ति २ के पास इस सत्यग्रंथ को पहुँचाने के लिये अतिशीघ्र सहयोग दीजिए।

हे ईश्वर-महात्मा श्रद्धालु आत्मा प्रिय देवी-पुरुषो! दम्भ पाखण्ड धर्म के ज्ञान, धोकेभाव तथा निशाचर आचरण से जलते हुए दुखी अशान्त, कलहमय अपने घर, ग्राम देश को इस अमृतज्ञान से सींच कर सुखी करिए! इस महत् ज्ञान-यज्ञ-प्रचार का फल आपको प्रत्यक्ष में सुख, शान्ति प्रेम, प्रसन्नता, यश, मान, धन आदि का लाभ प्राप्त होगा। क्या बिना सहयोग विश्व का परम उत्थान करने वाले इस न्याययुक्त असलधर्ममय अमृतज्ञान का प्रचार होना सम्भव है?

हे न्यायकारी, दयालु प्रेमी समाज सुधारक प्रजा रक्षको! दैवी सम्पदा के गुण, ज्ञान, भाव, आचरण क्या हैं और आसुरी-राक्षसी — महाराक्षसी सम्पदा क्या है इसका साङ्गोपांग वर्णन इस सूत्र ग्रंथ में किया है अतः विश्व में

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सात्त्विकता का विकास और तामसता का नाश करना आपका मुख्य कर्तव्य है जैसे महात्मा श्री कृष्ण, धर्मात्मा बलराम, युधिष्ठर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव तथा श्री राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, हनुमान, सुग्रीव, अङ्गद, आदि ने किया।

प्रश्न—धर्मात्मा किनको कहते हैं ?

उत्तर—जो देवी-पुरुष ॐ आनन्दमय ईश्वर-पिता की मर्यादा पालन करते हैं।

प्रश्न—ईश्वर मर्यादा क्या है ?

उत्तर—उत्तम गुणों में स्थित रहना (उत्तम गुणों का विस्तार। पृष्ट २६ से ३३ तक पर 'मनुष्य के लक्षण' में पढ़ें)।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सूचना

सम्पूर्ण धर्मों का एक ही मत पाया—

(१) प्रभु स्मरण ।

(२) सादगी परायण जीवन ।

(३) भाव तथा आचरणों से जीवमात्र का हित ।

(४) गुणों में स्थिति ।

किन्तु स्वार्थी लोगों ने देश, जाति, आश्रम भेद से अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए भिन्न २ मार्ग बतला कर कलह का वृक्ष लगा रखा है। ईश्वर, अल्ला, गांड आदि शब्दों में तो केवल भाषा का अन्तर है। वास्तव में रचयिता न्यायकारी प्रभु अनेक नहीं हैं।

व्यायाम, आसन, प्राणायाम, जप, ध्यान और कर्तव्य भाव ज्ञान की विधि हमसे समझ कर करने से अतिशीघ्र ही आन्तरिक चिकित्सा, शान्ति, सुख, गुण, ज्ञान, भगवत् लाभ होगा तथा आपका ध्यान लगना सम्भव है।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

ध्यान द्वारा प्राप्त परम आनन्द, ज्ञान,प्रभाव की महिमा गीता तत्त्वविवेचनी (गीता प्रेस, गोरखपुर) अ: ६ श्लोक ११ से ३२ अ: ५ श्लोक १७ से २८ में देखें !

आपका प्रेमी विश्वहितैषी, पूर्णशान्तिवान्,
समाधिस्थ, मनुष्य के प्रभाव एवं मानसिक रोगों का ज्ञाता
ध्यानयोगी आनन्दमय

..I JAGADGURU VISHWARADHYA
..ANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No: 230

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

सार बात

आपका भाग्य उदय हुआ जो परम प्रभावशाली ग्रंथ का स्वाध्याय करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। पढ़कर प्रेमपत्र द्वारा अपने शुभ विचार प्रकट करें।

गीता प्रेस के उत्तम शास्त्र

ॐ श्री सत्यमहापुरुष श्री जयदयाल जी भगवान् द्वारा रचित निम्नलिखित शास्त्र प्राप्त करें।

(१) तत्त्व-चिन्तामणि भाग १ से ७।

(२) परमार्थ पत्रावली भाग १ से ४।

(३) गीता तत्त्वविवेचनी।

(४) साधारण गीता भाष्य मूल्य १)

पता—पो० गीताप्रेस गोरखपुर

ॐ श्री नीतिज्ञ संत भगवान् के उपरोक्त शास्त्र 'विश्व-शांति' के खण्डन पर लक्ष करके पढ़ें अन्यथा बुद्धि भ्रमित, मोह-दलदल हो जाएगी।

हे सम्पादक हनुमानप्रसाद 'शिव'! क्या तेरे पाखण्ड-धर्म के प्रचार के लिये ही ॐ श्री महापुरुष भगवान् श्री जयदयाल जी महाराज ने गीता प्रेस की स्थापना कराई थी?

स्कूल कालेजों में प्रचार।

हे भगवान्! इस 'विश्वशान्ति' ज्ञानयज्ञ प्रचारार्थ मैं ॐ आनन्दमय ध्यान आश्रम को यथाशक्ति सेवा-सहयोग मनी-आर्डर द्वारा प्रदान करता रहूँगा।

आपकी सेवा में

सच्चे सुख, शान्ति, ज्ञान का केन्द्र

ॐ आनन्दमय ध्यान आश्रम

प्रतापगढ़ (अवध)

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative

मर्यादा

(१) ॐ श्री संत मर्यादा — गु[illegible]
ज्ञान, कर्म, भाव, आत्मबल से परीक्षा।

(२) दम्भ तथा अज्ञान मर्याद[illegible]
नाम, [illegible], देश, भेष, भाषा, जाति
वर्णाश्रम, मान, आयु, विद्या से परीक्षा।

(३) पाश्चात्य देशों के मनुष्य, पशु, नगर, [illegible] भवन भाषा रजोगुण प्रधान हैं।

(४) भारत की मर्यादा समता, प्रेमरहित स्वा[illegible] अहंकार, निर्दयता, हिंसायुक्त है तथा ध्यान, शान्ति, सन्त[illegible] रहित, सत्वगुण की आड़ में तो दम्भ, पाखण्ड [illegible] महाहिंसा हो रही है। इसी कारण भारत देश प्रायः तमोगु[illegible] प्रधान हो गया है।

(५) रूस समाज की मर्यादा कुछ उत्तम सुनी जा[illegible] है। अतः ध्यानस्थ, बुद्धिमान, अनुभवी देवी-पुरुषों द्वा[illegible] सुधार की परम आवश्यकता है।

(६) हे बूढ़ी, बूढ़े प्रेमियों! आप तो खतम हो[illegible] वाले हो अतः अभयंपद-आनन्द दायक इस सर्वोत्तम दि[illegible] ज्ञान विश्व-शान्ति सद्ग्रंथ की शिक्षा का स्कूल-कालेजों [illegible] प्रचार करें; बालिकाएँ तथा बालक सद्गुण-सदाचारी [illegible] धीर, बुद्धिमान हो जाऐंगे।

आजाद भारत में 'तू शूद्र' तू चूहा, चम[illegible] 'तू क्षुद्रतम नारी' 'तू निर्धनी' 'मैं धनी' 'मैं वैश्य' 'मैं ब्राह्म[illegible]' 'मैं सन्यासी', मूफतखोर ठगधर्मी एक न रहे, जैसे 'मैं रा[illegible] खतम'..................।

CC-O. Jangamwadi Math Collection, Varanasi. An eGangotri Initiative